JASAWANT UDYOT

BY

DALPAT MISHRA

Edited by

AGARCHAND NAHATA

ANUP SANSKRIT LIBRARY

BIKANER.

1949

PREFACE.

The Anup Sanskrit Library has already published three works, viz , the Gitamanjari, the Vira gita and the Dayaldas Ki Khyat in the Sadul Ori ntal Series The Jasawant Udyot, a work of both literary and historical importance, is now published as No 3, edited by Mr Agarchand Nahata I have no doubt that scholars will appreciate this publication particularly at a time when modern Indian languages are coming to their own

The Library takes the opportunity to express its gratitude to His Highness the Maharaja of Bikaner, whose kind and generous patronage has not only enabled it to make rapid progress in all its literary activities but also has been a constant source of encouragement to it

Thanks are due to Mr Agarchand Nahata who edited this for the Library.

Anup Sanskrit Library } K. Madhava Krishna Sarma
BIKANER 1949 }
Curator

दो शब्द

सेठ श्री अगरचन्द नाहटाने जसवन्त उद्योतका सम्पादन कर राजपूत ऐतिह्यकी श्रीवृद्धि की है। आरम्भिक भाग विष्णु-पुराणसे लिया गया है। उसकी शुद्धियों या अशुद्धियोंके लिये "उद्योत" का कर्त्ता दलपति कवि उत्तरदायी नहीं है। अन्य साठ राजाओंका इतिवृत्त लोककथाओंके आधार पर दिया गया है। * कवि यह दावा नहीं करता कि उसमें लिखी सब बातें सर्वथा ठीक हैं। पुरानी कथाओंमें कुछ न कुछ कल्पनाका सम्मिश्रण रहता है, वह "उद्योत" की कथाओंमें भी स्वभावतः वर्तमान है।

"उद्योत" के आधार पर यह सिद्ध करना कठिन है, कि राठौड़ वास्तवमें सूर्य्य-वंशी थे। प्रतीत होता है कि किसी परवर्ती कालमें विष्णुपुराणकी वंशावली राठौड़ों की वंशावली से जोड़ दी गई, एवं दोनोंके बीचके समयान्तरको कल्पित नामोंसे भर दिया गया। ऐसी वंशावलियें भी वर्तमान हैं जिनमें राठौड़ोंका सम्बन्ध बुध एवं चन्द्रमासे कर दिया गया है। कल्पित नामोंकी संख्यामें पर्याप्त विभिन्नता है। कुछ लेखकोंने राठौड़ोंको कन्नौजके गाहडवालोंसे अभिन्न माना है। किन्तु शिलालेखोंके आधारपर 'उद्योत' आदिका यह कथन असत्य सिद्ध किया जा सकता है कि जोधपुर के राठौड़ जयचन्दके वंशज हैं[1]।

तथापि 'उद्योत' का यह परम्पराश्रित वर्णन सर्वथा मूल्यहीन नहीं है। उसके अनुसार राठौड़ पहले कर्णाट देशमें राज्य करते थे। सितुग (श्रीतुङ्ग) के पुत्र भरतने सर्वप्रथम कन्नौजमें राठौड़ राज्यकी स्थापना की। मारवाड़ राज्यके संस्थापक सीहा इसके वंशज थे। इतिहाससे सिद्ध है कि दक्षिणमें राष्ट्रकूटोंका महान् राज्य वर्तमान था। इन्द्र, ध्रुव, गोविन्द आदि राष्ट्रकूट राजाओंके आक्रमणके कारण अनेक राष्ट्र-

---

* कछुक बंस बरन्यौ प्रथम, विष्णु पुरानहिं मानि
करनि साठि नरि दको, बरनी लोक कथानि ॥ (पृष्ठ ८७)

१ इस विषय पर "जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री" में प्रकाशित हमारा लेख एवं ओझाजी रचित जोधपुर का इतिहास, प्रथम भाग देखें।

कूट राज्योंकी उत्तरापथमें स्थापना हुई। इनमें से एक कान्यकुब्जका राठौड़ राज्य था। इसके परवर्ती राजा ; संभवतः विजयचन्द्र, जयचन्द्र आदि गाहड़वाल राजाओं के सामन्त थे, कन्नौज के मुसलमानों द्वारा विजित होने पर वे अनेक स्थानोंमें भ्रमण करते हुए मारवाड़ पहुंचे। इन्ही ऐतिहासिक तथ्योंका विकृत रूप 'जसवन्त उद्योत' में वर्तमान है।

सीहाजी को सिद्धराज जयसिंहका समसामयिक राजा मानना ग्रन्थकारकी भूल है। दोनों के ठीक समयमें कमसे कम सौ वर्ष का अन्तर है। इसीप्रकार अन्य भूलोंकी कमी भी नहीं। उन्हें किसी अंशमें 'छन्द राउ जइतसीरो' आदिके आधार से ठीक किया जा सकता है। ग्रन्थ के विद्वान सम्पादकने अनेक ऐसी भ्रान्तियोंका टिप्पणीमें यथास्थान निर्देश कियो है।

राव चन्द्रसेनसे महाराज जसवन्तसिंह तकका भाग इतिहास दृष्टिसे विशेष उपयोगी है। किन्तु जसवन्त-उद्योत संभवतः केवल इतिहासका नहीं, अपितु अलङ्कार का भी ग्रन्थ था[२]। श्री नाहटा द्वारा सम्पादित 'जसवन्त-उद्योत' उसका एक प्रकरण मात्र है। कम से कम पुष्पिका के ये शब्द—

"इति श्री तुलसीराम सुत दलपति कवि विरचिते जसवन्तउद्योते वंसावली प्रकरणं संपूर्णम्"

इस अनुमानको समर्थित करते हैं। परवर्ती प्रकरण कभी लिखे गये या नहीं, या लिखे गये तो अब प्राप्य है या नहीं यह कहना हमारे लिये कठिन है। किन्तु जिस योजनाकी दृष्टिसे ग्रन्थका आरम्भ हुआ था, उससे शायद ऐतिहासिक भाग कुछ संक्षिप्त हो गया हो, 'उद्योत' में ऐतिहासिक घटनाओंका वर्णन इतना विशद नहीं है जितना हमें अनेक रासों एवं वचनिकाओंमें मिलता है।

काव्य दृष्टिसे जसवन्तउद्योत अच्छा ग्रन्थ है। शाहजहांबाद को अमरावतीसे श्रेष्ठ सिद्ध करनेमें कविने खूब चातुर्य दिखाया है। रघुवंशका आश्रय लेकर कुछ रघुवंशी घटनाओं का भी अच्छा वर्णन दिया गया है। "हार दै दै हीर दै दै चामीकरु चीरु दै दै दीन विपति वहाई हैं" जैसी अनेक पक्तियां काव्यमें वर्तमान हैं। काले काले हाथियों को जलधर, गोलोंकी आवाजको बादलोंकी गरज, वीरोंके शस्त्रास्त्र

---

२. यह अनुमान बहुत कुछ पुष्पिकाके आधार पर है। विद्वान सम्पादकने दलपति मिश्रको जसवन्तसिंहजीका काव्यगुरु माना है, संभव है बाकी का भाग महाराजाकी काव्यशिक्षा के लिये लिखा गया हो।

की चमकको दामिनीकी दमक मानकर रिपुसम्पत्तिको अभिसारिकाका रूप देना दलपतिके कवित्वका सूचक है यद्यपि यह कवित्व काव्यकी प्रथम श्रेणी तक प्राय न पहुंच सका है।

जसवन्त-उद्योत का दूसरा नाम 'जसवन्त विलास' है सम्भव है 'उद्योत' य विलास' नामान्तक अन्य ग्रन्थ भी कविने लिखे हों। उनका पता शनै शनै लग सकता है। राजाओं की कृतियोंके रूपमें प्रकाशित अनेक ग्रन्थ प्राय उनके आश्रित कवियों की रचनाएं होती हैं। इनका पता लगाना भी श्री नाहटा बन्धुओं जैसे अन्वेषकोंका कार्य है। दलपति कवि के परदादा दीपमिश्रने जोधपुर नरेश उदयसिंह के ज्येष्ठ भाई रामको पढ़ाया था[3]। सम्वत् १७०५ मे महाराज जसवन्तसिंहसे मिलकर दलपति मिश्रने सभवत इस अध्यापनपरम्परा को फिर चालू किया हो[4]। जसवन्तसिंहजी की आयु उस समय केवल २१ साल की थी। वे ऐसी अवस्था पर पहुच चुके थे जब वे काव्यके मर्म को पहुँचे और उसका अच्छी तरह अध्ययन कर सकें। जसवन्त सिंहजी ने अनेक विद्वानों, कवियों एव साधुओंकी सगतिसे सम्भवत पर्याप्त लाभ उठाया था। किसने उनको कहाँ तक प्रभावित किया, यह कहना कठिन है। किन्तु सम्भव है कि प्रारम्भिक प्रभाव दलपति मिश्रका रहा हो। दलपति मिश्र अच्छे कवि थे, यद्यपि उनका कवित्व और वैदुष्य उस कोटिका न था जो उन्हें जसवन्तसिंहजी का सर्वाङ्गीण काव्यगुरु बना सके। महामहोपाध्याय डाक्टर गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझाने सूरतमिश्र को महाराजाका काव्यगुरु माना है। किन्तु जिस विद्वानका ग्रथ रचनाकाल जसवन्तसिंहजीकी मृत्युके बाद आरम्भ होता है उसे महाराजका काव्यगुरु मानना भूल है। हम श्री नाहटाके इस निर्णयसे सर्वथा सहमत हैं कि सूरतमिश्र जसवन्तसिंहजीके काव्यगुरु न थे।

मगलपुरम् — दशरथ शर्मा

७—५—१९४९

---

३. देखो 'उद्योत' पृष्ठ २, पद्य सख्या ७

४ देखो टिप्पणी २.

प्रस्तावना

आर्यावर्त आध्यात्म प्रधान देश है। यहांके ऋषि-मुनि देह और दुनियाकी ओर अधिक ध्यान नहीं देकर शाश्वत आत्माकी ओर ही सविशेष आकृष्ट थे। भारतीय संस्कृतिमें आत्म प्रकाशन तो दूर रहा, अपना साधारण परिचय भी स्वयं देना हेय समझा जाता है। नामका मोह-यशकीर्तिकी कामना भी हमारे यहां त्याज्य मानी गई है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन ग्रन्थकारोंने बृहत्तर ग्रन्थ निर्माण करके भी अपने कुल, वंश आदिका परिचय तो दरकिनार, अपने नामका निर्देशतक नहीं किया। हमारे व्यवस्थित इतिवृत्तकी अनुपलब्धिका यह भी एक प्रधान कारण है।

भारतीय प्राचीन साहित्यमें जिसे विशुद्ध इतिहास कहा जाय वैसा ग्रंथ तो उपलब्ध नहीं, पर उन्होंने महापुरुषोंकी जीवनीको बड़े रोचक ढंगसे अपने काव्यग्रन्थोंमें उपस्थित किया जिससे वे जनसाधारणके लिये, अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित हुए। इन ग्रंथोंने विशिष्ट लोक-जीवनके निर्माणमें बहुत बड़ी प्रेरणा दी जिससे महापुरुषों के चरित्रको आदर्श रखकर जनताने अपने नैतिक व आध्यात्मिक जीवनको उच्चतरमें उठाया। रामायण एवं महाभारत ऐसे ही महत्त्वपूर्ण काव्य हैं। इनमेंसे महाभारतको हमारे प्राचीन ग्रन्थकारोंने इतिहासकी संज्ञा दी एवं उसका उल्लेख चार वेदोंके साथ पंचम वेदके रूपमें किया है[1]। ऐसे ग्रंथोंमें घटनाओंकी संवत् मिति उपलब्ध नहीं; इससे भारतीय इतिहासका सिलसिला बैठाना अत्यन्त कठिन हो गया है। उनमें कथित बहुत सी बातें ऐतिहासिक होनेपर भी इतनी अत्युक्ति पूर्ण, और अलंकारिक भाषामें लिखी गई हैं कि तथ्यको निकालना असम्भव नहीं तो भी कठिन अवश्य है। प्राचीन भारतके इतिहासकी समस्या इन्हीं सब कारणोंसे अबतक उलझनमें है।

इतिहासके विशिष्ट साधनोंमें अभिलेख एवं मुद्राओंका स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अद्यावधि प्राप्त भारतीय अभिलेख लगभग २५०० वर्ष[2] से प्रारंभ होते हैं और

---

१ जैनागम कल्पसूत्र में भी "रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अत्थव्वणवेय इतिहास पंचमाणं" शब्दों द्वारा इसका समर्थन पाया जाता है।

२ स्वर्गीय महामहोपाध्याय डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकी 'भारतीय प्राचीन-लिपि माला' के अनुसार शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण सबसे प्राचीन अभिलेख वीरात् ८४ वाला जैन लेख है। जो मध्यमिका से प्राप्त एवं अजमेरके संग्रहालय में उन्हीं के द्वारा संग्रहीत है।

इन्हींके आधारसे प्राचीन इतिहासके व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है, पर उनसे हमें थोड़ी सी घटनाओंका ही पता चलता है। हमारे पौराणिक ग्रन्थोंमें भी कुछ फुटकर इतिहास सामग्री एवं राजवंशावलियें प्राप्त होती हैं। पर उनका आधार बहुत कुछ अनुश्रुति परम्परा होनेसे उनमें प्रतिपादित बातें अन्य समकालीन प्रमाणों द्वारा समर्थित होनेपर ही माह्य हो सकती हैं। पुराणोंमें प्राप्त वंशावलियों[३] की जाच करने पर कई स्थानोंमें कई नाम छूटे हुए और कहीं कल्पित नाम जोड़ दिये गये मालूम देते हैं। जब पुराणोंमें ऐतिहासिक बातोंको संग्रह करनेकी ओर ध्यान दिया गया तो प्राचीनकालकी बहुत सी बातें विस्मृत हो चुकी थीं और सुनी सुनायी बातोंमें एकता नहीं पायी गयी इसीलिए ऐसी गड़बड़ी हो जाना अस्वाभाविक नहीं। इनके परवर्ती ऐतिहासिक साधनोंमें विदेशी यात्रियोंके भ्रमण वृत्तांत भी उपयोगी साधन हैं।

हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थोंकी अधिकता तेरहवीं शतीसे प्रारम्भ होती है इससे पूर्ववर्ती[४] समकालीन इतिहास ग्रंथ बहुत कम मिलते हैं। जैन ग्रथकारोंने ऐतिहासिक ग्रन्थोंके निर्माणमें अत्यधिक योगदान किया है। इस समयके रचित ग्रन्थोंसे तत्कालीन इतिहासके साथ साथ पूर्ववर्ती इतिवृत्तकी जानकारी भी कम नहीं मिलती।

तेरहवीं शतीसे निरन्तर ऐतिहासिक ग्रन्थोंके निर्माणकी धारा प्रवाहित[५] होती रही।

---

३ वायुपुराण, विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण, भविष्योत्तर, ब्रह्माण्ड और भागवत पुराणमें प्राचीन राजवंशावलियें पाई जाती हैं। जैन ग्रन्थ तिलोयपण्णत्ती पयन्ना आदि एवं बौद्ध ग्रन्थोंमें भी कतिपय प्राचीन राजवंशोंकी नामावली उपलब्ध है, जिनमें उनका राज्यकाल भी दिया गया है।

४ पूर्ववर्ती ग्रन्थोंमें मुद्राराक्षस नाटक, हर्षचरित (७ वीं शती), नवसहसांक चरित (ई० स० १०००), विक्रमाङ्कदेव चरित्र (११ वीं शती) रामचरित (१२ वीं शती) आदि थोड़े से ग्रंथ ही उल्लेखनीय हैं।

५ तेरहवीं से पन्द्रहवीं शतीके उल्लेखनीय ग्रन्थ इस प्रकार हैं:—राजतरङ्गिणी (सं० १२०५) पृथ्वीराज विजय (स० १२४७ लगभग), द्व्याश्रय काव्य (स० १२१७), कीर्तिकौमुदी (सं० १२८२), सुकृतसंकीर्तन (स० १२८५), हम्मीर मद मर्दन (स० १२८६), वस्तुपाल सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ, आबूरास, गिरनार रास, युगप्रधानाचार्य गुर्वावली (स० १३०५), जगडूचरित्र (स० १३२०), प्रभावकचरित्र (स० १३३४), प्रबन्धचिन्तामणि (स १३६१), विविधतीर्थकल्प (सं० १३६०), शत्रुञ्जयतीर्थोद्धार प्रबन्ध (सं० १३९२), उपकेशगच्छ चरित्र, पेथड़रास, समरारास, हमीर महा काव्य (सं० १४०० लगभग) प्रबन्धकोष (सं० १४०५), कुमारपालचरित्रादि।

यही समय भारतमें मुस्लिम राज्य स्थापनाका है और उन्होंने भी इस कार्यमें प्रशंसनीय कदम उठाया। मुस्लिम साम्राज्यके अनीतिपूर्ण व अशान्त शासनने हमारे बहुतसे अनमोल साहित्य एवं स्थापत्यसे हमें सदाके लिये वंचित कर दिया। सम्राट अकबरके शासनकालमें भारतकी त्रस्त जनताने पुनः शान्तिका आंशिक अनुभव किया, फलतः इस समय भारतीय साहित्य कलाका सर्वतोमुखी विकास हुआ नजर आता है। भारतीय नरेशोंने अपने इतिहासको संग्रहित करनेका प्रयत्न किया और ख्यात लिखनेकी परम्परा भी इसी समयसे चालू हुई। ख्यात लेखकोंके सामने प्राचीन इतिहासकी समस्या बड़े जटिल रूपमें उपस्थित हुई पर उन्होंने उसे पुराण, अनुश्रुति आदिके द्वारा सुलझाकर सन्तोष माना। उस समय आजकलकी तरह न तो इतनी ऐतिहासिक साधनोंकी उपलब्धि ही थी और न वैसी विश्लेषणात्मक दृष्टि ही, अतः उनसे एतद्विषयक जानकारी सीमित ही प्राप्त हो सकती है। ये ख्यात आदि ग्रन्थ हमें बहुत कुछ सहायता करते हुए भी कहीं-कहीं बड़े चक्करमें डाल देते हैं, अतः इन सब साधनोंका उपयोग बड़ी गम्भीरता एवं परीक्षणके साथ ही किया जाना उचित प्रतीत होता है।

जैसा कि अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें पाया जाता है कि ग्रन्थ रचनाका समसामयिक और थोड़ा पूर्ववर्ती इतिवृत्त तो ग्रन्थकारके सम्मुख घटित या उन घटनाओं के देखने व सुननेवाले व्यक्तियोंके कथन पर अवलम्बित होनेसे प्रायः सही होता है पर ग्रन्थ रचनाके दो सौ चार सौ वर्ष पूर्वकी बातें विस्मृति एवं भिन्न भिन्न व्यक्ति सम्बन्धित प्रवादोंसे सम्मिश्रित हो जानेके कारण बहुत कुछ भूल भ्रान्तियोंसे युक्त हो जाती हैं। ख्यात ग्रंथोंका यही हाल है, राठौड़ोंके इतिहासको ही लीजिये, तेरहवीं चौदहवीं शतीमें इनका मारवाड़में राज्य स्थापन हुआ पर उनकी ख्यात—इतिहास लेखनका कार्य सतरहवीं शतीमें प्रारम्भ हुआ विदित होता है। फलतः पन्द्रहवीं शतीके पहलेके राजाओंके जन्मादि एवं घटनाओंका समय ख्यातोंमें नहीं पाया जाता; किसी किसी में मिलता भी है तो वह अन्य प्रामाणिक साधनसे गलत एवं कल्पित सिद्ध होता है। राठौड़ वंशकी प्राचीन वंशावली बहुत ही अशुद्ध है, उनकी परम्परा गाहड़वालोंके साथ मिला दी गयी है एवं गाहड़वाल नरेशोंमें भी जयचन्दके पिता विजयचन्द्रके पहले की वंशावली शिलालेखादिमें उल्लिखित वंशावली के नामोंसे सर्वथा भिन्न है[६]। भिन्न भिन्न ख्यात लेखकों द्वारा लिखित राठौड़ोंकी

६ अनूपसंस्कृत लाइब्रेरीकी एक ख्यातमें जो कि राजा पदार्थ से प्रारम्भ होती है राजाओं के जन्म, राज्याभिषेक,स्वर्गारोहण, के समयसूचक जो उल्लेख हैं वे सर्वथा कल्पित प्रतीत होते हैं। माननीय ओझाजीने भी अपने जोधपुर राज्यके इतिहास (प्रथम खंड पृ० १४८ से १५७) में ऐसे उल्लेखों की अवास्तविकता प्रतिपादित की है।

वंशावली में भी एकता नहीं पायी जाती[७]। किसीने उन्हें चन्द्रवंशी बतलाते हुए शिव शक्तिसे वंशावलीका प्रारंभ किया तो किसीने उन्हें सूर्यवंशी कहते हुए नारायण, ब्रह्मासे उनका सम्बन्ध मिलाया है। परिशिष्टमें दोनों प्रकारकी वंशावलियें दी गयी हैं। ऐसी विकट परिस्थितिमें यह अत्यन्त आवश्यक है कि बचे खुचे समस्त ऐतिहासिक साधनों को शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित किया जाय और उनकी जांच पड़तालके साथ संशोधनात्मक इतिहास तैयार किया जाय। पर खेदके साथ कहना पड़ता है कि अभीतक इन सब साधनो के अनुसंधान एवं प्रकाशनकी ओर हमारे विद्वानोंने बहुत ही कम ध्यान दिया है।

अंग्रेजी साम्राज्यकी स्थापना—विशेषत सन् १८४१ में एसियाटिक सोसाइटी बंगालकी स्थापना—के बाद पाश्चात्य विद्वानोंके अनवरत श्रमसे हमारे इतिहासमें एक नवीन क्रान्ति उपस्थित हुई जिसके द्वारा हमारी अनेक भ्रान्त परम्पराओंका शोधन हुआ। कतिपय भारतीय मनीषियोंने भी उसमें योग देकर इस कार्यको आगे बढ़ाया फिर भी अभी तक इस क्षेत्रमें जो कार्य हुआ है वह अपर्याप्त है और उसे जोरोंसे चलानेकी आवश्यकता है। राजस्थानके इतिहासको ही लीजिये स्वर्गीय ओझाजीके अत्यधिक परिश्रम करने पर भी अभी तक समस्त रियासतोंके इतिहास ग्रंथ प्रकाशित नहीं हो पाए। हालांकि प्रत्येक राजघरानों एवं प्रतिष्ठित खानदानोंके पास अपना यत्किंचित् इतिवृत्त विद्यमान है ही जिन्हें प्रकाशमें लाने पर हमारी जानकारी बहुत ही बढ़ सकती है।

संस्कृतके ऐतिहासिक काव्योंकी भांति हिन्दीमें भी ऐतिहासिक काव्योंका निर्माण तेरहवीं शतीमें प्रारम्भ होता है। चन्द कविका पृथ्वीराज रासो हिन्दीका सर्वप्रथम

---

७ जसवन्त उद्योत में दी हुई वंशावली बृहद्बल तक की बहुत कुछ पुराणोंसे समर्थित है पर उसके बाद बहुत ही गड़बड़ी है। प्राचीन चरित्रकोष के परिशिष्टानुसार बृहद्बलसे सुमित्र तक ४२ नाम आते हैं तब प्रस्तुत ग्रन्थमें केवल ११ नामोंका ही उल्लेख है। उनमें भी दिवाकर, सहदेव और अन्तरीक्ष इन तीन नामों छोड़कर बाकीके नामोंमें सर्वथा वैषम्य है। सं० १५४५ की बीकानेर दुर्ग प्रशस्तिमें नारायण से सीताराम तकके राजाओं की संख्या १३४ पाई जाती है। पर हमारे संग्रह की राठौड़ वंशावलीमें सीताराम ५३ वें नम्बरमें आते हैं। डा० एल० पी० टेसीटोरीके अनुसार अन्य एक ख्यातमें यहां तकके राजाओंकी संख्या २५० के लगभग हैं। वंशावलियोंकी अप्रामाणिकता व अशुद्धता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण होगा।

ऐतिहासिक काव्य है। यद्यपि पीछेसे उसमें अत्यधिक प्रक्षेप हुआ है और उसका ऐतिहासिक महत्व नष्टप्राय: हो गया है। उसके मूलरूपका पता लगानेका प्रयत्न चालू है। सतरहवीं शताब्दीमें लिखित रासोके जो लघु एवं लघुतम रूपान्तर[८] हमें प्राप्त हुए हैं उससे रासोका परिमाण बहुत छोटा ज्ञात होता है। यद्यपि इससे भी प्राचीन प्रतियोंकी उपलब्धि हुए बिना रासोके ऐतिहासिक महत्त्व की समस्या सुलझायी नहीं जा सकती फिर भी इन लघु संस्करणोंमें बहुतसी इतिहास विरुद्ध कही जानेवाली बातें नहीं पायी जातीं।

सतरहवीं शताब्दीसे हिन्दी भाषामें ऐतिहासिक काव्योंका निर्माण बराबर होता रहा है। फलतः पचासों ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध होते हैं। उनमेंसे कई ग्रन्थ तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं पर खेद है कि हमारे इतिहासकारोंने उनका उपयोग करनेमें बहुत ही उपेक्षा की है। मुस्लिम साम्राज्यकालके इतिहासके लिए हमारे विद्वानोंने फारसी तवारीखोंको ही प्राधान्य दिया है; पर विधर्मी होनेसे तवारीख-कारोंने अपना महत्व बतानेके लिए सत्यको छिपाकर बहुतसी विपरीत और विकृत बातें लिख डाली हैं। फारसी लिपीकी अस्पष्टता और अवैज्ञानिकताके कारण बहुधा व्यक्तियोंके नाम तक गलत प्रकाशमें आये हैं[९]। इस सबका संशोधन एवं वास्तविक तथ्यकी जानकारी हमारे हिन्दी काव्योंसे कई अंशोंमें भली प्रकारसे हो सकती है।

हिन्दी भाषाकी बहिन राजस्थानी-डिंगल भाषामें राजस्थानके इतिहासकी अनमोल सामग्री भरी पड़ी है। इस भाषाके ऐतिहासिक काव्य ख्यातें[१०], वातें[११], डिंगलगीत[१२]

---

८ इनके सम्बन्धमें राजस्थानी भाग ३ अङ्क २ एवं विशालभारत (जून १९४३) में हमारे लेखमें प्रकाशित हो चुके हैं।

९ देखिये पं० चन्द्रवली शास्त्री का "अबुलफजलका वध" (नागरी प्रचारणी पत्रिका वर्ष ५१ अङ्क १), एवं बम्बई से प्रकाशित "प्रतिभा" पत्रिका में लेख।

१० मुहणोत नैणसी और दयालदास सिंढायचकी ख्यात भाषा एवं इतिहास उभय दृष्टि से बहुत ही महत्त्व की है इनमें से प्रथम का हिन्दी अनुवाद दो भागोंमें नागरी प्रचारिणी सभा, काशीसे व दूसरीका मध्यमांश मूल रूपमें अनूप संस्कृत पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

११ स्वर्गीय पारीकजी सम्पादित "राजस्थानी वातां" नामक ग्रन्थ पिलाणीसे प्रकाशित हुआ था। राजस्थानीवातोंका साहित्य अति विशाल है। उसके ३ भाग स्वामी नरोत्तमदासजीने संपादित किये है ऐतिहासिक दृष्टिसे बांकीदासकी वातें विशेष महत्त्वपूर्ण है जिसका भी संपादन कार्य चालू है।

१२ महाराणा यश प्रकाश नामक ग्रंथमें कुछ डिंगल गीत पहले प्रकाशित हुए थे, अभी राज-

आदि प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध हैं जिनमें अनेक ऐसे रणवीर, दानवीर, धर्मवीर व्यक्तियोंके ऐतिहासिक चित्रण मिलते हैं जिनके नाम तक हमारे इतिहासकार नहीं जानते। राजस्थानमें सतीस्मारक, जूझार देवल व शिलालेख आदि पद पदपर बिखरे पड़े हैं उन सबको सगृहीत कर प्रकाशमें लाये बिना हमारा इतिहास अधूरा ही रहेगा। इस दिशामें उपेक्षाके कारण हमारी विशाल ऐतिहासिक सामग्री नष्ट होती जा रही है और थोड़े दिनोंमें जो कुछ विद्यमान है वह भी विलीन हो जायगी। यदि अब भी हम नहीं सभले तो फिर पश्चात्तापके सिवा रह ही क्या जायगा ?

हिन्दी भाषामें राजस्थानी भाषाके जितनी तो नहीं पर कुछ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री अवश्य ही पायी जाती है। भारतीय सन्तों व भक्तजनोंसे सबधित ऐतिहासिक साधनोंका हिन्दीमें प्राचुर्य है। भक्तमाल और उसकी टीकाएँ, कबीर, नामदेव, रैदासकी परिचई आदि प्रकाशित ग्रन्थोंमें भक्तों एव सन्तोंके चमत्कारिक जीवनवृत्त पाये जाते हैं। भक्तों एव शिष्यों द्वारा इनमें कुछ अशोंमें अतिरजन भले ही किया गया हो पर इनका ऐतिहासिक महत्त्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। पुष्टिमार्गी वैष्णव सम्प्रदायके सम्बन्धमें भी हिन्दी भाषामें बहुत कुछ ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त है। चौरासी वैष्णवनकी वार्ता, २५२ वैष्णवनकी वार्ता, अष्ट सखानकी वार्ता, प्राचीन वार्ता रहस्य, वल्लभ वशावली, वल्लभाख्यान, वनयात्रा, व्रजवस्तु वर्णन आदि वैष्णव सम्प्रदायके ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशमें भी आ चुके हैं। राजकीय इतिहासके लिए वीरसिंहदेवचरित्र, राजविलास, शिवराजशोभूषण? —

स्पत्ति, हमीर रासो, परमाल रासो, केशरीसिंह समर, सुजानचरित, छत्रप्रकाश, हमीरहठ, हिम्मतबहादुर ग्रन्थावली, साँभर युद्ध, वशभास्कर आदि ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं और प्रकाशित भी हो चुके हैं। गोरा-बादलकी कथा आदि कई ग्रन्थ विशुद्ध इतिहासके रूपमें न होने पर भी अर्द्ध ऐतिहासिक अवश्य हैं। जैन कवि बनारसीदासका अर्द्धकथानक हिन्दीका सर्वप्रथम आत्मचरित्र एव विशुद्ध ऐतिहासिक

ख्यातो वीर गीत नामसे स्वामी नरोत्तमदासजी के सपादित एक सग्रह अनूप सस्कृत पुस्तकालयसे प्रकाशित हुआ है। श्रीयुत् सीतारामजी लाल्स और उदयपुरके हिन्दी विद्यापीठ द्वारा बहुतसे डिंगल गीतोंका सम्पादन हुआ है। डिंगल गीत हजारोंकी सख्या में पाये जाते हैं।

ग्रन्थ है। बुद्धिविलास[13], गुलालचरित[14], भावदेवसूरिरास[15] आदि जैन ग्रन्थोंमें भी इतिहास सामग्री पायी जाती हैं। वैसे प्राचीन राजस्थानी भाषामें तो जैन कवियों द्वारा रचित ऐतिहासिक रास, चौपाई, फागु, विवाहला, तीर्थमाला, भास इत्यादि प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध हैं जिनमेंसे ऐतिहासिक राससंग्रह भाग १ से ४, ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संग्रह, ऐतिहासिक रासमाला, प्राचीन तीर्थमालासंग्रह ऐतिहासिक सज्झायसंग्रह और हमारे संपादित ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह आदि ग्रंथोंमें बहुतसे जैन काव्य प्रकाश में भी आ चुके हैं।

प्राचीन ग्रन्थोंके अन्वेषण, संग्रह एवं प्रकाशनकी ओर प्रारम्भ से ही हमारी अभिरुचि रही है। हस्तलिखित संग्रहालयोंके अवलोकनका कार्य भी निरन्तर चलता रहता है। अभी कुछ वर्षों से हिन्दीके अज्ञात ग्रन्थ[16] संग्रहका कार्य हाथमें लिया गया तो कतिपय नवीन ऐतिहासिक ग्रंथोंका पता चला। कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके संग्रहमें लावा रासा[17], रतन रासा[18] आदि ऐतिहासिक काव्य दृष्टिगोचर हुए इसी प्रकार बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें प्रस्तुत जसवंतउद्योत, गोकलेश विवाह[19], कवीन्द्रचन्द्रिका, कवीन्द्रकल्पलता आदि कई ऐतिहासिक ग्रंथ प्राप्त हुए।

---

१३ देखें हमारा "बखतराम विरचित बुद्धिविलास" शीर्षक लेख जो कि जैन सिद्धान्त भास्कर वर्ष १४ अङ्क १ में प्रकाशित है।

१४ देखिये उसी पत्रके वर्ष १२ अङ्क २ में प्रकाशित हमारा "ब्रह्म गुलाल चरित" नामक लेख

१५ देखिये "भावदेवसूरि और लाहोरके सुलतान सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य" नामक हमारा लेख जो कि इसी पत्रके वर्ष १४ अङ्क २ में प्रकाशित हैं।

१६ लगभग ३५० अज्ञात ग्रन्थोंका विवरण संग्रह किया गया है जिनमेंसे १८२ ग्रन्थोंका विवरण हिन्दी विद्यापीठसे प्रकाशित "राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रंथोंकी खोज" द्वितीय भागमें प्रकाशित हो चुका है, अवशेष तीसरे भागमें प्रकाशित होनेवाले हैं।

१७ इसका सम्पादन स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजीकेतत्त्वावधानमें श्री महतावचन्द खारेडने किया था पर पुरोहितजीके स्वर्गवासी हो जानेसे वह अब तक अप्रकाशित पड़ा है।

१८ कवि कुम्भकरण विरचित इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थका प्रकाशन ऐतिहासिक टिप्पनके साथ सीतामऊके राजकुमार डा० रघुवीरसिंहजी शीघ्र ही करनेवाले हैं। जिसका सम्पादन कार्य बीकानेर में श्री काशीराम शर्मा कर रहे हैं।

१९ इसमें वल्लभ सम्प्रदायके गोकलेशजीके विवाहका वर्णन कवि जगतानन्दने किया है। इस कविके वल्लभ वंशावली आदि अन्य समस्त ग्रन्थ विद्या विभाग, कांकरौलीसे जगतानन्द नामक संग्रहमें प्रकाशित हैं।

कायमरासो[२०], अलपखाँ की पैड़ी[२१], अमर बत्तीसी[२२], परमारवंश दर्पण[२३], जहांगीर यश चन्द्रिका[२४], मानदेवसूरि रास, नगर वर्णनात्मक पचास गजलें[२५], आदि बहुतसे ग्रंथ हमारे संग्रहमें भी हैं। दिल्ली राजवंशावली स्थानीय बृहद् ज्ञानभण्डार में एवं श्रीयुत मोतीचंदजी खजांचीके संग्रहमें प्रतापगढ राज्य सम्बन्धी एक ऐतिहासिक काव्यकी अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। वैसे हिन्दीके अनेक ग्रंथोंके प्रारम्भमें कवियोंने अपने आश्रयदाताओंका एवं अपना परिचय दिया[२६] है उनसे भी कुछ ऐतिहासिक तथ्य प्रकाशमें आते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ "जसवंत उद्योत" जोधपुरके राठौड़ोंके इतिहाससे सम्बन्धित है। ग्रन्थके अन्तमें दिये हुए पद्यमें कविने सूर्यवंशी बृहद्बाहु तक की वंशावली विष्णु पुराणसे एवं उसके परवर्त्ती ६० राजाओंका विवरण लोककथाके आधारसे दिये जानेका उल्लेख किया है। माननीय ओझाजीके मतानुसार सीहाके पिता सेतराम से परवर्ती राजाओंके नामादि तो इतिहाससे बहुत कुछ समर्थित हैं पर जयचन्द्र गाहड़वालके साथ उनका सम्बन्ध जोड़ना स्पष्ट भूल है, जब कि प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ गाहड़वाल व राठौड़ोंका एक ही वंश मानकर इसे ठीक समझते हैं।

जसवंत उद्योतके प्रारम्भमें इसका रचनाकाल सं० १७०५ आषाढ़ शुक्ला ३

---

२० इसका ऐतिहासिक सार हिन्दुस्तानी वर्ष १५ अङ्कमें हम प्रकाशित कर चुके हैं। नागरी प्रचारिणी सभाकी ओरसे इसे शीघ्र प्रकाशित करनेकी योजना है।

२१ हिन्दुस्तानी वर्ष १६ अङ्क ४ में इसे प्रकाशित कर दी गयी है।

२२ भारतीय विद्या वर्ष २ अङ्क १ में हमारे "राठौड़ अमरसिंहजी सम्बन्धी दो ऐतिहासिक रचनाएं" लेखमें प्रकाशित।

२३ बीकानेरकी ख्यातके सुप्रसिद्ध लेखक सिंढायच दयालदासकी यह रचना है। राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज, द्वितीय भागमें इसका विवरण प्रकाशित है।

२४ सुप्रसिद्ध कवि केशवदासके सं० १६६९ में रचित है जिसे प्रकाशित करना आवश्यक है।

२५ कतिपय नगर वर्णनात्मक गजलोंको "हिन्दी पद्य संग्रह" के नामसे मुनि कान्तिसागरजीने प्रकाशित की है। ३२ गजलोंका विवरण राजस्थान में हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज भाग २ मेंप्रकाशित है।

२६ देखिये कतिपय हिन्दी कवियोंका "वंश परिचय" नामक हमारा लेख (व्रजभारती वर्ष ४ अङ्क ५) एवं नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ५० अङ्क ३ ४ में प्रकाशित प्रशस्ति काव्यमें ऐतिहासिक तथ्य ... स्मक लेख।

दिया है पर इस ग्रन्थमें सं० १७०७ के कार्त्तिकमें हुई पोहकरण विजय तकका वृतांत पाया जाता है अतः प्रस्तुत ग्रन्थकी रचनाका प्रारम्भ सं० १७०५ में होकर १७०८के करीब परिसमाप्ति हुई समझनी चाहिये क्योंकि इसके पीछेको कोई वृतान्त इस काव्य में नहीं पाया जाता। जोधपुरके राजवंशमें महाराजा जसवंतसिंह बड़े साहित्यप्रेमी, विद्वान एवं प्रतापी राजा हुए हैं। कवि उनके आश्रयमें ही रहता था और कई वर्षों तक साथ रहनेके कारण उसे राठौड़ोंके इतिहासकी अच्छी जानकारी हो गयी थी। फलतः उसने कई स्थानोंमें राठौड़ वंशके प्रधान पुरखाओंसे चली शाखाओंका व उनके विशिष्ट व्यक्तियोंका महत्वपूर्ण निर्देश किया है। मुहणोत नैणसीकी ख्यात से भी प्रस्तुत ग्रन्थ प्राचीन एवं महाराजा जसवंतसिंहकी विद्यमानतामें रचा होनेसे इसका ऐतिहासिक महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

जिस[२७] प्रतिके आधारसे प्रस्तुत ग्रन्थका सम्पादन किया गया है वह बीकानेर राज्यकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें उपलब्ध है। इस लाइब्रेरीके पूर्ववर्ती सूचीपत्रमें इसका उल्लेख नहीं थो पर डा० एल० पी० टैसीटरीने इसे अवलोकन किया प्रतीत होता है। संभवतः कलकत्तेकी एशियाटिक सोसाइटीके संग्रहमें जो इसकी प्रतिलिपि प्राप्त है वह इसी प्रतिसे नकल करवाके उन्होंने भेजी होगी। पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि प्रस्तुतः ग्रंथके जोधपुरके इतिहाससे सम्बन्धित होनेपर भी वहांकी राजकीय सुमेर लाइब्रेरी आदिमें भी इसकी अन्य प्रति प्राप्त नहीं है। दूसरी प्रतिकी अनुपलब्धिके कारण प्रस्तुत ग्रंथमें कई स्थानोंमें त्रुटित अंश एवं छन्द भंग रह गये हैं जिनकी[२८] पूर्ति नहीं की जा सकी फिर भी प्राप्त प्रति सुवाच्य एवं शुद्ध है। हमारा

---

२७ प्रस्तुत प्रति पुस्तकाकार ६॥×६" साइज की है। इसकी पत्र संख्या ४० है प्रत्येक पृष्टमें पंक्ति २७ से २९ एव प्रति पंक्ति अक्षर २० से २४ लिखे गये हैं। १८४१ के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ भोमवारको मंडतामें ब्राह्मण चूरा महीधरके लिखित है। इस ग्रन्थका सर्वप्रथम परिचय से ऐ० सारके हाथ हिन्दुस्तानी वर्ष १६ अंक २ में प्रकाशित किया गया था तत्पश्चात् हिन्दी विद्यापीठ उदयपुरसे प्रकाशित राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज द्वितीय भागमें विवरण प्रकाशित हुआ है।

२८ यथा—पद्यांक २ में १ पंक्ति व पद्यांक ३५९-४०९ में पाठ त्रुटित है। पृ० ५८ में पद्यांक ६२-६३ के बीचमें १ पद्य और होना चाहिये जिसमें २३ वें पुत्र खेतेका उल्लेख है। पृ० ७० के पद्यांक ४ में पृष्ठ ७४ पद्यांक ३०-३१ में, पृष्ठ ७५ के पद्यांक ३७ में १ पंक्ति त्रुटित है।

विचार परिशिष्टमें जोधपुर राज्य सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण ख्यातोंके उद्धरण आदिको देकर इस ग्रंथको विशेष उपयोगी बनानेका था। पर वैसा करने से प्रकाशनमें बहुत विलम्ब होता। इधर लाइब्रेरीके अधिकारियोंकी ओरसे इसे शीघ्र प्रकाशित कर देने की सूचना मिलती रही अत इसे काव्यके ऐतिहासिकसारके साथ ही प्रकाशित करके सन्तोष मानना पड़ता है।

प्रस्तुत ग्रंथके सम्पादन व प्रकाशनमें श्री अनूप संस्कृत लाइब्रेरीके क्यूरेटर श्री माधवकृष्ण शर्मा एवं प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामीका सहयोग उल्लेखनीय है। डा० दशरथजीशर्माने सदाकी भांति उचित परामर्श एवं 'दो शब्द' लेखनादि द्वारा प्रेम और सौजन्यका परिचय दिया है। अपने सहयोगी भ्रातृ पुत्र भँवरलाल नाहटाका तो प्रत्येक कार्यमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ ही है। पर उसके लिए कृतज्ञताज्ञापन कर उसके महत्वको कम करना नहीं चाहता। ग्रंथ संपादनकी स्वीकृतिके लिये बीकानेर के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री कवलम् माधवजी पणिक्कर महोदयका मैं सविशेष आभारी हूं। समयाभावसे जैसा चाहिये, संपादन नहीं हो सका इसके लिये पाठकोंसे क्षमा मांगते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करता हूं।

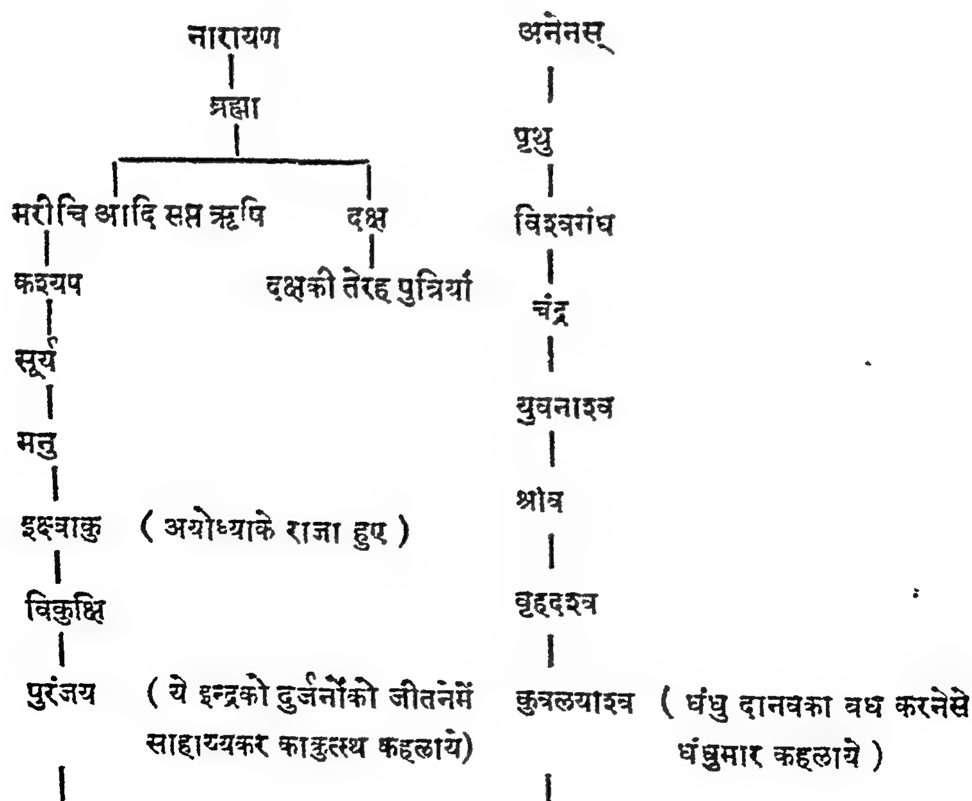
कलकत्ता
अक्षयतृतीया
सं० २००६

अगरचन्द नाहटा

जसवन्त उद्योत का ऐतिहासिक सार

मंगलाचरणमें गणेश, शारदा एवं शिव की स्तुति करते हुए कविने अपना वंश-परिचय दिया है—सुरसरीके तटस्थ अकबरपुरमें माथुर दीप मिश्र निवास करते थे इन्होंने नृपति रामके यहां कुछ दिन रहकर उन्हें पढ़ाया। इनके पुत्र शिवरामके पुत्र तुलसीराम हुए जो कि कवि दलपति मिश्रके पिता थे। सं० १७०५ आषाढ़ शुक्ला ३ को जहानाबादमें कविने प्रस्तुत ग्रंथकी रचनो आरम्भ की। यहीं महाराजा जसवन्तसिंहसे कविका साक्षात्कार हुआ था।

परवर्ती चार सवैयोंमें सम्राट शाहजहां और शाहजहानाबादका वर्णन करते हुए नारायण व उसके दशावतार—मीन, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्किका एक-एक पद्यमें वर्णन कर राठौड़ोंकी वंशावली इस प्रकार दी है :—



दृढाश्व
→ हर्यश्व
→ निकुम्भ
→ संहताश्व
  - कृशाश्व
  - अश्वकृशाश्व

कृशाश्व
→ सेनजित्
→ युवनाश्व (द्वि०)
→ मानधाता
  - पुरुकुत्स
  - अम्बरीष
  - मुचुकुन्द

पुरुकुत्स
→ त्रासदस्यु
→ अनरण्य
→ हर्यश्व (द्वि०)
→ प्रवण
→ त्रिबन्धन
→ सत्यव्रत (ये त्रिशंकु कहलाये)
→ हरिश्चन्द्र
→ रोहित

हरित
→ चम्प (इन्होंने चम्पानगर बसाया)
→ विजय (रिपुजित्)
→ रुरुक
→ वृक
→ बाहुक
→ सगर (इनके दो स्त्रियां व ६० हजार पुत्र थे इन्होंने अश्वमेध यज्ञ भी किया था)
→ असमञ्जस (ये विरक्त हो गये)
→ अंशुमान्
→ दिलीप
→ भगीरथ (ये गंगा को लाये)
→ श्रुत
→ नाभ
→ सिन्धुद्वीप
→ अयुताजित
→ ऋतुपर्ण
→ सुदास

मित्रसह
|
अश्मक
|
मूलक
|
एलविल
|
विश्वसह
|
दिलीप (द्वि०)
|
रघु (इन्द्रसे युद्ध कर दिग्विजयी हुए)
|
अज
|
दशरथ
|
राम (पर्यांश ७७ से २२२ तक रामायण की कथा दी है)

- कुश
- लव (इनसे राठौड़ वंश चला)

|
अतिथि
|
निषध
|
नल
|
नभ
|

पुण्डरीक
|
क्षेमधन्वा
|
देवानीक
|
अहिनग
|
पारियात्र
|
दल
|
शल्य
|
उन्नाभ
|
वज्रनाभ
|
खंखण
|
विश्रुताश्व
|
विश्वसह
|
हिरण्यनाभ
|
पुष्प
|
शुभसिन्धु
|
सुदर्शन
|
अग्निवर्ण
|

शीघ्र (गर्भमें ही राज्याभिषेक हुआ)
|
मरु (योगीश्वर, बद्रिकाश्रममें अवस्थित)
|
प्रतिश्रुत
|
सुसन्धिन्
|
सहस्वान्
|
विश्रुतवान्
|
बृहद्बल (महाभारत युद्धमें अभिमन्यु के साथ लड़े)
|
विश्वंभर
|
बृहद्बाहु
|
बृहच्छत्र
|
पात्र
|
वस्तुविम
|
दिवाकर
|
सहदेव
|
सोमछत्र
|
अंतरिक्ष
|
सुषाण
|

सुमित्राजित
|
इक्ष्वाकु
|
विभीषण
|
अश्वसेन
|
वर्षप (पारीपव)
|
कीर्त्तिवर्मा
|
त्रिपाण्डुविजय
|
कणसेन
|
काफलदेव
|
अमिरथ
|
अहाकपल
|
गोप गोविन्द
|
रोमसेन (इनमें ९ पीढ़ी तक राना कहलाये)
|
वीरविपुल
|
अमुसेन
|
वीरजयाम
|
बटराज
|

कुशराज
|
वीरदेव
|
पपुलि (ये कर्णाट देश के राजा हुए)
|
ननपाल
|
श्रीतुंग
|
भरत (दक्षिणसे यात्रार्थ प्रयाग बनारस और गयामें जाकर ब्राह्मणोंको भूमि का दान किया फिर कन्नौज में बसे, यहां से कन्नौजिया राठौड़ कहलाये)
|
पुंज (इनकी ३ रानियोंसे १३ पुत्र हुए जिनसे १३ शाखाएँ चलीं)
|
धाम

धंभ (गुजरात को जीता)
|
अभयचंद (ये वाक्‌पतिराज (बप्पयराय) कहलाये इनके २१ पीढी तक राइकी उपाधि चली)
|
विजयचंद [1]
|
जयचंद (ये दलपांगुरे कहलाये चक्रवर्त्ती हुए पुत्री संयोगितासे पृथ्वीराजका ब्याह किया जिसका वर्णन चंद कविके पृथ्वीराज रासोमें है)
|
वरदायीसेन
|
सीताराम [2]
सींहा [3]

---

१ ताम्रपत्र एवं शिलालेखोंमें इनके पिताका नाम गोविन्दचन्द्र मिलता है पर यहां अभयचन्द पाया जाता है। वस्तुतः इनसे पहलेकी नामावली इतिहाससे समर्थित नहीं है इस विषयमें जोधपुर राज्यके इतिहास (ओझाजी) के पृ० १३९ में प्रकाशित तुलनात्मक नामोंकी तालिका देखनी चाहिए। राठौड़ वंशावलीमें केवल विजयचन्द और जयचन्द ये दो नाम ही इतिहाससे मेल खाते हैं। जयचन्द्रके पुत्रका नाम इस ग्रन्थमें वरदायीसेन है जब कि ताम्रपत्रादिमें हरिश्चन्द्र मिलता है। विजयचन्द्र और जयचन्द्र गाहड़वाल वंशीय और कन्नौजके शासक रूपमें प्रसिद्ध हैं। राठौड़ोंका राज्य भी वहीं कहीं आस-पासमें रहा होगा। वंशावली लेखकोंने ये दो प्रसिद्ध नाम बीचमें देकर असली राठौड़ वंशावली को विकृत कर दिया मालूम होता है।

२ सींहाके स्मारक शिलालेखमें इनका नाम सेतकंवर मिलता है इससे ये राज्याधिकारी नहीं हुए प्रतीत होते हैं।

३ वंशावलियोंमें इसका समय सं० १२१२ के लगभग बतलाया है पर वह कल्पित है। स्मारक लेखसे सींहाजीकी मृत्यु सं० १३३० कार्तिक कृष्ण १२ सोमवार को हुई, निश्चित है। जोधपुरके राठौड़ राज्यकी स्थापना व राजाओंके निश्चित समयकी उपलब्धि यहींसे होती है। स्मारक लेख द्वारा सींहाजी सम्बन्धी ख्यातमें उल्लिखित सींहाजीका सिद्धराज

सींहाजीने कन्नौजसे द्वारिका यात्रार्थ प्रयाण किया। पहले मथुराकी यात्राकर वहांके माथुरोंको दान दिया, जगदीशजी व केशवरायजीके मन्दिरोंकी पूजा की, गोकुल यात्रा करके द्वारिका पहुंचे वहा रणछोड़जीके दर्शन किये। द्वारिकासे लौटते समय सोलकी सिद्धराज जयसिंहसे मिले। जयसिंहने अपने शत्रु लाखा फूलाणीको मारने के लिए इनसे अनुरोध किया तब आपने ८० कोश आकर उस जाड़ेचा राजाको मारा सोलकीने इससे सन्तुष्ट होकर सींहाको अपनी पुत्री व्याही व मारवाड़का देश दहेज में दिया। तबसे सींहाजी मारवाड़के अधिपति होकर वहीं रहने लगे।

राव सींहाके तीन पुत्र थे आस्थान,[४] अज और सोनिग। इनमें अज द्वारिकाके राजा हुए जिनके वशज वाढेल राठौड कहलाते हैं। सोनिगने ईडरको विजय की उनके वशज ईडरिया राठौड़ कहलाये। आस्थानने अपने भुजबलसे खेड़नगरका राज्य प्राप्त किया उनके वशज खेड़ेचा कहलाते हैं।

आस्थानके पुत्र दूहड़[५] हुए, इन्होंने कर्णाट देशसे अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरीको लाकर मारवाड़के नागाणे गावमें स्थापित की। तबसे उस देवीका नाम नागणेचियां[६] प्रसिद्ध हुआ। दूहड़के पुत्र रायपाल हुए जो महीरेलन कहलाये। आपने एक यदुवशी चंदा राजपूतको सर्वस्व दान देकर अपना याचक बनाया। चन्दाके वशज रोहड़िया चारण कहलाये।

रायपालके पुत्र कान्हड़ और उनके पुत्र जालहण हुए। एक बार राव जालहण शिकार खेलने गये वहां कुदरु वृक्षकी बेलको देखकर कहा कि इसके फल कोई न तोड़े पर उनकी आज्ञाका उल्लंघनकर उमरकोटके परमार सोढान[७] एक फल तोड़

जयसिंहसे मिलना, लाखा फूलाणी को मारना, सिद्धराज जयसिंहकी पुत्रीसे विवाह, मारवाड़ राज्य प्राप्ति आदि सभी बातें इतिहास विरुद्ध हैं क्योंकि लाखाफूलाणी, और जयसिंहका समय इनसे बहुत पूर्ववर्ती है। सींहाजीके मारवाड़ राज्यप्राप्ति सम्बन्धी ख्यातोंके भिन्न २ मतोंके विषयमें जोधपुर राज्यका इतिहास देखना चाहिए।

४ ख्यातोंमें इनका जन्म सं० १२१८ कार्तिक वदि १४ गुरुवारमें हुआ लिखा है पर यह कल्पित है। ओझाजी के मतानुसार उनका राज्यकाल सं० १३३० से १३४८ तक है।

५ इनके सं० १३६६ के स्मारक लेखमें इनका नाम धूहड़ लिखा है।

६ ओझाजीके निर्देशानुसार मूल नागाणा ग्राम पंचभद्रा जिलेमें अवस्थित है। इस देवीका मन्दिर अभी बीकानेरसे १ मील नागणेची स्थानमें है।

७ जोधपुरकी ख्यातके अनुसार सोढाने जिस वृक्षका फल तोड़ा था वह नानाणो गांवका प्रसिद्ध प्राप्त अमरवृक्ष था। सोढाके स्वामी का नाम गांगा पाया जाता है।

था। इससे क्रुद्ध हो जाल्हणने उसका डेरा लूट लिया एवं उसे दण्डित किया इससे सोढाके वंशज डंडेल कहलाये।

राव जाल्हणके पुत्र छाडा हुए, उनके तीडा व तीडाके सलखा हुए जिन्होंने संग्राममें जालोरपति पर विजय प्राप्त की[8]।

सलखाके चार पुत्र थे। रावमाल्हा, जयतमाल, वीरम और शोभित। इनमेंसे राव माल्हा बड़े प्रतापी हुए, जिन्होंने दिल्लीपति तैमूरलङ्ग व गुर्जराधिपतिको परास्त किया शोभितने सिन्धुपतिकी सेवा की और गायोंके बचानेके हेतु संग्राममें अपने प्राण दिये[9]।

राव वीरमके पांच पुत्र, १ राव चौंडा २ गोगा ३ देवराज ४ जैसंघ ५ बीजा थे। इनमेंसे चौंडाके वंशज महाराजा जसवंतसिंह हुए। गोगाके वंशज गोगा राजपूत व देवराजके वंशज देवराजोत कहलाये। राव चौंडा बड़े प्रतापी हुए, इन्होंने अपने बाहुबलसे मण्डोवर व नागौरको अपने आधीन किये।

राव चौंडाके १२ पुत्र[10] थे। १ पूना २ सता ३ सहसमल ४ बीहू ५ रिणमल ६ रावत ७ कान्ह ८ भीम ९ शिवराज १० लोभा ११ विजउ १२ रामदे। इनमें राव रणमल[11] राज्याधिकारी हुए, इन्होंने अपने शत्रु १६० जालौरियोंको कुंएमें डुबा दिया। पीरोखान पठानको पराजित किया, महमदखानको मारा[12]। जेसलमेर नरेशने इनसे पराजित होकर अपने भाट द्वारा अभयकी याचना की। राव रणमलके २४ पुत्र थे जिनसे उनका वंश खूब विस्तृत हुआ।

१ राव जोधा २ मण्डण (इनके वंशज मण्डणोत कहाये), ३ अखैराज (इनके वंशमें कूंपा और जयता हुए, कूंपाके वंशज कूंपावत हैं जिनमें नाहरखां प्रसिद्ध है, उसपर महाराजा जसवंतसिंह की कृपा है), ४ नाथा (नाथावतोंके पूर्वज), ५

---

८ जालोरपतिके नामका यहां निर्देश नहीं है न अन्य ख्यातोंमें ही। अनुसन्धान आवश्यक है।

९ इसके हमलेका समय सं० १४५५ के लगभग है।

१० जोधपुरकी ख्यातके अनुसार इनके १४ पुत्र व १ पुत्री थी। इनके मण्डोवर अधिकृत करनेका ओझाजीके और नागौरका रेऊजी के इतिहास से समर्थन होता है।

११ जोधपुरके इतिहासके अनुसार चौंडाके उत्तराधिकारी कान्हा और उसके बाद सत्ता हुआ यहां इन दोनोंका उल्लेख न कर चौंडाके बाद सीधा रणमल लिखा है। सम्भवतः कान्हा और सत्ताके अल्पकाल शासन करनेके कारण दलपति ने उनका उल्लेख नहीं किया हो।

१२ जोधपुरके इतिहास ग्रन्थोंमें जालोरके हसनखानके इनसे सन्धि करने व मांडूके महमुद को हरानेका उल्लेख पाया जाता है।

डूंगर (डूंगरोतोंके पूर्वज), ६ कर्ण (करणोतोंके पूर्वज), ७ रूपा (रूपावतोंके पूर्वज) ८ चापा (इनके वंशज चापावत कहलाये जिनमें विट्ठलदास प्रसिद्ध हैं) पाता (पातावतोंके पूर्वज) १० वाला (वालावतोंके पूर्वज) ११ कांधल (कधलोतोंके, पूर्वज) १२ सायर (लघुवयमें कालप्राप्त) १३ लखा १४ डापा १५ मंडला १६ बीरू १७ साडो १८ ऊनरा १९ ऊधो २० शत्रुसल्ल २१ वहरो २२ जयतमाल २३ गेला (इनके वंशमें गेतस्योत राठौड) २४ भाखर ।

राव रणमलके समय चित्तौडके राणा लाखा और खेता दो भ्राता थे। इनमें से लाखाको रणमलकी बहिन हसाबाई ब्याही थी। खेताने एक रूपवती बढइनसे अपना सम्बन्ध जोडा। राणा लाखाके पुत्र मोकल हुए, खेताके बढइनसे चाचा और मेरा जन्मे। चाचा मेराने राज्यलोभसे मोकलको मारकर मेवाड अपने वशवर्त्ती कर लिया। चित्तौडका यह वृत्तान्त सुनकर भानजेका बदला लेने राव रणमल चित्तौड गये और मोकलके पुत्र कुंभाको सहायता दी, इन्होंने चाचा और मेराको पहाडोंमें भगा दिया व उनकी कन्याएं राठौडोंको ब्याह दी। राणा कुंभाने कुमतिवश अपने उपकारी रणमलको रात्रिमें निश्चिन्त सोते हुए मार डाला।

राव रणमलके ज्येष्ठ पुत्र राव जोधा[13] का जन्म सं० १४७२ के वैशाख मासमें हुआ जोधाने पिताका बदला लेनेके लिए चित्तौड पर चढ़ाई की और राणा कुंभाको विचलित करके भगा दिया। वहाँसे निपट कर सं० १५१५ में जोधपुर बसाया।

एक बार राव जोधा पिताके पिण्डदानके हेतु गया जा रहे थे वहां जौनपुराधीश ने दो मंजिल साथ जाकर उनसे दिल्लीपतिसे अपने त्राण दिलानेके लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थनासे जोधाने उसे बहलोलखाँ लोदी द्वारा जौनपुर घेरने पर रणक्षेत्रमें

१३ रेऊजीके इतिहासमें इनका जन्म सं० १४७२ वैशाख वदि ४ लिखा है एवं जोधपुर दुर्गकी स्थापना सं० १५१६ जेठ शुक्ल ११ शनिवार को करनेका उल्लेख है। रेऊजीके अनुसार जोधाजी का राज्याभिषेक सं० १५१५ में हुआ था। वास्तवमें नगर निर्माण इसके पश्चात् ही सम्भव है। रेऊजीने राठौड़ कणक द्वारा आगरेमें बहलोलखा से मिलकर जोधाजीके यात्रियोंका कर छुड़ानेका उल्लेख किया है। उन्होंने जौनपुरके शासक हुसेनशाहको शत्रुओं पर विजय पानेमें सहायता अवश्य की थी पर वह दिल्लीपतिके विरुद्ध की हुई लड़ाई में थी यह उल्लेख ठीक नहीं मालूम होता इस ग्रन्थमें जोधाके १४ पुत्रोंका उल्लेख है तब रेऊजीने २० और ओझाजीने १४, १७, १९ पुत्र होनेका उल्लेख किया है। हमारे खयालसे ख्यातिका कथन विशेष ग्राह्य है। जोधाजीके सारंगखां को मारनेका समर्थन मंडलीकी ख्यात से भी होता है।

सहायता दी। जिससे दिल्लीपतिको भाग जाना पड़ा। शत्रुके भ्राता सारंगखाँ को इन्होंने युद्धमें मारा।

राव जोधाके १४ पुत्र थे १ सूजा, २ सातल ३ बीका ४ दूदा ५ राड़पाल ६ करमसी ७ वणवीर ८ शिवराज ९ सींधा १० बीदा ११ सामन्तसिंह १२ भारमल १३ नरसिंह १४ जोगा इनमेंसे राव बीकाने बीकानेर बसाया जिनके वंशज महाराजा गंगासिंह हैं। दूदा मेड़तामें रहने लगे जिनके वंशज मेड़तिया राठौड़ कहलाये (जिनमें अभी सुन्दरदासका पुत्र गोपाल व वीर बिहारीदासका पुत्र बनमालीदास प्रसिद्ध योद्धा हैं सुन्दरदासका पुत्र गोकुल और रामदासका पुत्र जगतसिंह भी इस वंशके उल्लेखनीय व्यक्ति हैं)। रायसिंहका पुत्र शीलनिधि दाता और शूरवीर है। राड़पाल और करमसी खींवसर ग्राममें रहने लगे करमसीके वंशज करमस्योत पीपाड़में प्रसिद्ध हैं। द्रुणाड़ेमें शिवराज और सामंतसिंह डांवरेमें रहने लगे भारमलने बीलाड़ामें शत्रुको जीता जिनके वंशज पृथ्वीराज बलोत प्रसिद्ध हैं।

राव जोधा चिरकाल राज्य कर सं० १५४५ में स्वर्गवासी हुये इनके पीछे सातलने दो तीन वर्ष राज्य किया इनके बाद राव सूजा गद्दी पर बैठे जिनका जन्म सं० १४९६ भादवामें व राज्याभिषेक सं० १५४८ में हुआ जिनके ८ पुत्र[14] थे इनमें १ बाघाका जन्म सं० १५१४ में व स्वर्गवास सं० १५७१ में कुंवर पदमें ही हो गया दूसरे पुत्र शेखा ३ ऊदा ४ देवीदास, ५ प्राग, ६ सांगा, ७ नरो, ८ तिलोकसी थे। राव सूजा ने २४ वर्ष राज्य कर सं० १५७२ में कालधर्म प्राप्त किया। इनके ज्येष्ठ पुत्र राव बाघा के ५ पुत्र हुए १ गांगा, २ वीरमदे ३ जयतसी ४ खेतसी ५ प्रतापसी। इनमेंसे पिता के कुंवर पदमें मरजानेसे गांगा गद्दीके अधिकारी हुए। इनका जन्म सं० १५४० के बसंतमें व राज्याभिषेक सं० १५७२ में हुआ। इन्होंने दौलतखां[15] की फौजको विचलित कर उसकी सेनाके हाथीको मारा। राव गांगा १६ वर्ष राज्य कर सं० १५७८ में स्वर्गवासी हुये। इनके ६ पुत्र थे—१ मालदेव २ मानसिंह ३ कृष्णदास ४ कान्हू ५ तेजसी ६ वैरसल। इनमेंसे मालदेव राज्याधिकारी हुए इनकी सेनामें ८०००० घोड़े थे।

मालदेवका जन्म सं० १५६८ में और सं० १५७८ में राज्याभिषेक हुआ। इन्होंने

---

१४ रेऊजीने अपने इतिहासमें इनके १० पुत्रों के नाम दिये हैं।

१५ रेऊजीके इतिहासमें इसे नागौरका शासक बतलाया है।

मारवाड़ राज्यको खूब बढ़ाया। इनके वशवर्त्ती कतिपय स्थानों[16]के नाम दिये जाते हैं—१ सोजत २ सांभर ३ मेड़ता ४ रायपुर ५ बधनौर ६ लाडणू ७ राइपुर ८ भाद्राजन ९ नागौर १० सिवाणागढ ११ जोहणगढ १२ जयतारण १३ बीकानेर १४ भीनमाल १५ पोहकरण १६ धाहड़ १७ बाहड़मेर १८ रैवासा १९ कासली २० जोनावर २१ जालोर २२ कुंभलमेर २३ नाडूल २४ फलोधी २५ साचौर २६ डिडवाणा २७ चाटसू २८ फतेपुर २९ चितौड़ ३० अमरसर ३१ कोटरा ३२ सामड़गांव ३३ रायडि ३४ वनजीरपुर ३५ टूंक ३६ टोडो ३७ अजमेरगढ इन सब स्थानोंको जीत कर उमरावोंको जागीरें बांट दी। जाजपुर और उदयपुरको भी इन्होंने जीता और राणाको जंगलोंमें भगा दिया था। मंडोवराधिपति मालदेवने ननिहाल सीरोही दशकी काण रखी, अर्थात उस पर चढ़ाई नहीं की।

राव मालदेवके ८ पुत्र[17] हुए यथा—१ राम २ उदयसिंह ३ चन्द्रसेन ४ भोजराज ५ रत्नसी ६ राइमल ७ विक्रमादित्य ८ भाण। राव मालदेवने ज्येष्ठ पुत्र रामकी विद्यमानता में भी चन्द्रसेनको राज्य दिया जिससे राम असन्तुष्ट होकर राणाके पास चला गया द्वितीय पुत्र उदयसिंह दिल्लीपतिकी सेवा करने चला गया। कुछ समय बाद मालदेवके स्वर्गवासी होने पर राम और उदयसिंहने मौका पाकर दोनों ओरसे चन्द्रसेनको घेर लिया। चन्द्रसेनने अवसरोचित रामको सोजत देकर मेल कर लिया अत उदयसिंहसे चन्द्रसेनका भयंकर युद्ध हुआ पर उदयसिंहको सफलता नहीं मिल सकी।

रामके ७ पुत्र थे १ राव पूर्णमल २ कर्ण ३ कलाराय ४ भूपति ५ केशव ६ नारायण ७ राघवदास। इनमें केशवको दिल्लीशने चोल देशमें मैसूरका शासक बनाया। अब भी उनके वंशज दक्षिणमें प्रसिद्ध हैं।

चन्द्रसेनके ३ पुत्र हुए १ उग्रसेन २ आसकरण ३ राइसिंह। इनमेंसे चन्द्रसेनने आसकरणको राज्य दिया पर वह अल्पकाल राज्य करने पर उग्रसेनकी कटारीसे मारा गया। यह देख आसकरणके खवास चींचरिया राठौडने उग्रसेनका भी काम समाप्त कर डाला। मौका पाकर (मालदेवके पुत्र) उदयसिंहने सम्राट अकबरसे मारवाड़का राज्य सं० १६४० में प्राप्त कर लिया। उदयसिंह शरीरसे बड़े स्थूल थे और राज्य भी बड़ा मिल गया अत अकबर इन्हें मोटे राजा नामसे सम्बोधित करता था।

---

१६ रेऊजीने ५८ परगनोंके नाम दिये हैं।

१७ रेऊजीने इतिहास में २२ पुत्रोंका उल्लेख है।

चन्द्रसेनके तीसरे पुत्र रायसिंह [18] को सीरोही नरेशने मार डाला था। एक दिन उदयसिंहको रणवासमें बैठे रायसिंहके वैरका बदला लेना स्मरण हो आया। इन्होंने सीरोही पर चढ़ाई कर दी। इनकी प्रबल सेनाके समक्ष अर्बुदपतिको भाग जाना पड़ा। उदयसिंहने वहां की अट्टालिकाओंको धराशायी कर चतुर्दिक अपनी आज्ञा प्रसारित की। अन्तमें आबूपतिके दण्ड देना स्वीकार करने पर पुनः राज्य दे दिया।

उदयसिंहके ११ पुत्र [19] थे यथा—१ सूर २ कृष्णसिंह (जिनके वंशज रूपसिंह प्रसिद्ध हैं) ३ सकतिसिंह ४ नरहरदास ५ अक्षयराज ६ भूपति ७ जैतसिंह ८ दलपति ९ मोहन १० माधव ११ भगवान। इनमेंसे सूरसिंह राज्याधिकारी हुए इनका जन्म [20] सं० १६२८ राज्याभिषेक सं० १६५२ में हुआ सम्राट अकबरने इन्हें मारवाड़ का राजा स्वीकार किया। इन्होंने नृपनीतिसे राज्य किया, भाईकी अनीति देखकर उसका भी वध किया दक्षिणमें सूरसिंहने [21] गुजरातसे बहादुरशाहको निकाल बाहर किया व अकबरके निजामशाह के विरुद्ध भेजने पर वहां भी युद्धमें विजय प्राप्त की।

सूरसिंहकी २ राणियोंसे १ गजसिंह और २ सबलसिंह दो पुत्र हुए। २४ वर्ष पर्यन्त राज्यकर इनके स्वर्गवासी होनेपर सं० १६५२ में जन्मे हुए जेष्ठ पुत्र गजसिंह राज्याधिकारी हुए। इन्होंने जालोर पर चढ़ाईकर शत्रुको हराया। जहांगीरकी आज्ञा से शाहजहांसे युद्ध किया और भी जब २ दिल्लीपतिका आदेश मिला, शाहीसेनाका नेतृत्व कर शत्रुओंसे लोहा लेकर अपने वीरत्व का परिचय दिया।

महाराजा गजसिंहजीकी पट्टराज्ञी रुक्मावतीसे जसराज—जसवन्तसिंह एवं सोनगिरीकी कुक्षीसे अमरसिंह जन्मे। इनमेंसे अमरसिंहको ज्येष्ठ होने पर भी स्वयं महाराजाने राज्याधिकारसे वंचित कर दिया। अमरसिंह बडे स्वाभिमानी

---

१८ सम्राट अकबरने सं० १६४० में चन्द्रसेनका राज्य उग्रसेन व आसकरणके मारे जाने पर उदयसिंहको दिया ऐसा प्रस्तुतः ग्रन्थमें उल्लेख है पर रेऊजीके अनुसार इतःपूर्व सं० १६३९ में रायसिंह जोधपुरके राजा हुए, सीरोहीके राव सुलतान से युद्ध करते समय मारे जानेके बाद उदयसिंहको राज्य मिला। रायसिंहके अल्पकाल राजा रहनेके कारण दलपतिने उनका निर्देश नहीं किया।

१९ रेऊजी के इतिहास में इनके १६ पुत्रोंका नाम दिया है।

२० रेऊजीने इनका जन्म सं० १६२७ वैशाख कृष्ण १५ लिखा है, सम्भव है कि श्रावणादि वर्ष प्रारम्भके कारण यह अन्तर रहा हो।

२१ रेऊजी के इतिहासमें इनका नाम किसनसिंह लिखा है। सं० १६७२ में अजमेर में ये मारे गये थे।

ये उन्होंने दरबारमें खासमें अनुचित कथनसे उत्तेजित होकर तत्काल एक ही कटारसे सलावतखाँको मार डाला[22] एवं स्वयं वीरगतिको प्राप्त हुए।

महाराजा गजसिंहके उत्तराधिकारी जसवंतसिंह हुए। इनका जन्म सं० १६८४[23] माघ (कृष्णा) ४ मध्याह्न अभिजित नक्षत्रमें बुरहानपुरमें हुआ था। सं० १६९५ की ग्रीष्म ऋतु[24] के लगते ही महाराजा गजसिंह स्वर्गवासी हुए अतः सं० १६९५ मि० आषाढ़ कृष्ण ७ शुक्रवारको सम्राट शाहजहाने जसवंतसिंहको राज्याभिषिक्त किया।

इसके पश्चात् कविने वंशावलीके प्रधान नामों एवं घटनाओंको दुहराया है, तदनंतर महाराजा जसवन्तसिंह का अलंकारिक वर्णन किया है। यहां केवल ऐतिहासिक बातोंका ही संक्षिप्त सार दिया जाता है।

शाहजहांने कंधारकी लड़ाई में जसवन्तसिंह को अपने साथ रखा और उसने इनके रणकौशल से प्रसन्न होकर सं० १७०७ के चैत्रमें पोहकरणका पट्टा दिया। महाराजा पोहकरण पर अधिकार करनेके लिए स्वदेश लौटे और आश्विन शुक्ल ३ को पोहकरण के अधिकारी भाटी पर अपनी फौजें भेजी। ये सेना तीन भागोंमें विभाजित की गई—१ मेड़तिया सुन्दरदासोत गोपालदास २ चांपावत गोपालदासके पुत्र विट्ठलदास एवं ३ कूंपावत राजसिंहोत नाहरखां इनके अध्यक्ष थे। इन तीनों हुकदारोंने तीनों ओरसे पोहकरण पर चढ़ाई की। संघवी प्रतापमल, भंडारी जगन्नाथ, मुहणोत नैणसी और पंचोली मदनदास इनके साथ थे। आश्विन शुक्ल १५ के दिन पोहकरण को चतुर्दिक घेर लिया गया। भाटियोंने इनकी शक्तिसे घबड़ा कर धर्मद्वार मांग लिया। सं० १७०७ मिति कार्तिक कृष्णा ६ शनिवारके दिन यादव भाटियोंने पोहकरण छोड़ दी। बारह भाटी सरदारोंने युद्ध किया, अवशेषने मुंहमें तृण धारण कर लिए। महाराजाने रामचन्द्र भाटीको खदेड़ कर सबलसिंह (रावल मालदेवके पुत्र) को सहायता दी[25]। कवि कहता है कि शाहजहाने इनकी बड़ी सराहना की और

---

२२ इन घटनाका प्रामाणिक वर्णन अमरबत्तीसी और अमरसिंहजी की बातमें विस्तार से पाया जाता है जो कि भारतीय विद्या वर्ष २ अंक १ में प्रकाशित है।

२३ रेऊजी और ओझाजी ने जन्म सं० १६८३ लिखा है पर समकालीन होने से दलपतिका कथन ठीक जँचता है।

२४ रेऊजीने मिती ज्येष्ठ शुक्ला ३ को इनका स्वर्गवास लिखा है।

२५ रेऊजी के इतिहासमें सबलसिंहको जैसलमेरका राज्य दिलाने रूप यह सहायता दी गयी लिखा है।

इनके पूर्वज उदयसिंह, सूरजसिंह और गजसिंह जितनी भूमि दखल न कर सके इन्होंने अपने अधीन कर सुयश फैलाया। महाराजा जसवन्तसिंहके ग्यारह पीढ़ियों से स्वामीभक्त पंचोली वल्लू और मोहनदास सरदार थे। इनमेंसे वल्लूको बुद्धिमान देखकर महाराजाने दीवान नियुक्त किया।

इसके पश्चात् कविने महाराजाके हाथी, घोड़े, नायिकाएं, वसन्त फागोत्सव एवं अन्तःपुरके सुख आदिके वर्णन करते हुए हाडी, कुशवाही, गौड़ी, यदुवंशी, चौहानी रानियोंका वर्णन किया है। प्रसंगवश नव रस शृंगारके सम्बन्धमें कविने अपने अन्य ग्रन्थ 'रस रत्नावली'का उल्लेख किया जो अब अप्राप्य है। अन्तमें कविने महाराजाके चिरंजीवि होनेकी शुभाशीष व्यक्त करते हुए लिखा है कि सम्राट अकबर ने गुणी जानकर बीरबल[२६] विप्र कविको राजा बनाया एवं खानखाना[२७] व गंगकवि[२८]को प्रसिद्ध व सम्मानित किया। शाहजादेने हाथी, घोड़ा, स्वर्णदानसे गंगकविका दारिद्र दूर किया। शाहजहाँने सुन्दर कवि पर प्रसन्न होकर उसे महाकवि का विरुद दिया। बुन्देले राजा इन्द्रजितने केशवदास[२९] का महत्त्व बढ़ाया राव शत्रु

---

२६ कविवर भूषणके उल्लेखानुसार ये त्रिविक्रमपुर (तिकवांपुर) के निवासी थे। स्वर्गीय रामचन्द्र शुक्लने लिखा है कि इनके कुलका पता नहीं पर भूषण व दलपतिके कथनानुसार इनका ब्राह्मण होना निश्चित है। दलपतिने इन्हें सम्राट अकबरसे मिलनेके पूर्व गरीब लिखा है। प्रयागके किलेमें अवस्थित अशोक स्तंभके लेखमें इन्हें गंगादासका पुत्र बतलाया है। इन्होंने सं० १६३२ में प्रयागकी यात्रा की थी। कुछ लोग इनकी जन्मभूमि नारनौल व मूल नाम महेशदास बतलाते हैं। भरतपुरमें आपके रचित बहुतसे कवित्तों का संग्रह विद्यमान है।

२७ स्वर्गीय रामचन्द्र शुक्लने लिखा है कि ये अकबरके दरबारी कवि थे और खानखाना अब्दुर्रहीम इन्हें बहुत मानते थे। कुछ लोग इन्हें ब्राह्मण कहते हैं पर अधिकतर ब्रह्मभट्ट होनेकी प्रसिद्धि है। कहा जाता है कि ये किसी नवाब या राजाकी आज्ञासे हाथीके पैरों तले कुचलवाये गये थे। प्रवाद है कि खानखाना ने एकबार इन्हें एक छप्पय पर छत्तीस लाख रुपये भेंट किये थे। आपके रचित कतिपय कवित्तोंका संग्रह स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी ने प्रकाशित करवाया था।

२८ इनका जन्म सं० १६१० व मृत्यु सं० १६८३ है। हिन्दी साहित्यमें ये बहुत प्रसिद्ध हैं आपके रचित दोहा, सतसई आदि ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

२९ इनका जन्म सं० १६१२ व मृत्यु सं० १६७४ के लगभग है। आपके छंदमालादि ग्रन्थोंके सम्बन्धमें हमारा एक लेख हिन्दुस्तानीमें प्रकाशित हुआ है।

सालने कनौजिया कवि केहरी १० को कवीन्द्र पद देकर निहाल किया। वैसे ही महाराजा जसवंतसिंहके आश्रयमें आया हुआ कवि दलपति क्यों न निहाल होगा ? तदनन्तर कविने जसवन्तउद्योत श्रवणका फल हरिवंश श्रवणके सदृश बतलाते हुए इसमें वर्णित पूर्ण वंशावली विष्णुपुराण व पीछेके ६० राजाओंकी वंशावली जनश्रुति के आधारपर रचनेका सूचन कर ग्रन्थ समाप्त किया है।

कविने जसवन्तउद्योत सं० १७०८ के लगभग समाप्त कर दिया था। इसके पश्चात् भी महाराजा जसवन्तसिंहने बहुत वर्ष राज्य किया। ये सफल शासक होनेके साथ साथ साहित्य मर्मज्ञ और वेदान्तके विद्वान थे। आपके रचित भाषा-भूषण ग्रंथने हिन्दी साहित्यमें बड़ा आदर पाया, इस पर तीन चार टीकाएं भी परवर्ती विद्वानोंने निर्मित की हैं। अलंकारके विषयमें एक छोटेसे ग्रन्थमें बहुत ही सुन्दरतासे प्रकाश डाला गया है। आपके अन्य ग्रंथोंमें आनन्दविलास, अनुभवप्रकाश, अपरोक्षसिद्धान्त, सिद्धांतबोध, सिद्धांतसार, प्रबोधचन्द्रोदय अनुवाद—चन्द्रबोध, पूली जसवन्त संवाद, फुटकर दोहे, आनन्दविलास (संस्कृत पद्यमें) और गीता भाषा टीकादि उल्लेखनीय है। आनन्दविलास आदि वेदान्त विषयक ५ ग्रंथ गवर्नमेण्ट प्रेस जोधपुर एवं भाषाभूषण नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित हो चुके हैं। आपके कतिपय ग्रंथोंकी हस्तलिखित प्रतियां हमारे संग्रहमें भी हैं। गीता भाषा टीकाकी प्रति अनूप संस्कृत पुस्तकालयमें है।

माननीय ओझाजीने अपने जोधपुर राज्यके इतिहासमें महाराजा जसवंतसिंह के काव्यगुरु सूरति मिश्रको बतलाया है पर यह असंभव है क्योंकि सूरतिमिश्रका ग्रंथ रचनाकाल सं० १७६६ से १८०० तकका है जबकि महाराजाके काव्यगुरु का समय सं० १७०० के आस पास होना चाहिये। जहां तक हमारा विश्वास है महाराजाको कविता की शिक्षा देनेवाले प्रस्तुत ग्रंथ रचयिता दलपति मिश्र होने चाहिये। सं० १७०५ में इस ग्रन्थकी रचना प्रारम्भ हुई, इसमें वर्णित बातोंसे कविका महाराजाके साथ पहले अच्छा सम्बन्ध होना सिद्ध होता है। अत सं० १७०० के लगभग महाराजाको इन्होंने काव्यकलाकी शिक्षा दी होगी।

महाराजा जसवन्तसिंहका व्यक्तित्व महान् था। हम उसके विषयमें अपनी ओरसे कुछ न कहकर स्वर्गीय ओझाजीने जोधपुर राज्यके इतिहासमें जो कुछ लिखा है उसे यहां उद्धृत कर देते हैं—

१० दलपतिके उल्लेखानुसार ये भी एक सुकवि थे पर इनका हिन्दी साहित्यके इतिहास ग्रन्थोंमें कोई उल्लेख नहीं मिलता। अत इनके ग्रन्थोंका अनुसन्धान करना आवश्यक है।

महाराजा (जसवन्तसिंहजी) का व्यक्तित्व

महाराजा जसवंतसिंह अपने समयका बड़ा वीर, साहसी, शक्तिशाली, नीतिज्ञ, उदार एवं न्यायप्रिय नरेश था। उसके राज्यकालमें जोधपुर राज्यका प्रताप बहुत बढ़ा। बादशाह शाहजहांके समय शाही-दरबारमें उसकी प्रतिष्ठा बड़े ऊँचे दर्जेकी थी। उसके समय उसका मनसब बढ़ते बढ़ते सात हजार जात और सात हजार सवार तक पहुंच गया था और समय समय पर उसे बादशाहकी तरफसे हाथी, घोड़े, सिरोपाव आदि मूल्यवान् वस्तुएँ उपहारमें मिलती रही। उसके (शाहजहां) समयकी चढ़ाइयोंमें शामिल रह कर उसने राठौड़ोंके अनुरुप ही वीरताका परिचय देकर अपने पूर्वजोंका नाम उज्ज्वल किया। बादशाह उसपर विश्वास भी बहुत करता था—शाहशुजा, औरङ्गजेब एवं मुरादकी तरफसे खतरेकी आशङ्का होते ही उसने आगरेके किलेकी रक्षाके लिये अविलम्ब महाराजा जसवन्तसिंहजीको नियुक्त कर दिया। इस अवसर पर स्वयं उसके पुत्र दाराको भी रात्रिके समय किलेमें प्रवेश करनेकी पूरी मनाही थी। अनन्तर उसने जसवन्तसिंहको ही आगरेकी ओर बुरी नियतसे बढ़नेवाले औरंगजेब और मुरादकी सम्मिलित सेनाओंको परास्त करनेके लिये भेजा। दोनों शाहजादोंकी संयुक्त सेनाकी शक्ति बहुत बड़ी थी पर न्यायके पक्ष में होनेके कारण वह जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने ऐसी वीरताके साथ विद्रोही शाहजादोंका सामना किया कि कुछ समयके लिये उनके हृदय पराजयकी आशंकासे विचलित हो गये, परन्तु दूसरे शाही अफसर कासिमखांके विश्वासघात करने तथा अचानक युद्धक्षेत्र छोड़कर चले जानेसे युद्धका रूप बिलकुल बदल गया। शाही सेना बुरी तरह पराजय हुई। जसवन्तसिंह उस समय भी लड़नेके लिये कटिबद्ध था, पर उसके स्वामीभक्त सरदारोंने इसकी निष्फलता जतलाकर उसे युद्धक्षेत्रका परित्याग करनेके लिये मजबूर किया। ऐसी दशामें भी औरङ्गजेबको उसका पीछा करनेकी हिम्मत न पड़ी क्योंकि उसे उसकी वीरताका भलीभांति ज्ञान था। अपनी इस पराजयकी महाराजाके मनमें बहुत समय तक ग्लानि बनी रही। इसके थोड़े समय बाद ही वास्तविक उत्तराधिकारी दाराको हरा और शाहजहांको नजर कैदकर औरंगजेबने सारा मुगलराज्य अपने अधिकारमें कर लिया परन्तु दारा और शुजाके जीवित रहते हुए उसका मार्ग निष्कण्टक न था। इन कांटोंके रहते हुए उसने जसवन्तसिंह जैसे शक्तिशाली शासकसे वैर मोल लेना ठीक न समझा और उसे बलाकर

उसका मनसब आदि बहाल कर उसे अपने पक्षमें कर लिया, पर इससे जसवन्तसिंह की मनस्तुष्टि न हुई। ऊपरसे किसीप्रकारका विरोध प्रगट न करने पर भी उसका मन औरंगजेबकी तरफसे साफ न हुआ। पिताकी जीवितावस्थामें ही उसका सारा राज्य हड़प लेना न्यायप्रिय जसवन्तसिंहको पसन्द न था। देशकी दशा तथा औरङ्गजेबकी बढती हुई शक्तिको देखते हुए प्रकट रूपसे उसका विरोध करना हानि-प्रद ही सिद्ध होता। फिर भी खजवाकी लडाईमें एकाएक औरङ्गजेबकी सेनामें लूट-मार मचाकर उसने अपनी विरोधी भावनाका परिचय दिया। उस समय औरङ्गजेबके लिये बडी विकट स्थिति उत्पन्न हो गई थी, पर शाह-शुजाके ठीक समय पर आक्रमण न करनेके कारण इससे कुछ भी लाभ न हुआ और जसवन्तसिंहको शीघ्र जोधपुर जाना पड़ा। औरङ्गजेब इस बातसे उसपर बड़ा नाराज हुआ और उसने रायसिंह को एक बड़ी सेनाके साथ उसके विरुद्ध भेजा, लेकिन पीछेसे उसने उससे मेल कर लेनेमें ही भलाई समझी। भविष्यमें वह उसकी तरफसे सावधान रहने लगा, जिससे उसने अन्तमें उसकी नियुक्ति दूर देशमें ही की ताकि वह निकट रहकर कोई बखेड़ा न खड़ा कर सके। उसको खुश रखनेके लिये उसने समय समय पर उसे इनाम इक-राम भी दिये।

महाराजा कट्टर हिन्दू था, इसीसे बादशाह द्वारा प्रसिद्ध मरहठा वीर शिवाजी के विरुद्ध भेजे जाने पर भी उसने उन चढ़ाइयोंमें विशेष उत्साह नहीं दिखाया। अपने पड़ोसी राजाओंके साथ उसका सदा मैत्रीभाव ही बना रहा। महाराणा राजसिंहने राजसमुद्रकी प्रतिष्ठाके अवसर पर अन्य मित्र राजाओंके समान उसके पास भी १ हाथी, दो घोड़े, सिरोपाव भेजा था। कछवाहा राजा जयसिंहके साथ भी उस (जसवन्तसिंह) की ऊँचे दर्जेकी मैत्री बनी रही।

बहुधा शाही सेवामें संलग्न रहने पर भी वह अपने राज्यके प्रबन्धकी तरफसे कभी उदासीन न रहा। सरदारों आदिके बखेड़े होने पर उसने योग्य व्यक्तियोंको भेजकर उनका सदा ठीक समय पर दमन करवा दिया। उसके समयमें राज्यमें शान्ति तथा समृद्धिका निवास रहा।

वह जैसा वीर था, वैसा ही दानी, विद्वान और विद्याप्रेमी नरेश भी था। उसने स्वयं भाषामें कई अपूर्व ग्रन्थ बनाये थे जिनका उल्लेख ऊपर आ गया है। उसके मन्त्रियोंमें से मुहणोत नैणसी बड़ा योग्य, विद्वान् तथा वीर व्यक्ति था। उसका लिखा हुआ इतिहास ग्रंथ जो "मुहणोत नैणसीकी ख्यात" के नामसे प्रसिद्ध है,

ऐतिहासिक दृष्टिसे बड़ा महत्व रखता है। महाराजाकी सख्तीसे तंग आकर मुंहणोत नेणसीने पीछेसे कटार खाकर आत्महत्या करली। यदि वह जीवित रहता तो ऐसे कई अमूल्य ग्रंथ लिख सकता था।

महाराजाने काबुलमें रहते समय वहांसे बढ़िया अनारके पेड़ माली धनरा गहलोतके साथ भेज कर जोधपुरमें कागाके बागमें लगवाये। अब भी मिठास व गुण के लिये यहांके अनार दूर दूर तक मंगाये जाते हैं और बहुत प्रसिद्ध हैं।

महाराजाकी मृत्युके साथ ही जोधपुर राज्यका सितारा अस्त हो गया। उसकी मृत्युके समय उसके कोई पुत्र जीवित न होनेसे बादशाहको अपनी नाराजगी निकालनेका अच्छा अवसर मिल गया। उसने अविलम्ब सेना भेजकर जोधपुर राज्य खालसा कर लिया और वहां कितने एक वर्षों तक मुगलोंका अधिकार बना रहा। इस सम्बन्धमें जसवन्तसिंहके दुर्गादास आदि स्वामीभक्त सरदार प्रशंसाके पात्र हैं क्योंकि उनकी वीरता एवं अनवरत उद्योगके फलस्वरूप ही जसवन्तसिंहकी मृत्युसे कुछ समय बाद उत्पन्न उसके पुत्र अजीतसिंहको औरङ्गजेबके मरने पर पुनः जोधपुरका राज्य प्राप्त हो सका।

(ओझाजीका जोधपुर राज्यका इतिहास भा० १ पृष्ठ ४७२)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंघजी को ग्रंथ

जसवंत-उद्योत

मिश्र दलपति को कह्यो लिख्यते ।

दोहा

प्रथम मंगलाचरन कै चरन चितलाइ ।
गनपति गिरा गिरीस की बिनती करी बनाइ ॥१॥

अथ गणेसकी स्तुति

वारन बदन चारयौं बरन सरन आय । आपदा हरन नरदेवता असुरके ।
मनोरथ दाइक सहाइक सांकरें ठौर । महागननाइक धरैया धराधुरके ॥
दलपति दीरघ दुरित उधरन नित । आनदकरन गिरिजा गरीस करके ॥२॥

अथ सारदाकी स्तुति

चतुरानन आनन चारि कह्यो । सहसानन हू सहसानन गायो ।
सुर पान निरंतर नाचकरे । बहुँभातिनि गीत सगीतनि गायो ॥
दलपति चारु विचारु सचैं । श्रुतिसार पुराननि व्यास बनायो ।
मानव दानव देवनि हू । भरवानी पयोधि को पार न पायो ॥३॥

अथ शिवस्तुति

बारूको बनाऐं बकसत बसुमती नैंक । नीरु सिर नाए करैं भगतिकी भांईजू ।
निधिके पलटे चारि चांवरनि लेतदेत । आकके पातनि नाक नाथनकी बडाईजू ॥
दलपति जहा जहा साकरैं स्यौंरत तहां । लागति न आंचे सांचे ऐसे सरणाईजू ।
तीन्योंताप मोचन तिलोचन तिसूलधारी । तिपुरविदारी तिहूंपुरके गुसाईंजू ॥४॥

अथ कवि वंस वर्णनं

अकबरपुर अनुपम सहरु, बसे सुरसरी तीर ।
चार्यौं बरन रहैं जहा, धरम धुरंधर धीर ॥५॥
दीप मिश्र माथुर तिहां, सदा कर्म षट् लींन ।
साधु सिरोमणि सीलनिधि, पंडित परम प्रवींन ॥६॥
तिन पुनि राम नरेस ढिग, कियौ कछुक दिन बासु ।
पाठे नृप कौविद धरनि, जगमगातु जसु जासु ॥७॥
सदाचार गुन गननि पुन, तासु तनय सिवरांम ।
तिनके सुत तुलसी भए, सकल धर्म के धांम ॥८॥
तुलसी सुत दलपति सुकवि, सकल देव द्विज दासु ।
तिन बरन्यो बल बुद्धिसौं, श्रीजसवंत विलासु ॥९॥
पाच अधिक सत्रह सई, संब्रत् को परमानु ।
ग्रीष्म रीति आंसाढ सुदि, तीज बारु हिम भानु ॥१०॥
नगर जहानाबाद जहा, रच्यौ चकत्तां भूप ।
तहा दलपति जसवंत की, पोथी रची अनूप ॥११॥
नगर जहानाबाद कौ, बरनन कर्यौ बनाई ।
जहां नृपति जसवंत कहँ, मिल्यौ कवीसुर आइ ॥१२॥

अथ जहांनाबाद बरनन

घनाछरी छंद

एहा बहुभाँति हीर जवाहिर जोति वेहा । एकें अमरावती उदोतु नषतेसकौ ।
एहीं अगनित गज अमित तुरंग वेहीं । एके हाथी अरु एके घोरौ अमरेसकौ ॥

सेही पुरहूतु एक नांक को नाइकु आदि।एहा पतिसाह साहिजहां देसदेसको।
ऐसें सम होत अमरनि को नगर जैसें। साहिजहानावाद बसुधा नरेसको ॥१३॥
नीलमणि मई मनों जमुना बहति स्वाद। सुधासमनीर वाउली तलाइ कूप हैं।
चारु चहबचा अरगजानिसों भरे। अरु नदन ते आगरे बगीचा बहु रूप हैं॥
कहै दलपत्ति चहू चक्कके चकवे। जेहा साहिजहा साहिब किरान सान भूप हैं।
ज्यों साहिजहानावादु बसुह स्यो है। ऐसे और टीप कहा और नगर अनूप हैं॥१४॥
कनक कुगुरा पटिकनके पगार जेहा। आगरेके चोक कलधोत बल दारे हैं।
झाझरी झरोषी हीरे जवाहिर भरे हरे। पनाके परम चारु चलत पंनारे हैं॥
ऐसें समकीजे और लोकनिषे ओक योक। ज्यों साहिजहांनावादु सदन सवारे हैं॥१५॥
झाझरी झरोषनि लसत मरकत उहे। लोचन ललित बीच अजनु सुढारु हैं।
विविध विछोना अध उरध विताने सोहैं। नपशिप सोहत सुरग पहुचारु हैं॥
कोतु कटि किंकिनी मनुज मनसानि हरें। नीरुनल ठरे दलपति मनोहारु हैं।
आगमनाइक साहिजहा को निहारि मनों। दिल्ली नारि रच्यौ तन नूतन सिंगारु हैं॥१६॥

॥ अथ म०राजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंघजूके पुरुषनको वर्णनु ॥

प्रथम आदि श्रीनाराइण

कुडलीया छद

नाराइण कारन प्रथम, अगुन अरूप अरेप।
धरे भगत हित हेत जिन, अमित आपने वेष॥
अमित आपने वेष धरे ससार उधार्यौ।
अधम अजामिलु व्याधि गीधु गोकुल गज तार्यौ॥
गजु तार्यो दलपति नाउ निकसति पाराइन।
परम पुरुष प्रकृतीश प्रथम कारन नारायन॥१७॥

अथ श्रीनारायण के दशावतार के वर्णनुं

प्रथममीन

मीनवपु धरत निगम उधरत प्रभु।
नीर निधि नीद दर्शनिकु रहे रन्नु है॥

दलपति बाडव विरोचन की आँच एक।
ठोरके भएतें कनकाचलु गलतु हैं ॥
तीछन तरल पूंछ छोरु फटकत ठोरठोर।
चहू ओर अध उरध दलतु हैं ॥
दिग्गज चलत दिगपाल दहलन महा।
नागके हलत मनु भूगोलु हलतु हैं ॥१८॥

अथ कूर्मः

जब जब जहां जगदीस जैसें राख्यो तब। तहांतिहि भांतिन जगतु निरवह्यो हैं।
महा भारू भएं अधजात भुअलोकु पुनि। भीर पाइ कूरम सरीरु आइ गह्यो हैं ॥
ऐसें पीठि पर बिलसति बसुमति। दलपति उपमानि कवि कोविदनि कह्यौ हैं।
प्रलय पयाधि जल बीच बिहरत कमनीय। मनौं बाहुको फनूका लागि रह्यौहै ॥१९॥

अथ वाराह

जैसें हरि हन्यौं हरिनाकुस को भैय्या। भीरपरें फोंनु एसें जगसांकरे सहाइ हैं।
कोल रूप आयुही अकेले जगदीसु। टाढ ओर अधगई अवनि उठाइ हैं ॥
दलपति औरनि कह्यो न जांइ भेउ। व्यासदेवु बरनतुं उपमांहि उपजाइ हैं।
सौरभ लुबुधि केतकी कुसुम बीच बसि रही। मनौं भौंरकी भांमिनी उड़ि आइ हैं ॥२०॥

अथ नृसिंह

दानव सरोस सनकादि सापबस। अमरनि की अकसपूतु आपनौं पचार्‌यो हैं।
मोह मदु पिये मूढ जानतु नहिऐं। जगदीसकी सहाई जनुं मरतु न मार्‌यो हैं ॥
दलपति बडी प्रभुजुकी प्रभुताई करि। भगतकी भाई हरिनाकुसु बिदार्‌यौ हैं।
किधौं पहलादकी सर सेवकाइ जिहि। पाथरकी कोर परमेसुर निकार्‌यौ हैं ॥२१॥

अथ वामन

कही न परति एसी सहज निकाइ आपु। छोटे व्है जगत कर्‌यौ भगतको भायौ हैं।
देवनि के हेत भए मग्गने पराए जहां। डहकन गए तहां आपु डहकायौ हैं ॥
दलपति धाइ अगमने जन जाइ। बलिराजहि जनाइ रनिवासनि जनायौ हैं।
नैंनन निहार्‌यो न कहूं सुन्यौ न काम एसो। जैसो एकु नगर बिटौंना बौना आयौ हैं ॥२२॥

अथ परसराम

इकईस दाइ छत्रहीन छिति कै कै।
पुनि सकलपि देकै वढो जसु वगरायो है॥
दलपति दुसह कुठारधार जोर ठोरठोर,
रिपु सोनित को सागरु बहायो है॥
मेरे दरसत गरवतु कालु बामननि।
अब इहि दुप जालु बहुतु सतायो है॥
पार एक जो न देऊ जमहि सजा।
इतो कहाऊ न जगत जमदगनिको जायो है॥२३॥

अथ राम

बरसत सहज सनेह सिंधुसोत सित।
कोरनि सौं होति चित्तचोर नित वामके॥
दे दे दानु अमित उछाह रंग राचे।
दलपति दयापूरन कलपतरु कामके॥
घेरिल भिहावने सिंहावने सुहृद मन।
भावने हसैया कमलावतीके धामके॥
नेकु रोसु किऐ रिपु सोनित पिऐ।
सरमीले महारसनि रसीले नैन रामके॥२४॥

अथ कृष्ण

ध्यावत चित सत जागहत के के तित।
ध्यावतु समाधिनित साधि सत जागु है॥
पुरानपुरुष गुन गावत रहतु वेद।
पुरानु कहतु कहूँ पावतु न लागु है॥
दलपति सुनि मुनि मनु हारयो हरि।
नेकन निहारयो मारयो मोहु दोऊ रागु है॥
उहे जग सेया आगें पेलतु मकेया ऐसो।
बसुद वहेरो जसुमति तेरो भागु है॥२५॥

अथ बुध

सुरनकी औरनि असुर छल हेत आपु ।

निगम निकेत पलु पाखंड बखान्यौ है ॥

अवगति गति जगदीसकी कही न जाई ।

बुध नामु कहाई अबुध मति मान्यो है ॥

मुनिव्रतु लैकें तनु ज्वालनित चैकें ।

निसिदिन जोग केकें तादिने सुकुन जान्यो है ।

मारि जित व्है अमारजित मन चाह जाइ ।

जिन रूप विनु जिन रूपु जगु टान्यो है ॥२६॥

अथ कल्की नाराइण के ब्रह्मा

छप्पै

प्रथम होतु जुग अंतु जगतु प्रलयानल डह्यौ ।

सप्त सिंधु मिलि इक इक, सरवरु जनु बह्यौ ॥

सह संपत्त जगदीस, नाभि नीरजु तहां फुल्यौ ।

जहां वेदनिगुंजरत, भवरु कमलासन भुल्यौ ॥

दलपति विरंचि चिंतति हृदय, तक्किराय नारायन सरनु ।

तिंहु पुर प्रसिद्ध जाकौ विरदु सु सकल दीन दुप उद्धरनु ॥२७॥

ब्रह्माके मरीच,

नाभि सरोरुह मध्य, कियौ ब्रह्मा अखंड तपु ।

सकल विश्व निर्माण हेत, दुषु सह सह्यौ वपु ॥

विष्णु कृपाविधि रच्यौ, सप्त मानिसिक पुत्र पुनि ।

अत्रिय पुलक पुलस्ति अंगिरा क्रतु वशिष्ट मुनि ॥

दलपति अनंत गुन ग्यांननिधि, तिनमहँ इक्कु मरीचि किय ।

जिहि पाइ प्रथित कश्यपु तनय, सुविमल कित्ति भुअ वियरिय ॥२८॥

अथ दक्षकी उत्पत्ति

दोहा

वाम चरन अंगुष्ट विधि, रची एक तियचारु ।

दछिन पद अंगुष्टतें, कस्यौ दच्छ अवतार ॥२६॥

छप्पै छंद

दच्छ प्रजापति प्रथम, साठि कन्या सिरजी तहँ ।
तिनमहँ तेरह चन्द्रवदनि, दिन्यौ कस्यप कहँ ॥
तिन तिय उर अवतर्‌यौ वसु विधियै तिहु पुर ।
यच्छ रच्छ गधर्व नाग किन्नर दानव सुर ॥
दम्पति अदिति नंदन तिलकु, इकु सूर जग उग्गयौ ।
राजाधिराज राठौर मनि, सु जिहि कुल पुनि सूरजु भयौ ॥३०॥

सूर्यके मनु

सग्या नाम प्रसिद्ध तीय, लद्धिय सहसक्कर ।
तहँ जनमिय मनु महाराज, वसुमती पुरदर ॥
सो समस्त राठौर वंस, कारनु जग जानिय ।
सत द्वीप नवखंड, विमल्लजसु जासु वखानिय ॥
दलपत्ति दिव्यहा इन गुनित, इक अधिक सत्तरि जुगहँ ।
उच्चरत निगम बरनत विवुध, मन्वतर परिमान कहँ ॥३१॥

मनुके इक्ष्वाकु अयोध्याके राजा भए

मनु महीप के भए पुत्र नवमी पुनि नीतिरत ।
गावत सुरनर नाग जासु गुनगन अवपिसत ॥
इक इक दिग भूमि अवनि कहँ तात अवुदिय ।
जिन प्रचड भुजदड घोर दुजन दलु जित्तिय ॥
सब विधि समथु इक्ष्वाकु तहँ मध्यदेस अधिपति कियौ ।
पावन निमित्त पूरन पुहप सुरामु जासु जिहि कुल लियौ ॥३२॥

इक्ष्वाकुके विकुछिभए

तेईस सात कहाए नरनाहकु इक्ष्वाकु पुत्र सत भए धुरधर ।
जिन पूरब दछ्छिनु पछ्छाह उत्तर धम्मौवर ॥
तिनमहँ इकु विकुछि तातपिध्यौ मृगयाकहँ ।
ओसु विनुस सु भष्यौ नाउ लध्यौ ससादु तहँ ॥
हुअ तासु पुरजय नाम सुतु जिन समस्त भुग्गिय अवनि ।
जिहि वस मध्य काकुत्स्थ नृपसु हुअ अनेक दलपत्ति मनि ॥३३॥

विकुक्षिके पुरंजय ते ककुत्स्थ कहाए

इक समय सुरपरम दारु दानव रन मंड्यौ।
दुहुन परस्पर क्रुद्धि कढ़्ढ आयुध वरषंत्यो॥
देवनि तर्‍यौ सरन देत पुहमीसु पुरंजय।
अभयदान नृप दियौ लियौ निर्मल जगु अक्षय॥
वृषरूप इंदु वाहन भयौ, तिहि विकुक्षि नंदन चढ़िय।
जिति समस्त दुर्जननि कहँ सु, तिहुं पुर नाम ककुत्स्थ किय॥२४॥

ककुत्स्थके राजा अनेनस—

दोहा

भयो पुरंजय के सुअनु, जासु अनेनस नामु।
जिनन दयौ निज बाहुबर, बैरिन कहँ विश्राम॥२५॥

अनेनसके राजापृथु

नृपति अनेनस नंदु हुअ, पृथ नरेस सुभ अंग।
जा प्रताप पावक प्रबल, दुर्जन भए पतंग॥२६॥

पृथुके विश्वगंध

दलपति पृथु पृथवीस कौ, विश्वगंध हुअ नंदु।
विश्वगंध सुत चंद्र हुव, नृप नक्षत्र गन चंदु॥२७॥

चंद्रके राजा युवनास्व

भयौ तहां नृप चंद्र सुतु, महावली जुवनासु।
जिहि अगनित मख गनकके, लह्यो देवपुर वासु॥२८॥

जुवनासके राजा श्राव

महाराजा जुवनास सुतु, श्राव नाम इमीसु।
जिन समस्त दाननि ददे, तुष्ट कियौ जगदीसु॥२९॥

श्रावके राजा वृहदस्व

श्राव सुअनु वृहदस्व नृपु, भयौ वीर विरदेतु।
जो जसु फैलत स्याम रगु, लग्यौ तिहूंपुर सेतु॥४०॥

वृहदस्वके राजा कुवलयास्व ते धुंधमार कहाए

कुवलयास्व वृहदस्व सुतु, भयौ महावल वाहु।
हन्यौं धुंधु जिन समर महँ, देवन दयौ उछाहु॥४१॥

धुंधु वधकी कथा

छंद पाधरी

बृहदस्व महीपति महाभानु तपहेत करयौ वन कहा पयानु ॥४२॥
तहँ विपिन उतंक यह कह्यौ वेनु जसु लेहु एकु जगदेहु चेनु ॥४३॥
इकु धुंधु नाम दानव प्रचण्डु ना स्वास दहत ब्रह्मण्ड खण्डु ॥४४॥
मेरो तपु छूटत पाइ त्रास तुम दनुज मारि बन करहु बासु ॥४५॥
सुतु कुवलियाश्व अति धीरचित्त नृप दयौ धुंध मारन निमित्त ॥४६॥
तिन हयौ धुंधु निज बाहु जोर जसु भयौ आपनौ चहूँ ओर ॥४७॥

कुवलियाश्व के राजा दृढाश्व

दोहा

कुवलयाश्व नन्दन भयौ नृप दृढाश्व रणधीर ।
उन्नत चित्त सुमेरुलौं सागरलौं गम्भीर ॥४८॥

दृढाश्वके राजा हर्जश्व

हुअ हर्जश्व महाबली नृप दृढाश्व को पूतु ।
रूप जित्यौ जिन पञ्चशर सुख जीत्यौ पुरुहूत ॥४९॥

हर्जश्वके राजा निकुम्भ

भयौ भूप हर्जश्व को सुतु निकुम्भ नरनाथु ।
जिन सुरपुर वा सुरग कहँ दयौ सांकरे साथु ॥५०॥

निकुम्भ के राजा संहताश्व

नृप निकुम्भ नन्दनु नवलु संहताश्व गुनभौनु ।
जा प्रताप कुल वधुनि कौ आँचल उड्यौ न पौनु ॥५१॥

संहताश्व के द्वै पुत्र जेठे कृशाश्व लहुरे अकृशाश्व

संहताश्व के सुअन द्वै सकल भूप सिरताज ।
जिन तजी पल आधहूँ नेग त्याग की लाज ॥५२॥
ज्येष्ठ कृशाश्व प्रचेतु हुअ तहाँ कृशाश्व नृप एकु ।
राज करयौ जा राज महँ घर घर दानु विवेकु ॥५३॥

कृशाश्व के राजा सेनजित

हुअ कृशाश्व पुहमीस को सुअन सेनजित नाउं ।
अमरावती निदरत पुर जा रजधानी गाउं ॥५४॥

सेनजित के राजा जुवनास्व दूसरे

नृपत्ति सेनजित को सुअनु हुव जुवनासु महीपु।
नैंकन ऊंनौ बापतैं ज्यौं दीपक तैं दीपु ॥५५॥

जुवनासु के राजा मांधाता ते दहिनैं ओर पेट फारि निकरे तिनको उत्पत्ति

भयौ न सुद्ध जुवनासु कैं करयो बहुत दिन भोगु।
जु कछु जहां होनी तहां तैसोइ उपजतु जोगु ॥५६॥
तनय हेत जुवनासु गयउ तापस समाज महँ।
दुषित चित्त नृप जांनि अनुग्रह करयौ रिषिन तहँ॥
पुत्रहेत वासव निमित्ति तिन मषु आरंभिय।
अन जानत अवनीपु पुंसवन नीरु पांन किय॥
दलपति अमोघ मुनि मंत्र बल, उदरु भेदि वालकु भयौ।
जा जसु प्रताप पूरन पुहमि, सु सत्त सिंधु पाहर गयौ ॥५७॥

दोहा

इंद्र आपनी अंगुरिया दई पियन कहँ ताहि।
नांउ मांनधाता धरयौ जगत सराहतु जाहि ॥५८॥

मानधाता के तीन पुत्र जेठे पुरकुश लहुरे अंबरीक मुचकुंद

सोरठा

तीन महा वलवांन भए मांनधाता तनय।
नृप पुरकुश सुजांन अंबरीप मुचुकुंद पुनि ॥५९॥

पुरुकुश के राजा त्रसदस्व

हुव पुरुकुश महीप सुतु श्रीत्रसदस्व नरेस।
जा जसु वरनत सहस मुष पारु न पायो सेस ॥६०॥

त्रसदस्व के राजा अनरन्य

श्री त्रसदस्व महीप को सुत अनरन्य नरींदु।
विमल वंस यौ विमल भो ज्यौं पयोधि तें इंदु ॥६१॥

अनरन्य के राजा हर्जस्व दूसरो

अवनिपाल अनरन्य कौ हुव हर्जसु नरदेउ।
फल उपजत या मंत्र कौ लह्यो जगत महँ भेउ ॥६२॥

हर्यस्व के राजा प्रवन

हुव हर्यस्व नरेस कौ प्रवन नाम छितिपालु।
या प्रताप वर प्रजनि कहँ नेकन व्याप्यौ कालु ॥६३॥

प्रवन के राजा त्रिबधन

भयौ त्रिबधन तासु सुतु जगत सिरोमनि साधु।
सत्यव्रतु सुतु परिहर्यौ जिन निरपत अपराधु ॥६४॥

त्रिबधन के राजा सत्यव्रतु जे त्रिसंकु कहाए तिनकी कथा

पाधरी छंद

इक विप्र सुता परिनयन गाह जबहरी सत्यव्रतु जिय उछाँह ॥६५॥
इहबात सुनी जब तात आपु उपज्यौ उर अंतर महा तापु ॥६६॥
तिन तज्यौ पूत निज धर्म हेत बरज्यौ बसिष्टानिकासि देत ॥६७॥
पातमहँ बसिष्ट की एक गाइ निजुप्यान ब्रत हनी जाइ ॥६८॥
यह भयौ पुहमि पूरन कलंकु तब कह्यौ सबनि कहँ त्रिसंकु ॥६९॥
तिन धर्यौ गाधर्सो सुत सनेहु ता मम नख्यौ सुरपुर सदेहु ॥७०॥
पुनि दयौ तहाँ देवनि गिराइ तब गाधि सुअन राख्यौ थमाइ ॥७१॥

त्रिसंकु के राजा हरिश्चंद

सोरठा

भयोभूप हरिचंदु सत्यव्रतु नंदन नवलु।
सह्यौ दुसह दुखदंदु जिनन तज्यौ सतु आपनो ॥७२॥

हरिश्चंद के राजा रोहित

रोहित नाम नरिंदु जगत विदित हरिचंद सुतु।
जा जसु पूरन इंदु रोहितास मिस जगमगतु ॥७३॥

रोहित के राजा हरित

मूरतिवत निसंकु हरितनाम रोहित सुअनु।
पुहमि पुरंदर एक नरगुननि मानहुँ रच्यौ ॥७४॥

हरित के राजा चंपु जिनकी चंपा नगरी

सिदि विदात सब भूप चंप नाम हुअ हरित सुतु।
चंपा पुरी अनूप बसुद सौमि सम जिन रची ॥७५॥

चंप के राजा विजय

विजय सरीखौ धामु चंप तनय राजा निजन ।

रिपुजीत यह नामु भुअ मंडलह प्रसिद्ध हुअ ॥७६॥

विजय के राजा रुरुक

सदा सुकृत पथनेहु करयौ रुरुक कोमल धनी ।

मानहु धर्म सदेहु विजय भूप उर ऊतरयौ ॥७७॥

रुरुक के राजा वृक

व्रिक नाम नरनाहु रुरुक नंदु रवि वंस मनि ।

सुनत महाबल बाहु धरत अजा जिमि दुअन जिहि ॥७८॥

व्रिक के राजा बाहुक

छप्पै छंद

दुअननि छीन्यौ देसु विकल बाहुक नरेस हुअ ।

निज कलंकु जिय जानि देस छंडिय अरण्य भुअ ॥

पतिव्रता त्रिय तासु संग किन्नौ प्रसन मन ।

जिहि संगर्भ त्रिय तहां गरलु दीन्यौ सपत्निगन ॥

तह गमन समय बाहुक भयौ उर्वआसु संग्रह करयौ ।

गर सहित गिरयो जहिंन जनमु सगर नामु तहिंन भरयौ ॥७९॥

बाहुक के राजा सगर तिनके चरित्र वर्णन

कुंडलिया छंद

उर्व मुनीसुर सगर कहँ, विद्या सकल पढाइ ।

शस्त्रु अगनि दैवतु दयौ, दुअन जिते जिहि जाइ ॥

दुअनि जिते जिहि जाइ बापु कौ बैरन राख्यौ ।

नागलोक नरलोक अमरलोकनि जस भाख्यौ ॥

जसु भाख्यो दलपति प्रतापु प्रगट्योजु तिहूंपुर ।

रण मझहँ जय सदा करयौ वर उर्व मुनीसुर ॥८०॥

सगर की दुइ स्त्री

सोरठा

सुमति केसरी नाम सगर वरीवर नारि विचि ।

रूपवंत गुनधामु सुर सुंदरी सिंहाहि जिहि ॥८१॥

उर्पं दयो बरदानु एकहि साठहजार सुत।
सूर सिरोमनि जानु बस धरा रघु एक कहँ ॥८२॥

छंद पाधरी

पद्मिनी जन्यो सुत एकु चारु कहँ असमानु हुअ गुन उदारु ॥८३॥
तहा सुमति सरीनु मरिया एक जहाँ तिल प्रमान बालक अनेक ॥८४॥
तनु एकु एकु घृत कुंभ माइ बल्वत के धाइनि बढ़ाइ ॥८५॥

सागर राजा जिम आरम्यो तिनकी कथा

छप्पै

सगर महीपति अश्वमेधु आरम पस्यो तहँ।
गुप्त भेष वासवहँ तुरगमु हस्यो आइ जहँ ॥
ता कारन सुअ खनत सुतन कीन्यो रतनाकरु।
पहँ देखत उत्तर दिसत देख्यो तापसु बरु ॥
मार्यौ कहत निज कर्म यह कस्यो एकु अपराधु अब।
रिपराज कोप पावक प्रबल सु भए भसम तहाँहँ सब ॥८६॥

सगर के राजा असमंजस ते विरक्त भए

असमंजस केसिनी सुत प्रथम मान सुधि पाइ।
घर छाड्यो पर्थं तनु असुमानु उपजाइ ॥८७॥

असमंजस के राजा असमान

असमंजसु नदनु असमानु हुअ परम धुरंधर महाजानु ॥८८॥
तिन कस्यो कपिल मुनि तुष्ट आइ नृप जानु सिवाहौ तुरग ल्याइ ॥८९॥

असमान के राजा दिलीप दिलीप के भगीरथ

हुअ असमान नदनु दिलीप सुत ताव भगीरथ कुल प्रदीप ॥९०॥

भगीरथ के चरित्र वर्नन

कुंडलिया छंद

भूप भगीरथ परम तपु कस्यो जगत हित आइ।
सगर वंश तिन उधर्यो देव तरंगिनि ल्याइ ॥
देव तरंगिनि ल्याइ परम कीरति छिति छाई।
अजहु सगुतन देत गावै त्रिसौ मनलाइ ॥
सो परम दृग मन कनायो त्रिति असुर सगु।
भुप प्रति हर्यांस भयो भूअ सब भगीरथु ॥९१॥

भगीरथ की तपस्या तें गंगा आकास ते टूटी तिनको वर्णनु

घनाछरी छंद

टलपति किधौं सुकृति की मुतिछरा छूटि परयौ,

किधौं सिपरु गिरीस गिरिनीक कौ।

किधौं टल्यौ परम पुरुष द्रव रूप,

किधौं सोपानु अनूप गरुडासन के ओक कौ।

किधौं जमपुरी तैं पटायौ जगदीस,

जग जीवनुके जीवनु सगर सुथोककौ।

सुरपथ धस्यौ सुरसरीकौ प्रवाहु,

भगीरथकौ कमायौ रसायन तिहूं लोककौ ॥६२॥

भगीरथ के राजा श्रुत

भूप भगीरथ को भयो सुत समथु सब भांति।
जाकी कीरत जगमगी जो हंसन की पांति ॥६३॥

श्रुति के राजा नाभु नामु

सुत महीप जायौ सुअनु सूर सिरोमणि नाभु।
जा डर रिपु रनवास महँ तज्यौ गाभिननि गाभु ॥६४॥

नाभु के राजा सिंधुदीपु

नाभु सुअन तिहूं पुर प्रगट सिंधुदीपु नरेसु।
जा प्रताप तें पातकनि लह्यौ न पुहमि प्रवेस ॥६५॥

सिंधुदीप के राजा अयुताजित

सिंधुद्वीपु नरेसु सुतु अयुताजुत अवनीप।
भुजबल जिन निज बस किये प्रथित अठारह द्वीप ॥९६॥

अयुताजित के राजा रितुपर्ण

अयुताजित अवनीप सुत भए भूप रितुपर्ण।
जिन भूतल निज धर्म किय राख्ये चारौं वर्ण ॥९७॥

रितुपर्ण के राजा सुदास सुदास के मित्रसह

भयौ भूप रितुपर्ण को सुत समरथ सुदासु।
ता सुत राजा मित्रसहु मंदयनी तिय जासु ॥६८॥

मित्रसह के राजा अस्मक

भयौ मित्रसहको सुअनु अस्मकु नृप जयधमु।
जा जसु अपनैं लोक महं गावत सक्र स्वयंभु ॥९९॥

अस्मक के मूलक राजा

अस्मक सुतु मूलक भयौ भूपति परम प्रचंड।
सप्तद्वीप नव खंड जिंहि लयौ नृपनि सौं दंड ॥१००॥

मूलक के राजा एलविलु एलविलु के विस्वसह

मूलक नाम नरेंदि पै भए एलविलु भूप।
ता सुत राजा विस्वसह कामदेव सम रूप ॥१॥

विस्वसह के राजा दिलीप

भयो विस्वसह भूप कौ सुत दिलीप नरनाहु।
तिन पायो खट्वांगपदु प्रभनि दयौ उत साहु ॥२॥

दिलीप के राजा रघु

प्रगट्यो नृपति दिलीपकौ रघु छितीस भयवंसु।
जिहितैं परम प्रसिद्ध हुभ तिहूँ लोक रघुवंसु ॥३॥

रघु चरित्र वर्णन

नृपति दिलीप रघु करत हैं सतमख पूरन हेत।
तुरग छोडि रच्छकु कर्यो बहुतक सेन समेत ॥४॥
सतमख पदु जब आपनो जात लख्यौ सुरराइ।
पारज विपन विचार तब तुरग हर्यो हर आइ ॥५॥

राजा दिलीपको घोरो इंद्र हर्यौ तब इंद्रसौं रघुसौं जुद्ध भयो तहां की कथा
पाधरी छंद

जहँ हर्यौ तुरगमु तनु दुराइ अटकर्यौ इंद्र तहां रघु जाइ ॥६॥
तब कह्यौ कुँवर मघवानु टेरि यह तुरग हमारो देहु फेरि ॥७॥
तुम परम जाति महिमा समुद्र पर विघनु करत कत होत छुद्र ॥८॥
तारं दयौ इंद्र उत्तर विचारि तुम हरत सुजस तिन हरहिं रारि ॥९॥
सत मख चाहत प्रभु नियाहि बिनु तुरग जाहु मत करत पाहि ॥१०॥

जब इंद्र वचन यह पर्यौ कांन तब कर्यौ कोपु रघु परम जानि ॥११॥
रघु अजित तुरग पायौ न जाहि घर जाहि कहा हम गुरु दिखाहिं ॥१२॥
तब पर्यौ परस्पर जुद्ध जोर उतर्यौ सुर बल रघु दुसह घोर ॥१३॥
सुरराज तज्यौ आयुध सरोष उर लाग्यौ कुंवर दाहिने कोष ॥१४॥
उठ परम पीर क्षन मह गवाइ सनमुखि धायौ उठि रघु रिसाइ ॥१५॥
छांडे सायक रघु धनुषु तानि तब तुष्ट भयौ मन वज्रपानि ॥१६॥
तब कह्यौ इंद्र रघु कहँ बुलाइ तुम परम वीर निर्दैन नाइ ॥१७॥
इकु तुरगु छोडि वरदानु लेहु सतमख फल पूरन पितहिं देहु ॥१८॥
जब कर्यौ विनय पूरन सुरेस तब चल्यौ कुंवर आपने देस ॥१९॥
सतमख फल पायौ दिलीप जसु भयौ जगत दस आठ दीप ॥२०॥
बिनु तुरग समापत कियौ जागु पाछै नृप उर उपज्यौ विरागु ॥२१॥
निज राज दयौ रघु कहँ बुलाइ नृप आप कर्यौ वनवास जाइ ॥२२॥
पितु दत्त राज रघु कुंवर पाइ किय सुखि प्रजा रंजनु बनाइ ॥२३॥

रघुकौ दिग्विजय वर्णनु

पाधरी छंद

कछु दिननि मांगि दिग्विजय हेत रघु किय प्रयांन हुलु दल समेत ॥२४॥
जयधुरी प्रथम पूरबह जाय दुर्जन पयोध पारहन धाइ ॥२५॥
जीत्यौ दक्षिणेसुर निजम तेज जह होत सहस कर मंद तेज ॥२६॥
बहुर्यौ पछांह रघु सिंधुपार भुज जोर जवन दल किय संघार ॥२७॥
पाछे नरेस उत्तरह आइ हिमगिरि प्रतापु तीछन जनाइ ॥२८॥
बस किये सकल पर्वत नरेस बहुर्यौ आए नृप औध देस ॥२९॥
लै लै इहि विधि नृप दंड भागु आरंभ कर्यौ विस्व जित जागु ॥३०॥
तहां दयौ सकल वसु द्विजनि दान मृदुभाजन विनु राख्यौ न आन ॥३१॥
वरतंतु सिष्यतिहि समय आइ चउदह करोर सुवरन जनाइ ॥३२॥
जाच्यौ नरेस गुरु अर्थ काज सनमान कर्यौ राजाधिराज ॥३३॥
सोचन लागे तिय रघु प्रवीन दिग्विजय भई भुअ वित्त हीन ॥३४॥
बिनु दंड बच्यौ अलकां कुबेरु चतुरंग साज तहँ करूं घेरु ॥३५॥
जब भयौ भूप उर यह विचार तब कर्यौ धनद पूरन भंडार ॥३६॥

बरततु सिष्य कहँ नृप बुलाइ उह साजु दयौ आदर बढ़ाइ ॥३७॥
बरतउ सिष्य उह दान लेत दीनी असीस सुत जनम हेत ॥३८॥

रघु के राजा अज

दोहा

रघु छितीस उर औतर्यौ राजा अज गुण सींव ।
यचन ॥ बरननि कुल जगत महँ नृपति नवाई गीव ॥३६॥

अज के राजा दसरथ

दसरथु ता उर औतर्यौ सब बिधि गुननि अनूप ।
पाछें तिय बियोग बस तजी देह अज भूप ॥४०॥

दसरथ महाराजा भयौ

दसरथ नाम नरिंद की महिमा कही न जाइ ।
जहां प्रगट्यौ पूरन पुरुष ब्रह्म चतुर्विधि आइ ॥४१॥
बरत ताकौ सुरनि महँ जिहि सुरपुर पगु धारि ।
सुभवर समर सहाइ ह्वै हने अमित अमरारि ॥४२॥
जा जसु तरवरु जगमगतु अजौं जगत अभिरामु ।
कविजन बचन बिहंग लौं लहत जहां बिश्रामु ॥४३॥

दसरथ के तीन स्त्री भई कौसिल्या कैकई सुमित्रा

दसरथ नृप नृप नंदनी ब्याही सुदिन बिचारि ।
कौसिल्या अरु केकई सुभग सुमित्रा नारि ॥४४॥

राजा दसरथ एकदिन सिकार गए तहां धोखे एक तपस्वी मार्यौ
तिनकै पिता माता आंधी-अंधा दसरथ कहँ सराप दियौ कि तुम पुत्र सोककैं
वृद्धावस्था देह छांड्हौ तहांकी कथा

एक समय दसरथ नृपति दल चतुरंग समेत ।
कर्यौ पयानौ महाबन बिहरन मृगया हेत ॥४५॥

दसरथ कौ सिकार वर्णन

कवित्त

हौं न हरिन हिय सौं रन हरिननैंनी मदगेरी सौं बर बारन बिसारे हैं ।
बारन बार दीरघ बिचारे बनितानिके सिंहासिंन छाड़ेहा भमर गिधारे हैं ॥

दलपति औरौं अवरोधि की निकाइ जहां   जहां अवलोकी तहां लाइकन टारे हैं।
खेलत सिकार महाराना दसरथराज   पटके विरोध मृगराज गन मारे हैं ॥४६॥

दोहा

मृगया खेलत महाप्रभु   तमसां नदी समीप।
अन जानत जल पोष मुनि   तपा हन्यौ अवनीप ॥४७॥
अंधी अंधा मातु पितु   मगजोवत जा ठौर। ॥१६॥
तहां पधारे नीर लै   दसरथ नृप सिर मौर ॥४८॥
हाथ जोर जापन फस्यौ   दोसन वेदन आपु।
पुत्र सोक ता मन दयौ   नृप कहँ दुहु न सापु ॥४९॥
पुत्र सोक सों विरहदं   प्रान हमारे जात।
सुत वियोग तुम तनु तजहु   त्यों तवनहे विहात ॥५०॥

पाधरी छंद

इहि भांति भयौ तापस्रु सरापु   पाछैं आये नृप नगर आपु ॥५१॥

बिनु पुत्र भए राजा दसरथ नवहजार बरस राजु कियौ
पाछैं पुत्रके लियें जग्य आरंभ्यो तब दसरथके घर रामचंद्र अवतार लियौ
रावन के मारिवे कहँ तहांकी कथा

छंद पाधरी

नो सहस वरष बिनु सुत नरेस   भोगियौ राज तजि औधिदेस ॥५२॥
विनु तनय बढ्यौ नृप उर विरागु   तब गन्यौ आपनौं हीन भागु ॥५३॥

घनाछरी छंद

भावत न हाथी हय हाटक हरिननैंनी   हार हीर भूषन भंडार भोगुभौन कौ।
दलपति दिन दिन बीतत तरुन वैस   छिन-छिन छूटत भरोसो सुत होन को॥
महापति मुकुट महीप दसरथ मनु   डावाडोल डोलतु पतौआ जैसें पौनकौ।
मलेबिनु राज निजु लागतु न नीकौ   ऐसे फीकौ जैसैंबनु बिहूनौ एक लौनकौ ॥५४॥
इहि बीच दसाननु दुसह तेज   दिग विजय करी पूरन जेज ॥५५॥
दिग जीति तहां द्दर पुर पधारि   आधीन किये सब दानवारि ॥५६॥
तब बढ्यौ अमरपुर दुपु अपारु   तब कह्यौ सकल देवन विचारि ॥५७॥

बिनु दीनबंधु करुना निधान इहि समय आपनौं कौंन आन ॥५८॥
सब देव छीरनिधि तीर आइ जगदीस, सरन ताकौ अनाइ ॥५६॥

रावन के त्रास देवता सब छीर समुद्र सेषसाई परमेस्वर के सरण गए
तहां को दोहा

जिही देवगनि छीरनिधि पहुच्यौ श्रीपति पास ।
सयन साई तहा जागे जगत निवास ॥६०॥

वचन

कवित्त

[illegible] सीति दस कधर पधारि नाक लोगनितैं निपिल निकारि देव दयौ हैं।
दलपति आपनैं आपनैं अधिकार छोटे छीनबल बापुरे मलीन मन भए हैं॥
सबनि समेत विधि वासव विचार तब वारिनिधि श्रीपति समीप ऐसैं गए हैं।
जैसैं मग माहैं अनेसैं मेस घने घाम घनौरुपु ताक्त तरनि तेज तए हैं॥६१॥

अमर निवेद रिचान सौं बहु विधि कर्यौ बखानु ।
कृपा कटाछन सौं चिते तब बोल्यौ भगवानु ॥६२॥

कुंडलिया छंद
भगवानुवाच

जैसैं हरिनाकुस प्रबलु तप्यौ मनै सु जनाइ।
ऐसैं अब रावन तपउ कमलासनु बर पाइ ॥६३॥
कमलासन बर पाइ तेज तिहु लोकन पायो।
मेरे सोयत सब निरपि देवनि दुपु पायौ॥
दसरथ नदु कहाइ हनौ रिपु राकस ऐसैं।
है नृसिंह वपु हर्यौ प्रबलु हरिनाकुस जैसैं॥६४॥
है अंतर हित महा प्रभु दे सब सुरनि जनाउ।
नप दसरथ गहैं आपनौं प्रगट्यौ परम प्रभाउ ॥ ५॥

दसरथ राजा कहैं पुत्र के लीये तह रिष्यश्रृंगि रिषीस्वर जग्य करायो
तहां जग्यके अग्निकुंडते एकु पहर निकस्यो षीरलोन तह षीर
दसरथ कौं दीनो दसरथ अपनी स्त्रीन कहैं बांटदीनी तब तीन्यौं रानी
गर्भवती भईं तहां की कथा

रिषिश्रृंगि रिषि आइ तहां आरम्यो ग्यु जागु।
नृप सुत कारन मंत्र सुन दे दे देवनि भागु ॥६६॥

पावरी छंद

जहां करत जागु दसरथनंदु सब रिषिन सहत कुल कुमद इंदु ॥६७॥

तहां दई दछिना विविध भांति अगनित सुबरन गज तुरगपांति ॥६८॥

दोहा

अग्निकुंड महँ एकु तहां प्रगट्यौ पुरुष उदारु।

कनकथारु पायस भर्यौ ल्यौं दुहुँ कर चारु ॥६९॥

तिहि पुरुष प्रथम चरु गुन जनाइ उठ अनु दयौ नृपकौं दुलार ॥७०॥

नृप लयौ अनु आनंद पाय उठ चरु बांट्यौ रनिवास जाय ॥७१॥

दोहा

पटरानी कौसल सुता प्रिया केकई नारि।

दयौ दुहुंन कहँ भागु सम दसरथ नृपति विचारि ॥७२॥

कौसल्या अरु केकई दुहुन अर्द्ध निजभागु।

सौति सुमित्रा कहँ दयौ सौरत निज अनुरागु ॥७३॥

गर्भवती तीन्यौ भई तेजोमय चरु पाइ।

कह्यौ अगाउ भूपसौं सुप पिय रई जनाइ ॥७४॥

च्यारि भांति व्है सबनि उर बस्यौ जगत गुरु एकु।

जैसें सलिल तरंग महँ हिमकर होत अनेकु ॥७५॥

रितु बसंतु मधुमास महँ तिथि नवमी बुधुवारु।

कौसल्या उर औतर्यौ आपु जगत करतारु ॥७६॥

रांम जन्म कौ उत्सव वर्णन

श्रौवनि सुनत रामलला को जनमु कहुं गाइ-गाइ गूंगौ अगाऊ बहरातु है।

आंधरौ देषन तमासौ उमहतु बिनु पाइनहू पांगुरौ पपेरुलौं उडातु है॥

दलपति लैले दानु मांगनौं देतु बढ्यौ इहालौं हुलासु कोहु फूल्यौ ना समातु हैं।

पह्यौ न परत पुरवासिन के लोगिनकौ गातकौ आनंद किधौं आनंदकौ गातु हैं ॥७७॥

दोहा

नृप दसरथ देष्यो कुँवरु सब अंगनि अभिरांमु।

बीजु जगत मंगलिनि कौ धर्यौ रामु यह नामु ॥७८॥

ऐकई उर ओतस्यौ भरथ परम गभीर।
जने सुमित्र अमल सुत लषन सत्रुघन बीर ॥७९॥

पाधरी छंद

सुत जनम यद्यौ अनदु अपार नृप कर्‍यौ वेद मत लोक चार ॥८०॥
तहाँ दयौ द्विजनि कौं अमित दानु अभिलापन पूर्‍यौ पा समानु ॥८१॥
चारन यचक बधि मागनि समेत सब मन माइ बकसीस लेत ॥८२॥

दोहा

मालवेस चार्‍यौं सुभन विहरत सुदर गात।
रूपसिंधु नैननि निरखि नरनारी न अघात ॥८३॥
चारिहू मह परसपर यद्यपि प्रेम नु भगु।
तदपि राघव लषन सगु भरथ सत्रुघन सगु ॥८४॥

राम की बाल दसा वर्णनु

पैठल से कठुला कमनीय कहूला लटैं लटकैं मुष ऊपरि।
ओठनि बीच दुरी दतियां दमकैं कजरा अखियानि दुहू पर॥
मुसिक्यानि महामुनि मानसचोर सरोज मईगति आंगन भूपर।
वारत कोटि मनोजनि माइ दलपथि श्रीरघुनदन जू पर ॥८५॥
चारु चितौनि हरै हियरा अखियानि सोहोइ परै जल जातनि।
नैंसु कुली अघरानि के बीच लसैं दतियां विहसैं सुनि बातनि॥
दलपति राघव रूप लषे उकठे तरु होंनसो फर पातनि।
मोद महोदधि रामलला मुष चूमति माइ समाइन गातनि ॥८६॥

घनाछरी छंद

ताक तिलकु चक चौंधत चीकोंचार महु कोदबिधुरे कुटिल कच भाल हैं।
पीकपागे अघर परम कमनीय करत ललित कपोल लोल लोचन विसाल हैं॥
दलपति कवि रघुपति मुष चद और चितवन चकित चकोर चष जाल हैं।
सांवरे सलोनें अग मैंमनि पै सग सग औधपौरि पैजत फिरत रामलाल हैं ॥८७॥
तेसैंइ ललित लोल कुडल लसत कान रुचिर कपोलनि दमत मुष मौर हैं।
वारिध मरण तर चीकुरो चारु दलपति लोचन लगावि दौरि दौरि हैं॥
पगिया तनक बांधे ताक पिआरी कांधे ताक घनक सोधे लेत चितचोर हैं।
तनक तनक लघु मैंमनि के सग सोम औधपौरि पैलफिरत चककोरि हैं ॥८८॥

विश्वामित्र रिपीश्वर के जग्य महँ राक्षस उपद्रह करही तिहिके लिये
विश्वामित्र रामचंद्र कों मागन आए तब दसरथ राम लक्ष्मण दुहनको
विश्वामित्र के संग विदा कीनो तहां को कथा

दोहा

एक दिवस दसरथ जहा बैठे सभा समाज ।
तहा पधारे गाध सुत ग्यांन सिंधु रिपिराज ॥८६॥ १२६॥
व्है आगें दसरथ नृपति मन वच किये प्रनाम ।
विनय सहित रिपिराज कहँ पधरायो निज धांम ॥९०॥

पाधरी छंद

बैठारि रतन आसन अनूप पूछी वहुविधि कुसलात भूप ॥९१॥
तब वचन कह्यौ कौसिक मुनिंद सब ठौर कुसल कौसल नरिंद ॥९२॥
कुसलातन केवल जग्य बीच जहां करत विघन क्रव्यादि नीच ॥९३॥
तहि हेत राम लक्ष्मनहि देहु रघुवंस जोग जसु जगत लेहु ॥९४॥
यह सुनत विकल व्है गयौ गातु जिय सोचनि ज्वाबु न दयौ जातु ॥९५॥

दोहा

देत सोक अनदेत सुत परम सापु कुल होइ ।
रह चिन्ता चौगान महि भयौ भूप मन गोइ ॥९६॥
तब वसिष्ट बोल्यौ वचनुं रिषि प्रभाउ समझाइ ।
राम लषण दोऊ कुंवर देहु सोच बिसराइ ॥९७॥
गुरु वचनि दसरथ नृपति धर्यौ धीरु उर मांहि ।
कौसिक कहँ सौंपे कुवँर राम लषण गहि बांहि ॥९८॥

राम लषण विश्वामित्र के संग जाइ जे चरित्र कीने तिनको वर्णनुं

सवैया

पितु आइस कौसिक संग पधारि उधारि सिला सुरलोक पठाई ।
ताडका राक्स की रमनी सु हणी जग जीवनि की सुपदाई ॥
मषहेत निसाचर गोतु हन्यौं दिज देवनि की विपदा विनसाई ।
तोर्यौ पिनाक सरासनु राम स्वयंवर श्रीय वधू परनाई ॥९९॥

तोरयो धनुष रघुवर मनि सीय वधू परनाइ।
पहुरत रोक्यौ राम कहँ भृगुनाइक मग आइ ॥२००॥

पाघरी छंद

अवलोकत रांम प्रताप धांम बोल्यौ सकोप भारगव रांम ॥१॥

दोहा

फरसराम उवाच

सुनत रह्यौ हुम तिहू पुर बीरन चापु चढाइ।
धर्यौ बली मेरौ धनुषु म मुझ सकहु न्वाइ ॥२॥

सोरठा

कम्पि भारगव चापु रामचढायौ बाहुनर।
हन्यो मुभड परतापु और तीसरी स्वर्गगति ॥३॥

पाघरी छंद

इहि भांति दस्यौ भारगव दापु पहुच्यौ आप निज नगर आपु ॥४॥

राम कहँ दसरथ राज देंण लागे तहा केकई बनवास दिवायौ तहां की कथा

दोहा

निरखि आपनी विरधइ दसरथ बस्यौ विचारु।
सबगुन लाइक राम कहँ सौंपन भूतल भारु ॥५॥
केकई प्रतिकूल कहँ सौति दाहु उपजाइ।
द्वै बर मागे पाछिले दसरथ कहँ समुझाइ ॥६॥
लषन सहित चौदह बरष राम करहु बनबासु।
भरथ सनुघन दुहुन कौं सौंपहु औधि निवासु ॥७॥

बनवर्णन कौ सवैय्या

केकई कूर कुमन्त्र ठयो पियकानन काननबास जनाये।
राजहु काजु अकाजनु भा यौं प्रियाबस प्रीतम पूत पठाये ॥
श्रीरघुनाथ सिधारतहीं प्रति धामनि छोटे बडे विलपाये।
राम की रूप निकाई पदे पुर वासिनहू मन सीयल गाये ॥८॥

सोरठा

सीता सहज सनेह राम संग काननि चली ।
संपति मनहु सदेह गुननि बंधी पाछें लगी ॥९॥

दोहा

बिछुरत राम वियोग वस प्रगट्यो तापस आपु ।
गौन कर्‍यो सुर औक कहं सोकवंत नृप आपु ॥१०॥
राम गौंनु कानन कर्‍यो दसरथ तज्यो सरीरु ।
कै केयर्ते आन्यो प्रजनि औध भरत वरवीरु ॥११॥

सोरठा

लख्यौ भ्रात बिनु भौंनु औध पधारत जहँ ।
कर्‍यौ ततछन गौंनु लेन देत रघुनाथ पहँ ॥१२॥
चित्रकूट वन जाइ राम चरण परसे भरथ ।
दसरथ सोकु सुनाई राज निवेदन कर्‍यौ जहँ ॥१३॥
तात मरनु श्रौननि सुनत बहुविधि कर्‍यौ बिलापु ।
धीर चित्त रघुवीर तब बचन कह्यौ यह आपु ॥१४॥
तजी देह जिहि नेह बस मेरौ होत वियोगु ।
ता पितु अग्यान जौं भलौ कहैं क्यों लोगु ॥१५॥
कर्‍यौ जतन बहुविधि भरत धर्‍यौ न उर रघुराज ।
ह्वै निरास तब पादुका मागी पूजन काज ॥१६॥
भरतहि औधि पठाइ तहा सीना लषन समेत ।
कर्‍यौ गौंनु रघुवंस मनि दंडक काननि हेत ॥१७॥

बनवास चरित्र वर्णनुं

छंद पाधरी

मगजात एकु राकस विराधु तिहि डहुन महि चीय साधु ॥१८॥
तब दुहुन वीर राकसु प्रचंड वर बान कर्‍यौ तनु खंड खंड ॥१९॥
तहा कुंभ जनम उपदेस पाइ थिर पंचवटी थिति करी जाइ ॥२०॥

दोहा

एक दिवस रांवण सुसा सूपनषा ढिग आइ ।
सुरत हेत रघुनाथ पहँ जाच्यौ रूप बनाइ ॥२१॥

सुप नपहि ऊतर दयौ तब रघुनाथु विचारि।
मनसा वाचा कर्मना हौं न रमतु पर नारि ॥२२॥
लघु भैया मेरो इहां संग रहत वन वास।
पूरन करन मनोरथहि तू पधारु ता पास ॥२३॥

पाधरी छंद

यह वचनु कहत रघुकुल प्रदीप गइ गई तहां लछमण समीप ॥२४॥
आदरी न जब लछमण प्रवीन तबभइ दुहु दिसमान हीन ॥२५॥
आई बहुर्यो रघुनाथ पास तब हसी जानुकी मृदुल हास ॥२६॥

दोहा

हसत सीय तलछन तहां सुपनषा सरमाइ।
ढहे सकोप डाटण लगी राकस रूप दिपाइ॥
लछमण करी विरूपता तामुष मध्य न तीन।
मानहु राकसनु किसिरी भई नासिका हीन ॥२७॥

छंद पाधरी

तब सुपनषा निज भ्रात जाइ दुख कह्यौ सबहि मधुन सुनाइ ॥२८॥
तब सकल निसाचर दुसह तेज रघुकुल प्रदीप पर करी रैज ॥२९॥

दोहा

परदूषन त्रिसरादि सब राकस सेन अपार।
राम अकेले समर महँ किय सकल संघार ॥३०॥

सूर्पनषा रावन पास पुकारी रावन सीता हरनु कर्यौ तहांकी कथा

सुरपनषा मुष बंधु बधु सुन्यो दसानन बीर।
मृग सरूप राकस तहां पठायो हेम सरीर ॥३१॥

सोरठो

हेम कुरंग साथ गए पकुवि रघुनाथ जब।
ता औसर दससाथ हरी जनक तनया तहा ॥३२॥

दोहा

आइ सराजय सीय बिनु रच्यौ पर्णमय गेहु।
बिरह बिथ मह मगन भए गयो तलछन देहु ॥३३॥

विरह विकल व्है चहुं दिसि हेरत सीता वांम ।
सर सरितानि लतानि कहैं पूछत राघव रांम ॥३४॥
सिय हेरत रघुवर दुहुं लख्यौ जटाइ विहंगु ।
पथु रोकत रावन कर्यौ प्रान सेष वपु भंगु ॥३५॥
सीय हरी दससाथ यह वचन विहंगु सुनाइ ।
आपु गौंनुं सुरपुर कर्यौ रांम रांम रटलाइ ॥३६॥
छूटत देह जटाइकी कर्यौ रांम बहु सोकु ।
मनहु तात दसरथ नृपति आजु तज्यौ भुअ लोकु ॥३७॥
क्रिपासिंधु प्रभु दूसरो रांम समांन न आंनुं ।
जिहि विहंगुहूं कहँकर्यौ कर्न तिलोदक दांनु ॥३८॥

छंद पाधरी

बन मिल्यौ एक राकुस कबंधु वह हन्यौ रांम जग दीनबंधु ॥३९॥
व्है साप हीन तब दिव्य रूप तिहि कह्यौ इहां सुग्रीव भूप ॥४०॥
यह वचनु सुनतु रघुनाथ आप तब कर्यौ कपीसुर संग मिलापु ॥४१॥

दोहा

स्त्री विरही सुग्रीव तहँ बिनु सीता रघुराइ ।
एक बिथा बाढ्यौ दुहुन प्रेम परसपर आइ ॥४२॥

छंद पाधरी

सुग्रीव कह्यौ निज सुनन जाइ दारा धनु वाली लयौ छुड़ाइ ॥४३॥
तुम हनहुं बालि रघुवंस नाथ हम सीय सोधि कहँ होंहि साथ ॥४४॥
तब हन्यौ बालि रघुकुल प्रदीप सुग्रीव किये कपि कुल महीप ।४५॥
अनुचर पठाइ सिय सोध हेत संग चल्यौ कीसु सेना समेत ॥४६॥

दोहा

चहुं ओर हेरन सियहि वानर स्वामित काज ।
मनहुं आपने मनोरथ पठये श्री रघुराज ॥४७॥

छद पाधरी

हनुंमानि निकट संपाति आइ तिहि विहग दई सीता बताइ ४८॥

सीय सोध पाइ हनुमान धीर नाघ्यौ समुद्र गंभीर नीर ॥४६॥
हनुमान लंक पर लखी सीय चहु ओर दुसह क्रव्यादतीय ॥५०॥

दोहा

पौन सुआ परतीति कहँ तापनि तहा पधारि।
हेम मुद्रिका राम की दइ सीय करि डारि ॥५१॥

छंद पाधरी

रघुनाथ मुद्रिका सीय पाइ आनद न उर अतर समाइ ॥५२॥
सिय कह्यौ लखिन पवमान पूत तुम परम धीर रघुनाथ दूत ॥५३॥
रघुनाथ कुसल आनि सुनाइ दुख सिंधु मगन उद्धर्‌यौ आइ ॥५४॥
यह रतनु जाइ रघुनाथ हाथ दीबहु प्रतीत कहँ कीस साथ ॥५५॥
वह रतनु पाइ साखा मृगेस सचारु कर्‌यौ उपवन प्रवेस ॥५६॥
तहा तोरि अमित फल पात फूल दल मन्यौ सकल उपवनु समूल ॥५७॥
असानि निसाचर दल सघारि तहा कर्‌यौ गौनु रिपु नगर जारि ॥५८॥
पवमान पूत प्रभु निकट आइ परसे पुनीत रघुनाथ पाइ ॥५९॥
पहुचाइ रतन सीता सदेसु कपि हर्‌यौ रामु चिता कलेसु ॥६०॥
मानहु राम पूरन सनेह सिय बिरह दसा मानहु न देह ॥६१॥
धन सिंधु मगन रहे निज सरीर तब बचनु कह्यौ रघुबस बीर ॥६२॥

दोहा

या सुत कहँ पलटो नहीं बिन जगु लख्यौ टटोहि।
उपकारन पवमान सुत रिनी कर्‌यौ तुम मोहि ॥६३॥
सीय सोध सुनि औधपति साज सेन बड़ धीर।
दसकधर बध हेत प्रभु चले पयानिधि तीर ॥६४॥

राम यात्रा वर्णन

सवैया

खलमली कछपु उदग पन्दल मन्यौ तरनि न चल्यौ भुअ सचारु समीरकौ।
अमित पहार चरानि चकचूर धराधूरि उड़ै मैं पूरन प्रवाहु सिंधु नीरकौ ॥
दलपति दिग्गज दिसानि दहलत दहलत नभु धीरज छूटु महाधीर कौ।
बलदल बान नर सुभट गजगाज गाजि देख्यौ साजि सुजनु कटकु रघुबीर कौ ॥६५॥

दोहा

वानर चमू समेत तब श्री रघुवंस प्रदीप।
आपु प्रथम डेरा कर्‌यौ लवण समुद्र समीप ॥६६॥
सिंधु तीर रघुनाथ कहँ मिल्यौ बिभीषनु आइ।
दई निसाचर साहिबी परम प्रीत रघुराइ ॥६७॥

रघुनाथ को सील वर्णनं

सवैया

तात की बात क औध तजी बनजात कुमातके बोल बिसारे।
केवट हू सो मिताई ठइ करपोंछे बिहंगम गात दुपारे ॥
बैरी के बंधु हि राजु दयौइ बिरोध तहूं रिपु राकस तारे।
हृयांलनु सील पयोनिधि रामजु भील के भौननि आपु पधारे ॥६८॥

दोहा

सबनि बोलि पूछ्यौ प्रभनु जलधि हेत रघुवीर।
बल प्रगटत तब आपनौ सुग्रीवादिक भीर ॥६९॥

रघुनाथ समुद्र के लोने मंत्रु पूछ्यौ तव बड़े जोद्धा वानर आपनो आपनो बल्नु कहन लागे-प्रथम सुग्रीव के वचनु

सवैया

काल सम धाइनु निसाइ रघुराइ रिपु रावनु संघारिवे कौं मेरे मन रोचु हैं।
कहै दलपति सत जौजन सकल सिंधु रिपिसरि सेपिवे कौं नेंकहुं न सोचु हैं ॥
बीर मनि बालि बलवान के अनुज हम जांकी दापु दुअनु भयौ ससाइयोचु हैं।
बार बार तुंमसौं जनाइ न सकल कछु यातें प्रभु जानकीस रावरौ सकोचु हैं ॥७०॥

अंगद के वचन

बालि सुत हाथ कौ पिलौंना दसमाथु कीनो छोड़ गहिलंककौ गढोई अभिमानकैं।
साहिब सुजांन मनि नेंकन बिलंबु करौ कहतु पुकारिहौं सुनतु सबु कानु कैं ॥
जानुकीरवनि रघुराज सौं रजाइ पाइ बैरी बरूं मींडि मारौं नीर निधिपांनुकैं ॥७१॥

द्विविद के वचन

सेवकु सुग्रीव कौ द्विविदु सूर दारु नेंक बिरचौं तोरन रापिसकैं काहिकौ।
कहै दलपति देव दानव दरेरि मारौं रावनु रिझालौं राड रातिचरु आहिकौ ॥

धीर रघुबीर राय रोपर्यो करों समुद सेत नाघें सूमुके अगम जत थाहिको ।
जान मनि जानकीस रावरे प्रताप बर सोषों सरितेश करे पेरिबेकी पाहिकौ ॥७२॥

जामवत के वचन

श्राकें तुम साहिब साहाद सब ठौर ताकें सामुहे गनीमु कौनके गौर नारि कें ।
दल्पति प्रभु पाइकौ भरोसो करि मारों भरि रोप राहु रावनु पचारिकें ॥
धीर बिरदेतु तौ हौं रीछपति जामवत गाजें गहि एक बरमूलतें उपारिकें ।
जानकीरवन रामकी रजाइ पाइ भूरो करी भारसों जलधि जलु जारि कें ॥७३॥

नील के वचन

जानकीरवन पाइ परसि पुनीत बर रेंगिचर चपरि चलाऊ जम औषही ।
कहे दल्पति कर कठिन चपेट चोट मोदुदलि चोहनि चवाऊ रिपु थोकहीं ॥
तौ हौं नीलु आइसु निरपि निरसक तन एकपति रवनि हवाऊ पति सोकहीं ।
स्वास पौंन पूरन पयोधि पेल पातालकों भूमिकरों उरध उदधि ऊर लोकहीं ॥७४॥

हनुमान के वचन

कहौ तौ जलधि नांघि ल्याऊ जाइ जानकी कों रावरे प्रतापतें सकेगो समुहाइको ।
कहौ तो पहारनि सों पूरा पयोधि पाटि मींडौ राहु रावनु मरोंगु मनभाइको ॥
रावरी रजाइ तें दशाऊ दसमाथ पुर अैठीकरों ता पन कहाऊ सुतवाइको ।
पैनके करतु हूँ छितीस मनि जानकीस मेरें जिय परम भरोसो प्रभु पाइको ॥७५॥

लछमन के वचनु

आइस आस रहों चुपचाप कहा प्रभुपास महा हटु नाघों ।
जेर करौं रन रावनु राहु जहीकर कोपि सरासनु साधों ॥
एक दरेरि दलों निरसक कहो जितनी तितनी सब बाधों ।
नै सुकु राम रजाइसि पाइ पहारनि पूरि पयोनिधि बांधों ॥७६॥

रघुनाथ समुद्र के तीर तीनि दिन बसे बैठे रहे समुद से पैंडो मागिबे को बिनती करन लागे

रघुनाथ को बिनय

सवैया

जानकी हरनु दिय मात सकल तुम जानत हिनु न वरी बाहिरौ घरको ।
कहे दलपति दशरथकी निमारी प्रीति मन वच करत सहाऊ निसिचरको ॥

वार वार वार मांगत निहोरि मगु जानदेहु व्है है पुनि नातरु उपाऊ रिपिवरकौ।

आपनैं मजेज कत करत अनैसो अैमी सागर निवारि नांतौ सिगरौ नगरकौ ॥७७॥

परमेश्वर व्है के समुद्रसौं विनती करन लगे तहां कवि उक्ति

सवैया

जा पद पंकज लोचन वासन सोभत सेष रसातल पैंठे।

सेवत संभु समाधिक कैं कमलासन चित्त विसेश्वर जेंठे॥

जाहि जपै नर देव दलपति नाऊं लियैं अघ जात कठेठे।

ते प्रभु पूरन जानकीनाथ महा दसलों मगु मागत वैठे॥७८॥

जब समुद्र न मिल्यौ तब क्रोधुकै लषमण सौं रघुनाथ वचन कह्यौ तहांकी कथा

दोहा

नृपकुल कमल दिनेस लषि जलनिधि कुटिल सुभाऊ।

चितै लषन तन रोष मन वचन कह्यौ रघुराउ ॥७९॥

सवैया

बोलि मृदु बचन विनीत ज्यौं ज्यौं होत हम त्यौं त्यौं आपु उरध चलतु नभु चाहिहैं।

सगर सनेह सोपियतु न सकोचु मानि इहैं जिय जानि कानि पाछली निवाहिहैं॥

कहै दलपति आजु आपुनौ छजतु वेचि वीस विसै नींच मीचु आपनी विसाहिहैं।

जोलौं लछिमन न सरोस सरु सांधियतु तोंलौं सरितेसु न सरन अवगाहि हैं॥८०॥

जब रघुनाथ क्रोधतैं वानु संधान कीनो तब समुद्र कांप्यौ तब समुद्र ब्राह्मण को रूप धरि रघुनाथ कहँ आइ मिल्यौ तहां की कथा

दोहा

दल्यौ दसानन दापु जिय मल्यौ महोदधि मानु।

सीतानाथ सरोस जब गह्यौ सरासनु वानु ॥८१॥

सवैया

ग्राम पुंज पूरन पुंहमि आसमान छयौ जातु धान नगरु समोइ गयौ सोचहीं।

वारि बीचि वीचनि विकल जलचर जीव उछलि पछलि अध ऊरध विलोकहीं॥

दलपति दहल दिगंत हथिआनि हिय दहसति दीरघ सकल हरितानहीं।

डर्‍यौ दसकंधर सहित सरितेसु सरु धर्‍यौ राम जापन सरासन सरोसहीं॥८२॥

जानकीरवन रिपु राकस बदन हेत कटक समेत प्रभु आगत निहोरिकैं।
नीरधि निलजु रघुबीर सौं विमुख व्है मैं हातो कियौ नातो दसरथ नेहु तोरिकैं॥
खैंचति नृपति के सरासनु सरोस तब मिल्यौ मुक्तानि लैं सहमि सिंधु दौरिकैं।
जानि जिय हानि भगवत भय मानिजसु दयौआनि आपनौ सुजसु करजोरिकैं॥८३॥

समुद्र रघुनाथ को स्तुति करन लागो अरु कहन लागो मैं तिहारो अपराधी हो मोहि बाँधिये

सवैया

जगत जनक अज आपही अमर हेत औतरे अवनि दसरथ घर आनिजू।
कै कै जोग जतन जपत जाहि जोगी तेइ तलफत तियकौ वियोग मन मानिजू॥
दलपति मुननि को पावत न पार चारु गावत सुजसु वेद बचन बखानिजू।
धरम धुरंधर करम करतार तुम परम पुरुष परमारथ के दानी जू॥८४॥

दोहा

गुनहगार कहँ बाँधियतु नीति कहत सब कोइ।
यह विचारि रघुवंसमनि बंधनु मेरो होइ॥८५॥

छंद पाधरी

यह बचन सुनत रघुवंस राइ बाँध्यौ समुद्र पर्वत मगाइ॥८६॥
ता पथ पधारि सेना समेत घेर्यौ गढ़ रावनु हनन हेत॥८७॥
रनु मच्यौ परस्पर दुहुन आइ उत दसकंधर इत राम राइ॥८८॥

युद्ध वर्णन

राकसनि हनत बानर प्रचंड बानरनि करत रिपु खंड खंड॥८९॥
भूधरनि मत्त गज चूर होत बूड़त तुरंग रन रुधिर स्रोत॥९०॥
रजनिचर धावत रिछनि चोंह किलकत बानर भटकाइ भोंह॥९१॥
घूमत भट घाइनि पीरपाइ दौरत कबंध रन दुसह भाइ॥९२॥

तब राकसन सीता कहँ रघुनाथ को झूठो मस्तक दिखायो
तब सीता मूर्छित भई-तब रावन को बहन त्रिजटा आइकें समाधान कीनो तहाँ की कथा

छंद पाधरी

राकसन झूठ रघुनाथ सीसु सीय निकट कह्यौ यह जानकीसु॥९३॥
सीय गिरी दुखा माया निहारि यह कह्यो जहाँ त्रिजटा पधारि॥९४॥

राकस माया सब झूठु लेषु रन मध्य साचु रघुनाथ देषु ॥९५॥

हित वचन सुनत सिय व्है सचेत शुभ चिंतन लागी राम हेत ॥९६॥

रावण कौ बेटौ इंद्रजीत रांम लषमण कहँ उरगपास डारो तब रघुनाथ गरुड़ कौ सुमिरनु कियौ तब सर्प फांस छूटी तहां की कथा

दोहा

इंद्रजीत रावन दुअन समर सामुहे धाइ ।

राम लषन कहँ छन विकल कस्यौ असुबगराइ ॥९७॥

सोरठा

ता औसर रघुराइ सौंस्यौ वाहन विहग पति ।

गरुड़ ततछन आइ सिथल नाग बंधन कस्यौ ॥९८॥

रावण लछिमण कहँ सेंहथीमारी तब हनुमांन पर्वत समेत संजीवन मूरि ल्याए लछमण को पीर दूर कीनी तहां की कथा

पाधरी छंद

तब आइ दसानन रोप भांइ मास्यौ लछनु रन सकति घाइ ॥९९॥

जब लस्यौ लषन उर सकति घाउ तब गिस्यौ विकल तन राम राउ ॥२००॥

हनुमांन संजीवनि ल्याइ मूरि तन पीर ततछन करी दूरि ॥१॥

तब लषमण इंद्रजीत कौ धनुष कास्यौ तहां की कथा

छंद पाधरी

बढ्यौ लषन रन रोस आपु द्वै षंड कस्यौ इंद्रजीत चापु ॥२॥

रावण कौ भाइ कुंभकरन जुद्ध करन आयौ सुग्रीव कहँ मकस्यौ तब सुग्रीव नाक कान ले भाजे बहुरि रघुनाथ कुंभकरण कूं मास्यौ तहां को कथा

छंद पाधरी

दसमाथ कुंभकरनहिं जगाइ पठ्यौ ता औसर जुद्ध जाइ ॥३॥

रन कुंभकरन राकसु पधारि सुग्रीवु गह्यौ तिहि कर पसारि ॥४॥

आयौ सुग्रीव ता पन छुडाइ रिपु कुंभकरन नासा नसाइ ॥५॥

दोहा

कुंभकरन रघुनाथ कहँ रोक्यौ सनमुख धाइ ।

जानि उनीदौ राम सर राष्यौ समर सुआइ ॥६॥

बहुर रावनु रामचंद्र सौ जुद्ध करन निकस्यौ तब रघुनाथ कहँ पयादौ जानि इंद्र रथु कवचु पठयौ तब रघुनाथ रथपर चढिके जुद्ध कर्‌यौ रावन कहँ मार्‌यौ तहां की कथा

छंद पाधरी

बहुर्‌यौं दसकधर जुद्ध हेत निकस्यौ सरोस कौंनाय समेत ॥७॥
समुहाइ तहां रघुनाथ और रन रच्यौ निसाचर डुमह घोर ॥८॥

सोरठो

रथ बिनु राघव राइ लख्यौ रथी लंकेस जब।
मातलि हाथ पठाइ दयौ कवचु तब इंद्र रथु ॥९॥

दोहा

रघुनंदन रथपर चढत भई ओप इहि भांति।
जैसे बादत विमल नभ नूतन जलधर कांति ॥१०॥

रावण रामकहँ दाहिणी बांह बांण मार्‌यौ तब रघुनाथ रावन कहँ छाती बांण मार्‌यौ तब रावन से हथौ चलाइ रघुनाथ टूक टूक करी तहां की कथा

दोहा

दछिन भुज रघुनाथ कहँ हयौ दसानन बांनु।
माहु चल्‌यौ अंतकपुरी कर्‌यौ प्रथम प्रस्थानु ॥११॥
रांम बाण दसमाथ उर लग्यौ ततछन जाइ।
माहु लंकपति मींचु कहँ मारग दयौ बताइ ॥१२॥

छंद पाधरी

सेंहथी चलाइ लंकेस सतखंड करी रघु नाकोस ॥१३॥

तब रघुनाथ ब्रह्मास्त्र चलायो रावनके लग्यो रावन हतयौ तहांकोकथा

पाधरी छंद

तब रांम ब्रह्म सायकु चलाइ रन हयौ दसानन दुसह धाइ ॥१४॥

दोहा

प्रानहीन रावनु गिर्‌यौ पूरन फली अनीति।
देखत हू नभ अमर गन करत न मरन प्रतीति ॥१५॥

रावन को अभिमान वर्णनं कविको उक्ति

सवैया

हार्यौ विभीषनु सीख दै दैहित भामिनी मौन अबोलु न मांड्यौ।
आयौ महारिपु सिंधु के कूलनि बालि बली जिहि बांननि कांड्यौ ॥
सेतु पर्यौ सुतु बंधु पर्यौ रन थानौं हर्यौ ननऊं हठ छांड्यौ ॥१६॥

तब रघुनाथ लंका भीतर गए विभीषन कहँ राज दियौ सीतासों सोह लैकैं पुष्पक रथ चढाइ अजोध्या आए इग्यारह हजार बरस राज कियौ तहां की कथा

रन दुसह दसाननु हन्यौ राम निज गौन कर्यौ लंकेस धाम ॥१७॥
तहां किए विभीषन लंक ईस निज बोल निवाहौ जानकीस ॥१८॥

दोहा

लई हुतासन सोध सिय जग जननी निकलंक।
लोकनाथ ह्वै राम हूं करी लोक की संक ॥१९॥
पुष्पकरथ आरूढ ह्वै श्री रघुवंस नरेस।
सिय समेत उछाह मन आए कौसल देस ॥२०॥
दुपु बरन्यौ बहु प्रथम बहुस्यौं सुपु संजोगु।
अब मोपै न कह्यौ परे सीताराम वियोगु ॥२१॥
संवत्सर ग्यारह सहस ११००० राजु भोगु रघुनाथ।
गौन कर्यौ बैकुंठ कहँ लई औध सब साथ ॥२२॥

रघुनाथ के द्वै पुत्र-कुश-लव-कुशराजाके राठौर वंसु लवके और राजा कुसके वंस वर्णन

दोहा

कुस लव द्वै रघुनाथ सुत सकल भूप सिरमौर।
कुस कुल महँ राठोर नृप लव कुस राजा और ॥२३॥

कुसके राजा अतिथि

दोहा

कुस नरिंद उर औतर्‍यौ अतिथि नाम नरनाहु।
जा डर सूरज सोम कहँ कबहुं ग्रस्यौ न राहु ॥२४॥

अतिथि के राजा निषध

अतिथि बरी नैषध सुता सब अगनि कमनीय।
निषध नाम सुत औतर्‌यौ बहा परम रमनीय ॥२५॥

निषधके राजा नल

निषध तने नल अनल सम प्रगट्यौ पूरन दापु।
ता सुत नभ नभ मास लौं हर्‌यौ प्रजा सतापु ॥२६॥

नलके राजा नभ नभके पुंडरीक राजा

पुंडरीक नभ उप तनय जिहिं थाम्यो भुअ भारु।
पुंडरीक दिग्गज मनहुं लयौ बसुह अवतारु ॥२७॥

पुंडरीक के राजा छेमधन्वा

प्रथम छेमधन्वा सुअनु पुंडरीक उपजाइ।
परमपुरुष महँ लीन चित्त कर्‌यौ महा तपु पाइ ॥२८॥

छेमधन्वा के राजा देवानीक देवानीक के राजा अहीनगु

छेमधन्व उर औतर्‌यौ देवानीक नरिंदु।
जाम्यो अहीनगु नाम सुतु जहं कुलकौरव इंदु ॥२९॥

अहीनगुके राजा पारिजात्र

नृपति अहीनग सुत भयौ पारिजात्रु अवनीपु।
जहां चपलता उतजी तज्यौ न रमा समीपु ॥३०॥

पारिजात्रके राजा दल दल के राजा सल

पारिजात्र उर औतर्‌यौ दल नृपु परम दयालु।
सीलसिंधु जाम्यौं जहां सल नामा छितिपालु ॥३१॥

सलके राजा उन्नाभ

सल महीप जायौ सुअनु श्री उन्नाभु नरेसु।
सदा नीति मारग चल्यौ जा डर कौसल देसु ॥३२॥

उन्नाभके राजा बज्रनाभ बज्रनाभके राजा पवण

बज्रनाभ उन्नाभ सुत्र बज्रायुध सम भूपु।
पर पवन पवण महा जाग्यौ जगत अनूपु ॥३३॥

पंपण के राजा विपुताश्व

बल पंडन पंपन सुअनु प्रगट्यौ नृप विपुतासु ।
रमा भारती एक मत कर्यौ जहां थिरु वासु ॥३४॥

विपुत्तास के राजा त्रिस्वसह-विस्वसह के राजा हिरण्यनाभु

भयौ एकु विपुतास्व सुतु वपुइ त्रिस्वमहु साधु ।
जिहि हिरण्यनाभंहि जन्यौ सुतु गुन सिंधु अगाधु ॥३५॥

हिरण्यनाभ के राजा पुष्प पुष्प के राजा सुभसिंधु

हिरण्यनाभ उर औतर्यौ पुष्पनाम अवनीपु ।
जनम्यौ जहां प्रताप निधि सुत सुभसिंधु महींपु ॥३६॥

सुभसिंधु के राजा सुदरसण-सुदरसण के राजा अग्निवर्ण

भुअ भूषण सुभसिंधु सुतु भयौ सुदरसण नांइ ।
अग्निवर्ण रघुनाथ जहां जनम्यौ मदन प्रभाइ ॥३७॥

अग्निवर्ण के वहुत स्त्री भोगकरत छइ रोगु उपज्यौ तव गर्भवती स्त्री छांडिके अग्निवर्ण वैकुंठवास कियौ तव प्रज निमंत्रण गर्भहीको अभिषेकु कियौ तहां राजा सीघ्र नाम भए

दोहा

अग्निवर्ण कहँ काम वस प्रगट्यौ पूरन रोगु ।
तन छांड्यौ उपजाइ तिन तियकहँ गर्भ संजोगु ॥३८॥
सब प्रजानि तब गर्भही कर्यौ सीघ्र अभिषेकु ।
सीघ्रनाम सुत औतर्यौ मूरतिवंत विवेकु ॥३९॥

सीघ्र के राजा मरु ते जोगीस्वर भए अवहूं जोगवल वद्रिकाश्रम महं है

सीघ्र सुअनु मरु औतर्यौ जो रिपु इंद्रिय साधि ।
अजौं वदरिकाश्रम अमरु वैठ्यौ जोग समाधि ॥४०॥

मरु के राजा प्रत्युश्रुत प्रत्युश्रुत के राजा सुमंत्रि

ता सुत प्रत्युसुतु भयौ कुल कैरव रजनीसु ।
प्रत्युश्रुत उर औतर्यौ सुतु सुमंत्रि अवनीसु ॥४१॥

सुमनि के राजा सहस्रान—सहस्रान के राजा विश्रुतमान

दोहा

नृप सुमनि जायौ तनय सहस्रानु बलवानु ।
धरम धुरधर औतर्यौ ता सुत विश्रुतमान ॥४२॥

विश्रुतमान के राजा बृहद्‌बल ते भारत की लराई अभिमन्यु के हाथ जूझे पौने पांच हजार बरस भई तब ते राठौर भए बृहद्‌बल के बसमँह

दोहा

प्रगट्यौ विश्रुतमान सुतु भूपु बृहद्‌बल नाइ ।
भारथ कहँ अभिमन्यु यह हन्यौ वीर रसं माइ ॥४३॥
भारथ कहँ बीती बरष पौने पाच हजार ।
ता पाछे राठौर कुल प्रगट्यौ परम उदार ॥४४॥

अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंघ जू के पुरांन महँ जे पुरुषान कहे तिनकौ बरनु । राजा बृहद्‌बल के बंस महँ राजा बिस्वभर १ तिनके राजा बृहद्‌बाहु २ तिनके राजा बृहत्‌छत्र ३ तिनके राजा पात्र ४ तिनके राजा बसुविंघ ५ तिनके राजा दिवाकर ६ एछऊ पुरुषा एक कवित्त महँ कहे तिनकौं

कवित्त

भूप बृहद्‌बल बंस भयौ राजा बिस्वभर ।
ताष्ठ तनय नृप बृहद्‌बाहु हुअ धरम धुरधर ॥
त्रिहछत्र ता सुअनु हुआ भजनु सत्रु लाइक ।
ता सुत प्रगट्यौ पत्र भूप भूतल सुखदाइक ॥
पुहमीस पात्र नंदनु प्रगट बसुविंग विरदेत मनि ।
अवतर्यौ इक तहा दिवाकर जिन समस्त सुखिअ अवनि ॥४५॥

दिवाकरके राजा सहदेव ७ सहदेव के सोमछत्र ८ सोमछत्र के राजा अतरिक्ष ९ अतरिक्षके राजा सुबांन १० सुबांनके राजा सुमित्राजित ११ सुमित्राजित के राजा इक्ष्वाक बंसके १२ तिनकौं

कवित्तु

भयौ भूप सहदेव पुहमि पुरहूत विसिप्यौ ।
सोमछत्र ता सुअनु सोम सम जा जसु चिप्यौ ॥

अंतरिक्ष अवनीप समर अंतकु अवतरियौ।
या छत नृप सुंवान ग्यांन गनपति अनुसरियौ॥
दलपति तासु नृप मित्रजितु प्रगट्यौ परम प्रतापनिधि।
इक्ष्वाकुवंस वहुस्यौ वसुहसु तव विधि रच्यौ समत्थु विधि ॥४६॥

इक्ष्वाक वंसके राजा विभीषनु १३ विभीषण के राजा अस्वसेन १४ अस्वसेन के राजा वारीषपें १५ वारीषपें के राजा कीर्त्तिवरमा १६ कीर्तिवरमा के राजा त्रिपांडुविजय १७ त्रिपांडुविजयके राजा कर्णसेन १८ तिनकौ

कवित्त

भूप विभीषण भयौ समर भीषण प्रचंड वल।
अस्वसेन नृपु तासु जासु अगनित अश्वदल॥
ता सुत वर्षप नृपति दान वर्षय समांन दिय।
तासु तनय नृप कीर्त्तिवर्म जिनकीर्त्ति वर्म किय॥
पुनि पांडु विजय दलपति भनि विजय पांडसुत सम समर।
तहँ कर्णसेन हुअ कर्ण जिम जग मंडलह प्रताप वर ॥४७॥

कर्णसेन के राजा काकलदेव

दोहा

ता सुत काकलदेव नृप सकल भूप सिरे मौर।
वसुहभार जिन सेस सम सिर थांम्यौ निज जोर ॥४८॥

काकलदेव के राजा अग्निरव

काकलदेव नरेसके भए अग्निरव भूप।
जस पीयूष पूरन किए जिन सबके श्रुति कूप ॥४९॥

अग्निरवके राजा जग्यकघल

जग्यकघल नृप अग्निरव नंदन परम प्रवीन।
जिन अपनी करतूत वर जगत कर्‌यौ आधीन ॥५०॥

जग्यकघल के राजा गोपगोविन्दु—

जग्यकघल नरनाथ के भए गोप गोविंदु।
ज्यौ तिहूं पुर नमहँरनुं निर्मल जा जसुइंदु ॥५१॥

गोपगोविंद के राजा पेमसेन राजा ते राना कहाए

नृपति गोप गोविंद सुअ पेमसेन सिरदार।
रनु भीत तजि आहुनर लई रनाई सार ॥५२॥

पेमसेन से नव पुरषा राना कहाए

नव पुरषा तिनतें चन्यौ वसुहर गाद वेकु।
राजा राउत रांनुजिय जाडरु तज्यौं न नेकु ॥५३॥

पेमसेन के रांना बीर बिपुल के अभुसेन

पेमसेन राना सुअनु बीर बिपुल वर बीर।
अंभुसेन राना जहा जनम्यौ सत्रु सरीर।

अभुसेन के रांना बीरलवाज बीरनवाज के रानाबदाराज

अभुसेन राना सुअनु राना बीरलवाज।
राना बीरनवाज सुअ राणा श्री बदराज ॥५५॥

बदराजके रांना क्रमराज क्रमराजके रांना बीरदेव

राणा श्री बदराज सुअ राणा श्री क्रमराजु।
बीरदेव क्रमराज सुअ प्रगट्यौ हिंद जहाजु ॥५६॥

बीरदेव के रांना पद्मुलिते कर्नाट देस के राजा भए तिनको

कवित्त

रुप रुप असवार जासु रिंगिय सिकारि नित।
रुप रुप मगगणि देत जिन बरखौं चाउ चित ॥
रुप रुप दुख्यानि हर्यौं जिन समर क्रुद्ध ता।
रुप रुप नृप सदा रह्यौ सेयत सा पारा ॥
दल्गति रुप आपदु हरनु जिन कीन्हौ जासु जगत कुलि।
कर्णाटदल पृथ्वी तिल्कु भयौ इकु राना पद्मुलि ॥५७॥

राना पद्मुलि के राना नतपाल तिनको

कवित्त

जिन प्रचंड भुज दंड जोर दुनी दल जित्तिय।
मुंडक माल मातंग दई जिन जगु अपुव्य किय ॥

जिन प्रभुता पूरनहँ चित्तु हरि चरननि राख्यौ।
सतपथ पगु संचर्यौ झूठु जिन कबहु न भाख्यौ॥
अंथवत अवनि राना पगुलि तिनि थंभिय कर्नाटपुरि।
ननपाल किति सुरसरीय सम सुरपुर नरपुर नागपुर॥५८॥

रांना ननलपालके राजा सितुंग तिनकौ

कवित्तु

तुंग बाहु बर तेज जिहिं जिल्यौ बड़वानलु।
तुंग गौज वित्तरत जाहि कंप्यौ कनकाचलु॥
जासु तुंग गुन गननि तुंग लोकनि प्रमानु किय।
तुंग वंस अवतर्यौ तुंग जिहि जगत किति लिय॥
... ... ।
दलपति तुंगधनु तुंगमनु तुंग बचनु उच्चर्यौ भुअ॥५९॥

राजा सितुंग के राजा भरत तिनका

कवित्त

भरत भूप सम राजु भरतखंडह जिन किन्हौ।
जिन, समत्थ रिपुजीत्ति पत्थ जिमि जग जसु लिन्हौ॥
जिहि अनेक मख करत सहस लोचन उर कंप्यौ।
जिहिरिंगत नग धूरि पूरि सहसकिरन कंप्यौ॥
सीतुंग तनय दलपति भनि जासु किति जगु उच्चरतु।
कर्नाट देस दिगपाल सम सु भयौ एकु राजा भरतु॥६०॥

राजा भरत दक्षिण तें गया की यात्रा कहं चले दक्षिणको धरती ब्राह्मणनुकू संकल्पदीनी तहांकी कथा

भरत भूप त्रिस्थली हेत पुव्वह पयानकिये निज निवासु कर्नाट देसु विप्रनि समप्पिदिय।
दलचतुरंग समेतजाइ पहुंच्यौ प्रयागपुर जहा परसत पय पवनु मिटत तछनहँ त्रिविधि जुर।
तहा मन प्रसन्नमज्जनु करयौ लह्यौ पुन्य पवित्र रसु।
वित्तरयौ अवनिपति विविध विध सु गज तुरंग अनिगनत वसु॥६१॥

भरत राजा प्रयाग स्नान कियौ बहुतदान दियौ त्रिवेणी की स्तुति करण लागे

दोहा

त्रिपथ गामिनी तरनिजा मिली सितासित नीर।
तहा विध वरणनु करयौ भरत महामति धीर ॥६२॥

त्रिवेणी वर्णन

घनाछरी छद

गंग वारि बीच रवि तनया तरंग अवलोकत अनेक मनमोद बरसत हैं।
दम्पति तीर भूरुह जाम हेत साधिमप मुनि मगवानि तरसत हैं॥
धम पुनीत पौंनु लागत परातअघ पातकी परम सब तोय परसत हैं।
रहन उदोत अगमनेतम जात जैसें पाछैं लोग दगनि दिनेसु दरसतु हैं॥६३॥
सुरसरि बीच रविसुता की मिलनु जैसैं मालमरी मौंरनि बिसदजल जातकी।
सतिमान भीतर तरल तरवारि किधौं दम्पति दीरघ दुरित दल घातकी॥
ऐसी तीरथेसु छांडि महामद कोटिनि छिवें पौंनछियें जेहानि अधमगति गातकी।
दरत त्रिविधि तन ताप नीर तीर आयें नीर न्हाये पावत परम पदु पातकी॥६४॥
पौंनु परसत तीर दीरघ दुरित जात न्हात नर नीर नाक लोकहि लहत हैं।
कहैं दम्पति और तीरथ अनेक जहा तीरथेसु जानि सब आनि उमहत हैं॥
गंग वारि बीच रवि तनया तरंगनि हेरि उपमा अनूप कवि कोविद कहत हैं।
मानौं महामोद मद लोलुप मधुपदेव दुरद्दु पद्दसिरस पारस रहत हैं॥६५॥
देव तरंगनि बीच तरनि तनूजा सरसुती देवे दुसु बिसरतु बिकरालु है।
नीर कनु छुवैकें नेंक लागतु समीर भवनिधि पार व्हैकें होतु भालु बिसालु है॥
उपमानि के कें गुन गावत निगम दम्पति ऐसो रूपु निश्चल चिहू काल है।
लाल गुन लई कमनीय भाति लई मानौ नील मनिमद मुक्ताहल की माल है॥६६॥
जहाँ तन आइ धाइ लागतु पवनु दम्पति ताप त्रिविधि तहीं नसावत है।
नेंक नीरछुवैकें भव नरक निवारि नरकारि पुरवारूप मुकुति पाइयतु है॥
देव तरंगनि बीच तरनि तनूजा ऐसें उपमा अनूपम निगम गाइयतु है।
छीरनिधि तरल तरंग मांझ जैसें तीर भूरुह तमालनिकी छांह छाइयतु है॥६७॥
मोरेहू त्रिवेनी नाम मुख निकसतु जहाँ तहाँ बिगरतु मद लोभु मोहु तेहु है।
रज समु जातु होतु सतमय गातु मन मोदु न समातु जैसे पावसको मेहु है॥

दलपति सितासित तरल तरंग अवलोकन अदनु पीतगगनि को नेहु है।
पाप संघरण उद्धरण शुभ्र नांनो सेत मावरे वरन मिल्यौ हरिहर देहु हैं ॥६८॥

राजा भरत महीना भरि प्रयाग स्नान करिकें बानारसी कहँ चले

दोहा

इहि विधि नृपति प्रियाग महँ मासु मन्ह निरवाहि।
कर्यौ कूचु सिवनगर कहँ सिव रजनी मनु चाहि ॥६९॥
फागुन बदि तिथि द्वादसी आइ भरत अवनीप।
कटक सहित डेरा कर्यौ सूरजकुंड समीप ॥७०॥

कवित्तु

भूत दिवसहँ नृप दांन साजु संगह सजु लिन्हयौ।
मनि कर्ण तट जाइ न्हाइ विप्रनि कहँ दिन्हयौ॥
षोडस प्रकार प्रदोष संभु पूजा आरंभिय।
रतन हेम भूषन अनूप अंबर अर्पन किय॥
गुन गननि गाइ दलपति भनि हुअ समस्त निसि जागरण।
प्रत्यूष समय राजा भरतु उ लग्यौ ईस विनती करण ॥७१॥

सिवकी स्तुति राजा भरत कीनी तहांकी कथा

गरीब निवाज गीरवान सिरताज कासी नगर अनीति होति रावरें चलाये हैं।
नफा निज जानि काहू देह दई आनि भई मूरहू की हांनि जु अजौंलों विनुपायें हैं॥
गुन के कैं वाही निगुन पढुपायौ सरवसु देकें बापुरी जगतु विसराये हैं।
देव धुनी धरें काम देहैं कोंकलंकुमिट्यौ रिणी को कलंकु कैसें मिटतु मिटाये हैं ॥७२
होहूं दोष आकर जगत जांनीयतु वह दोषाकर लोक वेद पुराननि भाषियें।
वाकी कुटिलें तें नही न कुटिलई वह जड़तां सवार्यौ होहूं जडु सदु सापियें॥
दलपति कहतु पुकारि तिपुरारि तुम वह रसुचान छुय्यौ अब यह रसु चापिये।
मदन मथन जैसें माथें विधुधर्यौ ऐसें औगुननि भर्यौ मोहू चरननि रापियें ॥७
पर द्रोहु के कैं परेप्राननि हरतु तन छन-छन कुटिल छरितु ताप भर्यौ हौं।
संतनि की कही न सुनतु समझायें दलपति मनभायें विष बोल उदगर्यौ हौं॥
जगत जनक कहामेरौ अपराधु ऐसौ अधमु असाधु तुमही संचारि कर्यौ हौं।
गरीब निवाजन विचारियें विरदु जैसें व्यालुगरें पर्यौ तैसें होंहूं गरें पर्यौ हौं ॥७४॥

पांच भूत व्है कैं पाचू भूत तन लगे पान विषय विकार छहू रिपु मोह दाई है।
ठानत कुठाट्ट साधु मग्न मानत चित्त चाकर्नौं भवाइदेत महा दुपु पाइ है।।
गरीब निवाज गीरवांन सिरताज भूतराज विनु कौनु दल्पति बराइये।
मथत महोदधि गरलु अपनायो जैसें असें ननु आपनो, अगाऊ अपनाइयें ।।७५।।
प्रक्रिति सरूप पारवती बाइ ओर बांहीं द्रिग कोर औवबड जगम सवारे हैं।
नाम वामदेव दाहिंनें व्हैं दल्पति दाहिनें नयन बाल्त विरध ध्यान वारे हैं।।
आपुही अकेलें एक आपिको अगनि अ घर मरत जगत अनेक भाति जारे हैं।
पुर मथन त्रिपुरेस तीयों तापहारी तीयों गुनधारी तीयों लोचन तिहारे हैं ।।७६।।

राजा भरत बानारसी तें गया कहं चले

दोहा

चैत्र कृष्ण तिथि पचमी दल चतुरग समेत।
कस्यौ कूच नृप गया कहँ पितृ रनु मोचन हेत ।।७७।।

छ द पाधरो

कछू दिननि माँझि नृप गया बाइ किय प्रथम श्राद्ध पस्युभ हाइ ।।७८।।
दीन और और तीरथ प्रदेस नाना विधि पिंड दये नरेस ।।७९।।
बट तट पधारि राजाधिराजु सकल्यौ दिन कहँ दान साजु ।।८०।।

राजा भरत गया महँ गया के ब्राह्मण कहँ इतनी दछिना दीनी तहां की

कवित्त

बीस मत्त मातग इकसत तरल तुरगम इक तुला हाटकु अनेक मुक्ता नग उत्तम।
सहस गाइ सुवरन समेत अगनित वसन घर पच सहस मन।।
अंनु भाति कहँ प्रति सम्बत अक्षयवट तट दल्पत्ति भनि पिंडदानु अहिन करयौ।
नृप भरत साजु इत्तो तदिन सु गया विप्र कहँ वितरयौ ।।८१।।

राजा भरत सातदिन गया महँ रहे पुनि आइकें कनोज बास कियो तहांको कथा

कवित्त

सत्तदिवस दल्पति रह्यौ नृप गया नगर महँ।
परसि गदाधर चरन मैं सज्जिय पदरहि कहँ।।
पितर पुरुष अपुन्तरना आनदु सब मुक्किय।
रहण हेत रमणीय ठौर विचार विचार किय।।

सुरसरी तीर दक्षु रघुवर कनउज परम पवित्र सुभ।
तहाँ वासु होत गठौर पदु प जगमंडलहिँ प्रसिद्ध हुव ॥८२॥

राजा भरत कनोज गंगा के तीर डेरा कियौ गंगाकौ वर्णनु कियौ तहांकौ

दोहा

प्रथम दिवस डेरा पर्‌यौ जहाँ सुरसरी गभीर।
दरसत पुन्य प्रवाहु तहाँ वरननु कर्‌यौ महीप ॥८३॥

गंगा वर्णनं

कवित्त

त्रिपथ गामिनी तेरे तीन्यौंपथ किधौं तीनि भांति गयौ त्रिगुन मलपदी को भेद है
किधौं दलपति सुपसिंधही के सोत होत वासुदे समूल विसरतु मन षेदु है॥
किधौं भगीरथ तप तेज आंच ताइ आइ सगुण सरीर ही तें पसर्‌यौ प्रसेदु है।
किधौं जगदीसु जलनिधि सोइ तेहाँ मिल्यौ सरस प्रवाह व्है सहस सार्दा वेदु है॥
गुननि गुनत निरगुन नियराइ सिद्दि पाइ दलपति पुरहूत पद वारे हैं।
गति भए ताहूकी परमगति होति तन तीन्यौं पन जाकी पतितहूके पचारे हैं॥
ग्यान दृग लपेटें अलषु लष्यौ जाई जेहाँ परम पग्ग भव नीरधि नवारे हैं।
भगीरथ हेत मोषदाता जगदीस सतपथ सार लेकें तेरें त्रिपथ सवारे हैं॥८४॥
देव तरंगनि तेरे तरल तरंग हेरे दलपत्ति मनके तरंग विनसाईयें।
सनमुष धाऐ सनमुष सुष होइ नियरायें तनु परम पुरषु निवराईयें॥
पोनु परसतन निरष परसिये नेंक पांनुकिये पूरन पीयूष पांनु पाईयें।
नीरय गुनायें तें न जईयें जमनीरें अहडोरि नीर न्हाये भव नीरधि न न्हाईयें॥८५॥
भीषम जननि भागीरथी तेरो पौंउ छ्वैकें पातकिन अंतक मजेजु मींडि मार्‌यौ है।
कहैं दलपति तीर भूरुह जंनम हेत जोगु कैके जोगिन अगिनि तन जार्‌यौ है॥
देव तरंगिनी तेरी वारू की वडाई सिव वारू कौ वनायें ही अधम लोकु तारयौ है।
तेरे जल जतनि कीहोंस जगदीस मीन कूरम सरीर व्है कें जगतु उधार्‌यौ है॥८६॥
पर घन माते पर घन रस रातें कहूँ मैलें तन परस्यौ प्रवाहु पर भांति हीं।
व्याल माल देकें हिमकरू माथें धर्‌यौ औरलोचन लिलार के के कर्‌यौ आनगातहीं॥
प्यासें पियौं पांन्यौ सनु पान्यौ सिर पेप्यौ दलपति देष्यौ अकथ तमामासौं पलु जातहीं

एके तनु प्रथम सवारयौ आठ तन उहैं उरध निहास्यौ अमहार अपारहातहीं ॥ ८७ ॥
पातकी परम कुकरम रस राते काहूँ मांतें गगातीरजाइ जरनि बुझाई है।
दलपति चाहींआ पात पडु ओछें भयौ सावरो वरन गई गातकी गुराइ है ॥
तन तापु आपनो हरन आपु आयौ तहां ताहू तन ताप तीनौं लोककी नसाइ है।
द्वै भुज पधारि चल्यौ व्है के भुज च्यारि देह नेंसुकु पधारि सब देहैं अपनाइ हैं ॥८८॥
पूरहूत व्है कैं पूरहूत पुर जाइ एकु पहुंच्यौ अगाऊ परसत तीर पायकौ।
औरनात आइ याही नीर कौ समीप भांयौ उहै लोकु याहू पाछे पीयौ तजि साथकौ ॥
दलपति काहू सेवक ही सोंदराइ जलु मैलो जांनि यारक पधारयौ निज माथकौ।
ताहू इ पाछि लगि गइ सुपु ठान्यौं भागीरथी तेरौ पायौं नकनाथ्यौ नाकनाथकौ ॥८९॥

राजा भरत कनोज वासु कियो तबतें कनोजिया राठौर कहाए
राजा भरत क राजा पुञ भए तिनको
कवित्त

जिन भुजबल मभूत विपक्ष घर पक्षहीन किय।
जिन अनेक मघ करत मघु इ सतमय पल छिय ॥
अमरावती कनौजविय गगा परत छुहँ।
मधुर सुधा सम राज मांगु भुगायौ नृपति जहँ ॥
दलपति दानरु कल्पतरु समा सुधरमा सुभ करम।
राठौर तिलकु तुर भरत सुतु सुभयौ पुञ पुरहुत सम ॥९०॥

राजा पुञको तेरह रांनी भई तिनके तेरह पुत्र भए तिनके तेरह साखि भई
तिनमैं एक स्त्री क पुत्र धम धाम तिन धम के वंशैंसमांह
श्रीमहाराजाधिराज महाराजा जसवन्तसिंघजू
दोहा

एक माइ उर भीतरे धम धाम द्वै आइ।
दयौ राज पडु धम कहँ पुञ परम सुपु पाइ ॥९१॥

धमको कवित्त

गुप्ररेस निमज्यो जिहि थ गुजरात हय किय।
तात मुआ कहँ ब्याह समय वइ नेह मांगु लिय ॥

इक नृपति उतथपत इक थप्पत अविचल भुअ ।
सत सिंघ पाहरह प्रचंड पुरन प्रतापु हुअ ।
भुगवर्ती राजु कनवज्ज पुर जिन सतपथ वित्तर्यौ वसु ।
जगमगतु सकल जगमंडलहँ सु विमल वरनु नृप वंभ जसु ॥६२॥

वंभके राजा अभैचंद तिन कहँ वापुराइ कहिबोल्यौ तबते राइ कहाए
इक वीस पुरुषालौं राइ भए तिनको

दोहा

वंभ कह्यौ निज कुँवर कहँ रावु आपनें ओक ।
इकईस पुरुषालौं चल्यौ राइ वेकूं भुव लोक ॥६३॥

कवित्तु

वंभ भुअन गुन गन अगांधु सागरु प्रसिद्ध हुअ ।
ता मझहँ निक्कल्यौ परम उज्जल अपुव्व भुअ ॥
मगुगन मन हुल्लसिय हरिय दारिदु तिमिर गन ।
कमल दुअन संपुटिय कुमुद फुल्लिय सु मित्रजन ॥
निकलंक स्वछ दलपति भनि जेन चौहू जिमि वित्थरिय ।
नृप अभैचंद जसचंद जग सु अट्ठदिसह उद्दोतु किय ॥६४॥

राउ अभैचंद के राउ विजैचंद

दोहा

अभैचंद सुतु औतर्यौ विजैचंद बलवानु ।
जिन आपनौ प्रताप भुअ प्रगट्यौ भानु समांन ॥६५॥

तिनको कवित्तु

तेज तरनि अवतर्यौ कोप कहँ अंतकु पिष्यौ ।
परसरांम समर्येज कलपतरु दान विसिष्यौ ॥
गुन गनेसु अनुसर्यौ रूप कंदर्प वषान्यौ ।
सत्त जुधिष्ठिरु गन्यौ इंद्र प्रभुता पहिचान्यौ ॥
श्री अभैचंद नरनाथ सुतु जिन समस्त भुग्गई भुअ ।
कनवज्ज तिलकु राठौरमनि सु विजैचंदु अवतार हुअ ॥६६॥

विजैचंद के राजा जैचंद बडे चक्रवर्ती भए ते दल पांगुरे कहाए

दोहा

बिजैचंद नरनाथ सुतु चक्रवर्त्ती जैचंद।
दुअन जीति कनवजपुर राजु करयौ स्वच्छंद ॥३९७॥

तिनको कवितु

इक छत्र भुअ राजु भुगयौ इक्कनगनवर।
इक्कु ईस जगदीसु चित्तु चिंत्यौ निसिवासर॥
इक्कसौंज वित्तरत दीन दारिद विहंड्यौ।
इक्कु बोलु उच्चरयौ इक्कसई रिपु पंड्यौ॥
दलु इक्कु सिंधलगु संचरयौ जब आगे दियो न पग।
जैचंद नृपति सदिन भयौ सु दल पांगुरौ प्रसिद्ध जग॥३९८॥

राउ जैचंद के संग असीलाष असवार चले

दोहा

असीलाष सनद्ध भट महासूर सिरदार।
नीति निपुन जैचंद नृप कियेहार रसयार॥३९९॥

राउ जैचंद को कथा

राजसूय आरंभ करयौ जैचंद बाहुवर।
पृथ्वीराज तिहि समय सेन सजिय कनौज पर॥
घात सोरवद्ध भया राउ चितह सरोष हुअ।
गुरुभद्दु उच्चरयौ कौनु कहँ रह्यौ गुपत भुअ॥
दलपति प्रथित परमांगुतहि हत्थ जोरि इमि उच्चरयौ।
राजाधिराज राठौर कुल सुजसत कोपु काहू न करयौ॥४००॥

दोहा

संयोगिता कुमारिका रच्यौ स्वयंवर काजु।
देस बिदेसनि तें तहां आयो राज समाजु॥४०१॥
चंद भाटकौ चाकरी पृथ्वीराज बिचारि।
संग सोरह सामंत लै गयौ गुपत अनुहारि॥२॥

संयोगिता कुमारिका बर्यो जहाँ चौहानु ।
तहीं पिथोरा कहं दयौ राद अर्भ जियदानु ॥३॥
रासौ पृथ्वीराज को तहां बहुत विस्तार ।
सो वरन्यो संछेपही सकल कथाको सार ॥४॥

राइ जैचंदके बरदाईसेन

दोहा

भयौ राइ जैचंद सुतु नृप बरदाई सेनु ।
भुगवत राजु कनोज जिहि दयौ प्रजनुकौं चैनु ॥५॥

तिनको कवितु

अमित वित्तु वित्तरिय अमित सासन विप्रनि दिय ।
उपवन कूप तलाइ विविध बाउली: अमित किय ॥६॥
अमित दुप उद्धरीय अमित दुज्जन रन पंडिअ ।
अमित भोग भुग्गवत नित्त जगदीस न छंडिअ ॥
रारतिलकु दलपति भनि जिहि समस्त जित्तिय अवनि ।
जैचंद सुअन कनवज्ज हुअ सु बरदाई विरदेत मनि ॥७॥

बरदाईसेन के राउ सीतराम तिनको वर्णन

घनाछरी छंद

राठौर तिलकु राइ बरदाई सेन सुतु ह्वै गयौ बसुंहु वियौ कांमतरु कांमकी ।
वास वंसमांननि लियौ सब रखत बतु कियौ जिन करनु कनौंडौ सात जामकी ॥
जतननि कैकै चतुरानन संवार्यौ गुन ऊजरौ उज्यारौ प्रभु आलम तमांमकौ ।
अजौंलौं सिहात नरनाथ ठोर ठोर असौ नीको जसु जगतु जगत सीतरामकौ ॥८॥

सीतराम के राइसीहा

ते कनोज ते द्वारिका की जात्रा कहँ चले तहां फूलांणी लाषौ मार्‌यौ
सिद्ध जैसिंघकें परंन.ए तवतें मारवाड के ठाकुर भए तिनकी कथा

कवित्त

कमल कुमुदगन हंस कुंद कयलीसजेवहरि ।
जित्ति जुइ मुत्तिय मयंक मलयज मनोज अरि ॥
दलिनुपार ननमार सुद्ध पारद पयोधि बरनिय ।

मलिअ पुब्ब मालति बरनु जग मगतु राउ सीहा सुजसु ॥
सु विमल रूप जग जय करनु ॥९॥

राउ सीहाके चरित्र वर्णन

दोहा

काशी कांति अवंतिका माया औध अयोध्या ।
मथुरा, अरु द्वारिकाकहँ कर्यो पयानौराय ।१०।

छंद पाधरी

जय चल्यो सीहु राठौर राउ जगदीश निकट परसनह पाउ ॥११॥
तब चली संग चतुरंग सैन नृप लगे विविध मग भेंट दैन ॥१२॥
मातंग मनोहर बर तुरंग भूषन अगनित अरु पट सुरंग ॥१३॥
निज ब्रतु विचारि राजाधिराज वे दये सबनि कौं फेरि साज ॥१४॥
यकसीसनि कै कै कर्यो मानु पायौ सबहिन नृप अभयदानु ॥१५॥

रा० सीहा मथुरा आए तहां मथुरा को वर्णन कियौ तहा की कथा

सोरठा

मथुरा नगर अनूप लख्यौ राउ सीहा जहीं ।
तहा तन पुलकित रूप थल महिमा बरनतु कर्यो ॥१६॥

घनाछरी छंद

ऐसे दलपति दुख दारुन पराई छीनपाई पाईयतु विप्र संसार को सेतु हैं ।
अरथ धरम काम मुकुति फरनि रच्यो जोई जाहि चाहै ताहिसोई फलु देतु हैं ॥
वेदनि जनायो वेदव्यास समुझायो ऐसो अद्भुत मथुरापुरीय कोऊ पेतु हैं ।
निरगुन जानतु सगुन अनुहारि जेहा सगुन पधारि निरगुन पदु देतु हैं ॥१७॥

दोहा

प्रथम दिवस मथुरा नगर राउ महा मति धीर ।
दल समेत डेरा कर्यो तरनि तनूजा तीर ॥१८॥
दानु ददे माथुरनिके तहां पधारे पाइ ।
साँझ आरती के समय पूजे केशव राइ ॥१९॥
चरन पूजि जगदीशके जपे अगनित नाइ ।
हाथ जोरि बिनतीकरी सीहा सत्व सुभाइ ॥२०॥

राउ सीहा केसौराइ की विनती करी

घनाछरी छंद

हाथी हय हीर चीर हाटक हरिननैंनी   नैंननि लषाइ अपनाइ देत आछै हौ ।
झूठु सांचौ कै कै सांचु झूठुमो बनाइ   गांधुउटेमालु आवही रहत जाइ पाछै हौ ॥
। जिनग्यान हग देष्यौ जैसौं   तैसौतिन पेष्यौ तिनहीकौ मोहु ताछै हौ ।
॥कै जान्यौ बीसविसे केसौराइ   माया जाल बगराइ इंद्रजाल काछुकाछै हौ ॥२१॥

लोकनिके आपार करम करतार लोक   कारन करन वेदनि कौ सार सांचै हौ ।
महिमा महोदधिआपनैं मोह मेरेजान   मोहत सबनि तुमहूं न मोह बांचै हौ ॥
स्वांग दस कै कै करयौ संसार विदत   हन्पति अब आइ गुनिगन बीच पांचै हौ ।
व्है कै सगनादिक नचावन जगतुनाथ   अैसौ नांचु करयौ जिहिनांचु आपु नाचै हौ ॥२२॥

द्विज दुख दांदे दीनबंधु पदु पायौ   दयासिंधु ह्वै गवायौ दनु सिंधुर छुडाइ कैं ।
दामोदरु लोक वेद पुराननि भाष्योजय   मांइकी दावरी गाढ्यौ उदर बंधाइ कैं ॥
अैसे सारथक नांम थौंननि सुनत होहुं   भयोनिहचिंतु चित्त चिंता विसराइ कैं ।
असरनु सरनु विरदु न लजइयै मेरे   अघनि नसैयै अघनासनु कहाइ कैं ॥२३॥

जननी जठर जठरागिनि जरत तनु   तातैं निवारयौ मनु तातैं निवारियैं ।
विनु मांगे थननि अपाऊं दूधु केकै   देहु आदजि आयौ उहै पार पारियै ॥
वैसी जतननि करयौ आपुही बडेरौ   दलपति चेरौ पांचनि लगाइ कैंत मारियैं ।
ठौर ठौर सांकरे बचाइ केसौराइजैसौं   तबनि विसारयौ अैसे अब न विसारियैं ॥२४॥

दोहा

सींहा बारह बन करत   देष्यौ गोकुल गांऊ ।
हरषित चित वा ठौरकी   महिमा वरणी राऊ ॥२५॥

गोकुलको वर्णन

निरगुन सगुन सरूप व्है कैं जाइ   नंदकुमारु कहाइ जेहा झूठी छांछिपाई है
जोगुकैंकै जिहि सनकादिकन जांम्यौतिहि   गोपिनिकी गैया तैहां छरितु चराई है ॥
देषौ अचिरजु वैंहां जनमु मरनु होउ   होत हरि वेऊं जिनि गोडेनि गुसांई है ।
निगमनि गांई तिहुं लोक मन भाइ   अैसी मथुरा निकट काहूं गांवकी निकांईहैं ॥२६॥

राउ सीहा मथुरा ते द्वारका कहँ चले तहाँ की कथा

छंद पाधरी

आगिले दिवस सीहा सुजांनु द्वारिका नगर कहँ कियौ पयानु ॥२७॥
कछु दिननि माझ राठौर राइ देखे पुनीत रनछोर पाइ ॥२८॥
देखत चरननि तन मिस्यो तापु निज दोष निवेदन लग्यौ आपु ॥

राउ सीहा द्वारिका महँ रिणछोडजू सौं बिनती कीनी तहाँ को वर्णनु

सवैया

सेस वपु ह्वै कै धिर थाम्यो भुअ भारू सोम सूरज सरूप लोक तिमरु नसायौ है।
कहँ दलपति जड जंगम जहालौं जीव तहा घट घट अंश आपनौ रलायौ है ॥
जननी जठर जठरागिनि बचाइ दिन दिन वेहा आहार अगाऊ पहुचायौ है ।
मानहु न गुनु असौ निगुनु जगतु एते गुननि करत नाथु निगुन कहायौ है ॥३०॥

द्वारिका ते आवत सिद्ध जैसिंघ को ओर ह्वै के लाखौ फूलाणी कहँ मार्यौ तहांकी कथा

छंद पाधरी

कछु दिननि गनाइ सीहा नरेश आए मारग माह प्रदेश ॥३१॥

कवित्त

सोलंकी नरनाथ सिद्ध जसिंघ इक हुअ ।
आस दुअनु लाखा प्रताप प्रसिद्ध भुअ ॥
लाखा मारन हेत सीह भन्यौ जयसिंहहँ ।
असी कोस पुरदौर हन्यौ आडेतु राइ तहँ ॥
नृप सीतराम नंदन नवल निकंटक भइ देसु किय ।
कामजनाथ राठौर मनि सु विमल किति भुअ विस्तरिय ॥३२॥

सोरठो

सोलंकी नरनाथ कुंवर दई नृप राइ कहँ ।
ब्याहत देवै साथ मारवार महलु दयौ ॥३३॥

राऊ सीहाके तीन बेटा भए आस्थान १ अज २ सोनिग ३ आस्थान श्रीमहाराजधिराज
महाराजा श्री जसवंतसिंघजू के पुरिषा अजके द्वारिका की धरतीमांहो
बाढेल राठौर सोनिग ईडरीया राठौर तिनको वर्णनं

सोरठा

सीह महा बलवानु मण्गळ सीहा तनय ।
सोनिग अज आस्थान एक एक देसाधिपति ॥३४॥

दोहा

देस द्वारिका अजनृपति भुगयौ राजु अनूप।
अजौं विदवा वस महँ वाढेलादिक भूप ॥३५॥
सोनिग नृप ईडरनगरु लह्यौ बाहुबल जोर।
अजौं विदित वा वंस महँ ईडरीया राठौर ॥३६॥

सोरठौ

पेढ नगर बरजोर लह्यौ नृपति आस्थान तहँ।
पेडेचा राठौर मारू प्रजा वंस मह ॥३७॥

आस्थान के राउ दूहडु

दोहा

आस्थान उर औतर्यौ दूहड नाम नरेसु।
जिन प्रताप वर भोगयौ निरूपम मारू देसु ॥३८॥

राउ दूहड को वर्णनु

सवैया

गनी जिवि कीरन तीपन तेग प्रताप महागिनी की अरनी हैं।
जीति दिसानि लई भुज जोर दई जिहि दाननिही धरनी हैं॥
जिहि की कल कीरति चारन सिद्ध तपा मुनि मौनिन हूं बरनीं हैं।
अजौं भुअ लोक बषांनत भूप बडी नृप दूहड की करनी हैं ॥३९॥

राउ दूहड कर्णाट देसतें आपनी चक्रीस्वरी मारवार ल्याए नागांने
गांव महँ थापनाकीनी तवतें नागनेचीयां कहाई
सब राठौरन कुलदेवी

सोरठा

आंनी दूहड राउ कुलदेवी नागान पुर।
नागानेची नांउ मरु मंडलहँ प्रसिद्ध हुअ ॥४०॥

दूहडके राइ राइपाल तें महीरेलन कहाए तिनको वर्णन .

सवैया

काहू कर्यौ विधि वाहन हंसु किधौं हर मानव लोक सिधायौ।
काहूं वर्यौ मुकुतागनु चारु तुसारु किधौं चहूंधां बगरायौ॥

काहू कह्यो अनुसत्रु किधौं रजताचलु वेद पुराननि गायौ।
नीचे निहारि कर्यो सबहीं है महीं महिरेल्न कौ बपु छायौ ॥४१॥

महिरेलन राउपाल एक जदुवंसी रजपूत कहँ सबसु दाउ धोयो
आपुनो भिछुक कीनो तबतें रोहडीया चारन भए तिनकी कथा

दोहा

नगर एकु जदुवंश महँ भाटी चंदा नाऊ।
सरबसु दे चारन कर्यो राइपाल नृपराऊ ॥४२॥
रोहडीया चारनअजौं चंद बसु मरुदेस।
अमनित गथु दद जिनहिं मानत सकल नरेस ॥४३॥

राइपाल के राउ काहर तिनको बर्णन

दोहा

राइपाल नरपाल सुतु प्रगट्यौ काहर राई।
जिन अपुत्त कीरति रही मारू मुवन बसाइ ॥४४॥

सवैया

छहू रितु नूतन ओपभरी बिर घात पनहू तरुणापन राचे।
उजराइ निहारत गातनिकी नृप रीझत मानी सराहत पाँचे॥
सातपतालनि व्है नगलोकनि की रतर गौनु अनूपम माचे।
काहर नरिंदकी कीरतिनटी निज बस चढी अगहू भुअ नाचे ॥४५॥

राव काहर के राव आल्हण

दोहा

महाराउ काहर तनैं आल्हण राउ सुजानु।
यौ प्रतापनिधि औतर्यौ ज्यौं कश्यपके भानु ॥४६॥

तिनको वर्णन

सवैया

छिति वासर चारु सुमेरु सिया सम नीरधि पूरन तेल भर्यो।
प्रजानिकौ दुखु अध्यारो मिट्यौ नमु अजनु ऊरधलोक पर्यो॥
बुझायो न बेरी प्रभजन हू यौं छहू रितु वासर रेंगि बर्यो।
नृप आल्हण के परताप प्रदीप दहू दिसि दोह प्रकासु कर्यो ॥४७॥

राउ जाल्हण एक दिन सिकार खेलन गए तहां एक कुंदरूकी बेल
देखी तब राउ जाल्हण कह्यौ इनके फल और कोउ न तोरै
तबको इनकी गैर हुकमी के सोडा एक फल तोर्यौ
तब राउ इनकौ देश लयौ तब इनके पर
डांडु कियौ तबतें सोढा ग्रंदेल भए
तहांको कथा

दोहा

एक समय मृगया करत नृपति जाल्हण राइ।
अगनित सुभट समेत तहा लख्यौ बिंद वनुजाइ ॥४८॥
उमरकोट नाइक तहां सोढा हुक्म बिसारि।
आइ आपनी कुमतिवस लयौ एक फल झारि ॥४९॥
परसूर परमार कुल सोढा समर अभेलु।
अलर दोस ताकहँ कर्यौ जाल्हण राउ दंदेलु ॥५०॥

राउ जाल्हण के राउ छाडा

महाराउ जाल्हण तनय हुअ छाडा छिति नाहु।
जा प्रताप ज्वालां बढ्यो दिन-दिन अरि उर दाहु ॥५१॥

राउ छाडा के राउ तीडा

छुति नायक छाडा तनय तीडा तीछन रूप।
जाकी कीरत जगत महँ अजौं बखांनत भूप ॥५२॥

राइतीडा के राइ सलखा
दोहा

भयौ राउ तीडा तनय सलखा मारू राइ।
जिन जीत्यौ जालौर पति समर सांमुहे घाइ ॥५३॥

राउ सलखा को वर्णनु
सवैया

चारिहूं ओर खातल पूरि हरी त्रिपकार हजार फनाकी।
नर नारिनी सत्त सरूप गनी मलिनाई नसाई घनी बसुधांकी ॥
दलपति देव समाजनि वीर निराजति जेव अनूपम जाकी।
भरी अध मध्यम ऊरध हूँ सित कीरति देव नदी सलखाकी ॥५४॥

सल्पा के चारि बेटा

राउ माला १ जैतमल २ वीरम ३ सोभित ४

दोहा

चारि तनय मारू तिलक   जाये सल्पा राइ।
राउ माला अरु जैतमलु   वीरम सोभित नांइ ॥५७॥

राउ माला के चरित्र वर्णनु

राउ माला कहँ सिद्ध इक   दइ अमर जय सिद्ध।
ता प्रभाउ दिन दिन बढी   पूरन पुहमि समिद्धि ॥५८॥
तिमर लिंगु दिलीस इत   उत गुज्जर प्रभु आइ।
राउ माला सौं एकदिन   गये बियौगम पाइ ॥५९॥
सोभित सेयौ सिंधु पति   देस निकास्यौ पाइ।
दयौ जीव तिन समर महँ   मारत गाइ बचाइ ॥६०॥
महा बाहु वीरम बली   रिपुणि हनत रनमाँहि।
झूझत बस्यौ बरगननि   गयौ भेदि रवि राह ॥६१॥

राउ वीरम के पाँच बेटा

प्रथम राउ चौंडो १ गोंगा २ देवराज ३ जैसिंघ ४ बिजा ५

दोहा

प्रथम राउ चाडौ भयौ   निजकुल कैरव इंदु।
जगमगातु जिहिवंस महँ   श्री जसराज नरिंदु ॥६३॥
गुननिधि गोंगा दूसरो   प्रगट्यौ परम सपूतु।
अजौं विदित या वंस महँ   सतु गोगा रजपूतु ॥६४॥
और ओतस्यौ तीसरो   देवराज सुभ जोग।
अजौं देवराजोत भट   बहु है बखानत लोग ॥६५॥

चौपाई छंद

चौथो जैसिंह इहि नाइ   बिजा पांचयो सत्य सुभाइ ॥६६॥

दोहा

तिनह भयौ तिनमहँ भयौ   चौंडा परम प्रचंडु।
जिन प्रताप वर नृपनि सौं   दयौ आगमनि दंडु ॥६७॥

राउ चांडा मंडोवर अरु नागोर औरौ जोर सौं लीनी तहांकी

कुंडरीया छंद

भुज जोरनि चांडा बली रची महा रन रारि।
देस कर्‌यौ बस आपनैं अगनित दुअन संघारि॥
अगनित दुअन संघारि किति चहुं चक्र चलाई।
अर्‌यौं सकल नरनाथ करत निसि द्यौस बड़ाई॥
मारवाड़ मन्नवान आन फेरी चहुं औरनि।
मंडोवर नागोर लइ चौंडा भुज जोरनि॥६८॥

राउ चौंडा के बारह बेटा तिनके नाम

चौपाइ छंद

पूर्‌यौ सत्तउ सहसमल वीर अर रनमलु रायनु रनधीर।
कांन्ह भीम सिवाराजु अपारु लींभो विजो नामदे जानु॥
चौंडा सुत बारह विरदैत सबमहँ रिणमल राउ टीकैत।
बढ्यौ सबनिके बंसु अपार बरनत होइ ग्रंथ विस्तार॥६९॥

राउ चौंडा के टीके रणमल तिनके बंसमहँ महाराजाधिराज श्रीजसवन्तसिंघजू
रनमल के चरित्र वर्णन

भयौ राउ चांडा तनय रनमल रन विरदैतु।
यौं प्रगट्यौ राठौर कुल ज्यौं कुरु कुल कपिकेतु॥७०॥

राउ रनमल को कवित्तु

जाकी गरवाइ आप दादेतैं सवाइ गाई गीरवांन लोकहूं बड़ाई भुजबलकी।
पारथ लौं भारथु मचाइ राइ चांडा तनैं रापी कहूं नैंकन निसांनी पलदलकी॥
औरनि जनम कमाई की निकाई जिहि जगत लपाई करतूत एक पलकी।
वैरनि की जाई रनाई राई राई कैकै मेरुसी बनाइ ठकुराई रनमलकी॥७१॥

राउ रनमल एकसौ साठि १६० जालौरीया कूवामहँ बोरे तहांकी कथा

साठि अधिक अरु एक सत जिन जालौरनरेस।
सब रिपु बोरे कूप महँ रनमल मारू देस॥७२॥

एक समय रनमल बली पीरोर्या पठांनु ।
कर्यौ पराजित समर महँ इ्यौ महमुद पानु ॥७३॥
सब जीत्यो रनमल बली जेसलमेर नरेसु ।
भाटी भाट्ठ पठाइ तब निर्भय माग्यो देसु ॥७४॥

राउ रनमल के चोवीस बेटा तिनकी विगत

महाबाहु बिरदेत मनि रनमल सुन चोवीस ।
भये आपनी आपनी ठौर सकल पुहमीस ॥७५॥
सब विधि जेठो सबनिमहँ जोधा राउ रीसैदु ।
गयौ पाछिले नृपनि महँ महाबीर बिरदेतु ॥७६॥
कुल मण्डनु मण्डनु बियो जा जसु वसुधा छोर ।
अजौं विदित ता बस महँ मण्डलोत राठौर ॥७७॥
अषैराज तीजो तहा सुप समता पुरहूत ।
कूंपा अव जेताबियो जा कुल महँ रजपूत ॥७८॥
अगनित कूपावतनि महँ राजत नाहर पांनु ।
जा सिरपर जसराज नृप तीन्यौं कृपा बितानु ॥७९॥
चौथौ नाथा चतुर मनि जा जसु नीरधि तीर ।
अजौं विदित ता बसमहँ नाथावत बरबीर ॥८०॥
भयौ पांचयौ पुहमि महँ डूगर सत्य सुभाउ ।
जगमगात जग मडलहँ डूगरोत भट राउ ॥८१॥
भयौ करन समता करन छठयौ दानु विवेक ।
अजौं विदित करनोत भट सुभ अगनित अनेक ॥८२॥
रूप नाम सब सातयौ रूपौ भट सिरतानु ।
अजहूँ रूपावतनिकी राजतु बसु इत समानु ॥८३॥
रनमलोत सुत आठयो चापो तेज निवासु ।
अगनित चापावतनि महँ राजतु पीटम्दासु ॥८४॥
नवयौं पाता औतर्यौ पूरन बल समेत ।
अजौं जगमगत जगत पर पातावत बिरदेत ॥८५॥

दसयौ बाला विधि रच्यौ महा निपुण सबभांति ।
अजहूं बालावतनि की जगमगाति जगपांति ॥८६॥
कंधिलु सुभट इग्यारहौं भयौ महारनधीर ।
कंधिलोत राठौर की अजौं वसुंह बहुभीर ॥८७॥
हुअ सायरु सुतु बारहौं मनहुं बारहूं भानु ।
अलप वेस ह्वै आथयौ बसुधा तेज विधानुं ॥८८॥
भयौ तेरहँ तेज निधि लयो लाषमहँ सूरु ।
सुअनु चौदहौं औतर्‌यौ हापौ गुननि गरूरु ॥८९॥
प्रवलुं पंद्रहो मंडलौ सक्तु सोरहौ वीरु ।
प्रगटयौ सांडौ सत्रहो महावली रनधीरु ॥९०॥
इकु अडवालु अठारहौं सुतु ऊधरौ उदारु ।
उणईसो ऊधौ गण्यौ दुसह दुअणजित वारु ॥९१॥
सत्रुसल्लु सुत वीसयौ बीस बिसैं बलवंतु ।
इकईसौ वैरो भयौ वैरसिरीकौ कंतु ॥९२॥
जैतमाल सुतु बाईसौ भांन समांन उदोत ।
अजौं विदित वा बंस महँ पेतस्यौंत राठौर ॥९३॥
चोवीसौं भावरु भयौ सकल कला करतारु ।
इहिविधि वाढ्यौ वंस महँ रनमल कुल विस्तारु ॥९४॥

राउ रणमल चीतोडगढ भांणेजको सहाइ कहँ गए तहां दगादे मारे तहां की कथा

लाषा षेता वंधु द्वै गढ चीतौर नरेस ।
लाषा रनमलकी वहनि व्याही मारू देस ॥९५॥
षल षंडन षेता तहां वढइनि वरी अनूप ।
जिहि जीत्यौ रनवासु सत्रु सरस आपनौ रूप ॥९६॥
इनु चाडा तनय तनें मोकलु गुननि गरूर ।
वढइनि जाए पूत द्वै चाचा मेरा सूर ॥९७॥
चाचा मेरा लोभ रत मोकल मार्‌यौ ठौर ।
सकल देसु वस आपनैं दुहुअन कर्‌यौ वरजोर ॥९८॥

यहसुनि गढ चित्तौर कहँ पहुच्यौ रामठ राउ ।
कुंभा भानेजोतकों मन नच करयो सहाउ ॥९९॥
चाचा मेरा कहँ तहा पईपहार भजाई ।
कुअरि दुहुनकी लईसव राठोरनि पराई ॥४००॥
कुंभकरनु निजकुमतिवस ओहनु ह्वै दिग जाइ ।
सोवत निसा निसाकचित मास्यौ रनमल राइ ॥१॥

राउ रनमल के जेठे राउ जोधा तिनको जन्म संवत्

दोहा

चौहदे सई सहत्तरा १४७२ सवतु माधव मास ।
भूअ भूपन रनमल तनय जोधा जनमप्रकास ॥२॥

राउ जोधा को वर्णन

घनाछरी छंद

लीनैं बरजोर वाके गढ ठौर ठौर दौर जहा जाइ वार कमरू के वेगु वाइको ।
कईयो वार कोपे रिपु कटक संघास्यो जिहि मास्योमहि मोजनिमजेजु दरियायिको ॥
जाकी तेज आंचि छिति और छोक तासो गयो सांकरै सहाईसरा सहज सुभाइको ।
अजौ लौ'सिंहात चारयो चक्रके नृपनि ऐसो जसु जगमगतु जगत जोध राइको ॥३॥

राउ जोधा बापु को वैर लीवे कहु चीतोर गढपर चढि गए तहाँ
राना कुंभा कहँ विचलायो बहुरि पाछे सलाह भइ बहुरि
आइकै जोधपुर बसायौ तहाँकी कथा

कुंडरीया छंद

भुअ भूपन जोधा बली सौरि बापको बैर ।
कुंभा मारन रोस चित धाइ करयो गढघेर ॥
धाइ करयो गढ घेर सबनिरहँ सकटास्यो ।
रिपु राना विचलाइ वाइ देसनैनिकास्यो ॥
बहुरयो आइ रहत रवत सरसोवइ पृथा ।
रच्यो जोधपुर गाव राउ जोधा भुअ भूपन ॥४॥

भूअ भूपन रनमल तनय जोधा जोधां राउ ।
पंद्रहसैं पंद्रहोतरां रच्यौ जोधपुर गाउ ॥५॥

राउ जोधा गयाकी जात्रा कहँ गए तहां जौनपुरकौ साहिबु आइकैं पैंडे महँ मिल्यौ राउ जोधां की महिमां कीनीनि यह माग्यौ दिल्लीके पातसाह सौं हमँहि बचाउ । राउ जोधा तिहिंकी ओर व्है कैं बहलोलपासौं लरे । बहलोलषां कौ भाइ सारंग षांनिहि मार्‌यौ । गयाकौ करु दूरि कीयौ तहांको कथा

दोहा

गया करन निज तातकी गये जोध नृप राइ ।
ईसु जौनपुर को तहां मिल्यौ अगाउ आइ ॥६॥
सेवा करी विनीत तन मजलि द्वैक पहुंचाइ ।
मांगी अभै दिलीसकी दई तहां तिंहि आइ ॥७॥

कुंडरिया छंद

जबघेर्‌यौ बहलोलषां जाइ जौनपुर ईसु ।
तब सहाउ जोधां कर्‌यौ रन भजाइ दिलीसु ॥
रन भजाइ दिलीसु और कौ संकटु टार्‌यौ ।
बहुर्‌यौ सारंगषांन नांई रिपु बंधु संघार्‌यौ ॥
गया नगर पगुधारिअ करकैं दुंदुभी फेर्‌यौ ।
भली करी राठौर जहां जाकहँ जग घेर्‌यौ ॥८॥

राउ जोधा के चौदह बेटा तिनकी बिगति

महाराज जोधा तनय चौदह बीर समथ ।
जिनि पुरिषारथ आपनैं अवनि करी सबहथ ॥९॥
प्रथम राउ सूजा भियौ सातलु गुननि गरूरु ।
तीजो बीका साहसी चौथौ दूदा सूरु ॥१०॥
राइपाल हुअ पाचयौ छठौ कर्मसी धीरु ।
सचविधि पूरौ सातयौ भयौ बसुंह बण बीरु ॥११॥
सींवराजु इकु आठयौ नवयौ नींबो नाइ ।
बाहू बल बीदा दसौं प्रगटयौ सत्व सुभाइ ॥१२॥

सामतसिंह इग्यारहों माहु इग्यारहों चंद्र ।
भारमल सुव बारहों उपज्यौ सील समुद्र ॥१३॥
प्रगस्यौ वगसिंघ तेरहों सुअनु महा ममोद्व ।
जोगौ जनम्यौ चौदहों जग प्रसिद्ध वरदेतु ॥१४॥
कस्यौ वास जोधा नली ,बीकानेर बसाइ ।
अजौं निरिति वा वंसमहँ कर्णादिक सव- राइ ॥१५॥
दूदा दुसह प्रताप निधि बस्यौ मेरता ओर ।
जगमगातु जिहि बंस महँ मेरतीया राठौर ॥१६॥
मेरतीया राठौर की बहुविधि बिगति अपार ।
हां बरनत द्वै भारि भट दूदाकुल सिरदार ॥१७॥
रावतु सुंदरदास सुतु मेरतीया गोपालु ।
जिहि देषत संग्राम महँ होतु डंभन दल चालु ॥१८॥
बीर बिहारीदास सुतु श्री बनमाली दास ।
गोकुल सुंदरदास वतु गनीयत सुजस निवासु ॥१९॥
रामदास सुतु जगमगतु जगतसिंघु जगजानु ।
राइसिंघु सुतु सील निधि दाता सुभट सुजानु ॥२०॥
राईपाल अरु कर्मसी बसे पींपसर गाऊ ।
कर्मसोत पीपार को प्रिथ्वीराज सुभ नाऊ ॥२१॥
पुनाडे सिवराजु इकु बस्यौ सुभट सिरमौर ।
नगर डाबर सादसी सावतसिंह राठौर ॥२२॥
भारमल बीलारपुर जिहि जीत्यौ रिपु गोतु ।
अजौं विरिति बा वंसमहँ पृथ्वीराजु मलोतु ॥२३॥

। जोधा बहुदिन राज कैं पद्रहसे पैतालीस सबतर १५४१ स्वर्गवासकियौ । सब तीन बरस सातल जोधपुर कौ राजु कियो । पीछैं राउ सूजा पाट बैठे । तिनके बंसमहँ महाराजाधिराज श्रीमहाराजा जसवंतसिंघजी तहां की कथा

पैंताला पद्रहसइ जोधा निजकुल ईसु ।
देहतज तन बरपद्वै सातलु भयौ महीसु ॥२४॥

राउसूजाके जन्म कौ संवत्

चौदहसैं छिहांनवा भादव सुभनिथि वार।
कुल पुनीत सूजालयौ जोधां घर अवतार॥२५॥

राउ सूजाके पाट बैठे कौ संवत् ।

संवतु पंद्रहसे वरप वीतत अड़तालीस ।
मारवार टीका लह्यौ सूजा कमधज ईस ॥२६॥

राउसूजा कौ वर्णन

घनाछरी छंद

जोधाकौ लाडिलौ जग जोधनि कौ जेतवारु महारिपु भेदक निकाई नीके नांइकी ।
सीलकौ सागरु कांमनांनिकौ कलपतरु औतर्‍यौ अमर सदा सुमति सुभाइकी॥
रमापाइ जिहि रमा रमनु रमांयौ गायौ सब्र विधि पूरौ ऐसी परनिसु दाइकी ।
पूजा रत होत दूजा पूज्यौं न भगतु सेंघ ऐसौ राउ सूजानंद सूजाकी सुहाई की ॥२७॥

राउ सूजाके आठ बेटा तिनकी विगति

दोहा

आठ आठ दिगपाल सम सूजा सुअन समथ।
दान कर(ण)ज्यौं औतरे पुरुषारथ ज्यौं पथ॥२८॥
प्रथम कुकुरु हु आथयौ वाघौ तेज निधानु ।
दाहत रिपुकहँ छहू रितु ज्यौं ग्रीषमरितुभानु ॥२९॥

राउ वाघा कौ वर्णन

जीत्यौ कर वनी करनु दानु देदै सदा सांकरे चरन सरनागतु बचायौ है ।
सूजाकौ सपूत रन बांकौ रजपूतु व्है पुहुमि पुरहूतु पुरहूतु समगायौ है॥
पुन्व नौकां बैठे छत्रत्रितनि कठैठे जिहि जगहूसौंअैठौ भवनिधिपारु पायौ है ।
अजौं उर ओकलौं त्रिपु भुअ लोकबीच ऐसौ राउ वाघां जसु बीजु बगरायौ है॥३०॥

राउ वाघा कौ जन्म संवतु

पंद्रहसै चौदह अधिक वीतत संव्रतु मानु।
सूजा नृप उर औतर्‍यौ वाघा तेज निधानु॥३१॥

राउ बाघा को स्वर्गवास को सवतु

पद्रहसै इकहत्तर १५७१ बाघा भट विरतान।
कुंअरायत सुभ लोकु तजि बैठ्यो देव समान ॥३२॥
सरनागतु पालकु वियो सेयो सुहमी प्रवीनु।
तीजौ उदौ जिहि कर्यौ दुमद दुअन दल छीनु ॥३३॥
दान कल्पतरु औतर्यौ चौथौ देईदासु।
प्रागु पाचयौ भयौ सुभ पूरा सुजस निवासु ॥३४॥
बाहु बली सागौ छठौ प्रगट्यौ परम सपूतु।
नरौ सातयौ जहां तें गायौ नरौ रजपूतु ॥३५॥
सुतु आठयौ तिलोकसी भयौ सुभट अवतंसु।
इहि निधि बाढ्यौ बसमहँ अगनित सूजा बंसु ॥३६॥

राउ सूजा चौबीस बरस राज कियो पद्रहसै बहत्तरां स्वर्गवास कियो
तब राउ गांगा टीके बैठे राउबाघाके बेटा तहांकी कथा

दोहा

राज कर्यौ चौबीसबरष सूजा पूरन कांम।
पद्रसै बहत्तरा गौनु कर्यौ सुरधाम ॥३७॥

राउ बाघा के पांच बेटा तिनकी विगति
प्रथम राउ गांगौ १ बीरमदे २ जैतसी ३ पेतसी ४ प्रतापसी ५

दोहा

बाहूबली बाघा सुभन दुअन दल मल्न पांच।
दिगपालनि दाहति रही जिनकी तीछन आंच ॥३८॥
प्रथम राउ गांगौ वियो बीरमदे बलवानु।
गन्यौ जैतसी तीसरौ जग सूरता निधांनु ॥३९॥
चौथौ प्रगट्यौ षेतसी षपैं चौगुनैं चाइ।
भुअ प्रतापनिधि पांचयौ सुतु प्रतापसी नाइ ॥४०॥
टीका के धनी राउ गंगा तिनको जन्म सवतु
चालीसा पद्रह सई रितु बसंत रमनीय।
जायौ बाघा राइ सुतु गांगा गुन कमनीय ॥४१॥

राउ गांगा टीकै बैठे ताकौ संवतु

पंद्रहसै बहत्तरै सुननिधि गांगा राउ ।

टीकै बैठो जोधपुर भयो प्रजा मन चाउ ॥४२॥

राउ गांगाको वर्नन ।

राउ गांगा दौलतखांकी फौज दिगम्बर फौजको हाथी मारयो तहांको कवित्त

मनाहरण छंद

दौलति गनीम जुदी मुंदारै भगायो आयो राठौर अगीअगीभिदिनद कुरतु दबाइकै ।

दायनदुगर थानैजंनवो दस्तकिति पीठत आगाकै गयो करतु गहाइकै ॥

तहांराउ गांगा कुंभु मानति विदानिफारि राखे गुरुतादनु गगुंड मारगाइकै ।

कैसैं भगदत्त पीठ पारथ संघारयो तैसैं गजराज मारयो मीर भागावन पाइकै ॥४३॥

राउ गांगा सोरह बरस राज कियो पाछैं सुरगवास कियो तहांकौ संवतु

पंद्रहसैं अठ्यासीया सुननिधि गांगा राइ ।

करयो भौनु सुरलोककहँ पूरन मन सुभाइ ॥४४॥

राउ गांगाके छय बेटा तिनको बिगति

षट परमित गांगा सुभनु जिनयो जगत सराह ।

प्रथमहि जेठे मालदौ मारु मंडल नाह ॥४५॥

मानसिंघ बिधि मान सम प्रगट्यो पुहमि प्रतापु ।

कृष्णदासु सुत तीसरौ कृष्ण भगत जिय आपु ॥४६॥

कान्ह नांम चौथौ तनुजु प्रगट्यो पुहमि धनेषु ।

भयो तेजसीं पांचयौ सुत गुन गनिन गनेषु ॥४७॥

बैरसलु छठयो सुथनु रच्यो बिरंचि संवारि ।

अमर बेलिसी यौंभई गांगा कुल बढ्यारि ॥४८॥

राउ गगा के जेठे राउ मालदेव टीका के धनी चक्रवर्ती राजा भए । असीहजार घोरा संग चढे तिनके बंस मैंह महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंघजू ...

राउ मालदेव को जन्म संवत्

पंद्रहसै अरु अरसठा १५६८ सवत की परमानु ।

राउ माल्यो ओतरयो बंस सरोरुह भांनु ॥४९॥

राव मालदेव की पाट बैठ को समतु

पद्रहसै अठानिवा सुभ नखत सुभ जोगु।
पाट बैठ नृप माल्यो कर्यो इन्द्र सम भोगु ॥५०॥

राउ मालदेव को वर्णन

छंद घनाक्षरी

राजा रांनां राइ उमराइनि सबनि सिर नाइनाइ पाइन करी सजीप सेवरी।
चक्रवर्ती भयो नबु तपत जो तथा मुअधमु वहिके गयो सुरलोकरिकी देवरी॥
जकीपाक भाइ तीर्थों निरति दकाइ आइ पहु की पद्मादर्शीय दावतइरेवरी।
निलीन हुनाइ छिति और जोगआइ अनी निमल नराइ माइगराउ मालदेवकी ॥५१॥

राउ मालदेव की धरती की विगति

दोहा

सोझत साभर मेरता माटू गढ वचनौर।
कोट लादनौ राइपुर भाद्राजण नागौर ॥५२॥
सीवानौगढ लोहगढ जपरन बीकानेर।
भीनमाल अरु पुहकरनु इन्दट नाहडमेर ॥५३॥
रैवासौ अरु वासनी जोजावर जालौर।
नू गण्मेर नाडूल अरु फलोधी सानौर ॥५४॥
डिंडवानों अरु चाटसु फतपुर अरनाइ।
सब धरती चौरासी रह माल्यौ राइ ॥५५॥
बीस भ रवर कोटरो और साभइ मांडु।
मारदि अरु वानौरपुर लयो माळदे राइ ॥५६॥
टूक टोडो अजमेरगढ जीति माल्यो बीर।
सब उमरावन कहँ तहा बाटि दई जागीर ॥५७॥
जीति जाजपुर उदैपुर परम तेज पहु चाइ।
राना कहँ रन माल्यो राख्यो धनि भजाइ ॥५८॥
अधी सहस चौरासियो राउ माल्यो आपु।
रवाचक सब रानि कहँ प्रगट्यो परम प्रतापु ॥५९॥
राम्योसहु दिसि मालनो मडोवर नारेसु।
माति करी नांगारनो राज्यो सिरोहो देसु ॥६०॥

पन्दर्भ रहस्य

मालदेव सम दूसरौ भयौ न भूपति और।
जिहि कुलमहँ जसवंतनृपु जगमगातु राठौर ॥६१॥

राउ मालदेव के आठ बेटा तिनकी विगत
जेठ राम १ उदैसिंघ २ चंद्रसेन ३ भोजराज ४ रतनसी ५ राइमल ६
विक्रमादित्य ७ भान ८ तिनके
दोहा

सकल लोकु अभिरामु इकु भयौ राम मग दामु।
उदैसिंह सुतु दूसरौ हुयौ सकल नृप धामु ॥६२॥
चंद्रसेन हू तीसरौ चौथौ रतनु महीपु।
भोज पांचयौ अरु छठौ राइमलु कुल दीपु ॥६३॥
विक्रम सम सुतु सातवौं भयौ विक्रमादित्य।
भानु आठयो भानुज्यौं नम्यौ दुअन कहँ नित्य ॥६४॥

राउ मालदे चंद्रसेन कहँ राजु दियौ। तब राम राना कौं उहां जाइ रहे।
उदैसिंघ अकबर पातसाह कहँ जाइ मिले चंद्रसेन सो जुद्ध कियौ
तहांकी कथा
दोहा

चंद्रसेन कहँ मालदौ दयौ जोधपुर राजु।
रांम अछत ज्यौं भरत कहँ दसरथ औध निवाजु ॥६५॥
रांमु गयौ रांना निकट उहै दुसह दुखु पाइ।
उदैसिंघ दिलेस कहँ सेये तापन आइ ॥६६॥
कछु दिन महँ सुरपुर गमनु कस्यौ मालदौ भूप।
चंद्रसेन भुगवन लग्यौ भूतल तात सरूप ॥६७॥
उदैसिंघ अरु राम तब दुहुन दुहुं दिसि धाइ।
चंद्रसेन नरनाथ कहँ घेस्यौ नगरु दबाइ ॥६८॥
चंद्रसेन नृप रांम सौं मेरु कस्यौ इहि और।
समर हेत धायो तहां उदैसिंघ जा ठौर ॥६९॥
ज्यौं अरजुन अरु करनु जुरि भीम दुजोधन बीर।
जुद्ध कस्यो त्यौं चंद्रनृप उदैसिंघ रनधीर ॥७०॥

उहू ओर दोऊ पखट नैंकु भई न हारि।
उदैसिंघ तब कछु दिननि रह्यौ रोसु मन मारि ॥७१॥

रांम कहँ सोभति दोनी चद्रसेन सौं सलाह भई

दोहा

रांम पाइ सोभत नगरु मानिलयो सतोषु।
चद्रसेन नरनाथ सौं कर्यो वैरतैं मोषु ॥७२॥

रांम क सात बेटा तिनको बिगति

महाबाहु बिरदैत मनि भए रामसुत सात।
जिनकी कीरति अजौंधनि होत हरष सुत गात ॥७३॥
प्रथम राउ पूरामल करनु करनुसम और।
कलारादि भूपति कह्यौ केसव कुल सिरमौर ॥७४॥
छठो नराइण औतर्यो बसुह बिमल जसु जासु।
महाबली सुत सातयौं गनियत राघवदासु ॥७५॥
नोली माहे सुष दयौ केसव कहँ दिलीसु।
अजौं विदित या बस महँ दछिन दिसि अवनीसु ॥७६॥

चद्रसेन के तीन बेटा

उग्रसेन १ आसकरन २ राइसिंघ ३ तिनकी बिगति

चद्रसेन अवनीस को उग्रसेन भए बीर।
आसकरन अरु औतर्यो राइसिंघ रणधीर ॥७७॥

आछई चंद्रसेन राजु दियो तब आसकरनु कहँ उग्रसेन मार्यौ आसकरण के पवान उग्रसेन कहँ मार्यौ तब उदैसिंघ कहँ अकबर पातिसाह राइ से मारवार को राजा कियो। राइसिंघ कहँ अकबर पातिसाह सिरोही पठयो। तहां राइसिंघ जूझे। तब मोटे राजा सिरोही पर चढे सिरोहीको राउ मार्यो सिरोही अपनी करैं पेसकसी लीनी सिरोही को राउ अपनो कै थाप्यो तहांको कथा

आसकरन कहँ आपनौं चद्रसेन दियौ राजु।
निकसुदित राजबस्यौ मान्य लोक समाजु ॥७८॥
उग्रसेननि अनुज कहँ दयौ कटारी जोर।
उग्रसेन कहँ दयौं चौधरीया राठौर ॥७९॥

उदैसिंघ कहँ छत्रपति दयौ जोधपुर गाऊं।
सबविधि मोस्यौ तबयस्यौ मोटा राजा नाऊ ॥८०॥
संवत् विक्रम नृपति कैं सोरैसैं चालीस।
उदैसिंघु राजा कस्यौ अकबर साह दिलीस ॥८१॥
पाई बापकी साहिबी व्है कमधज कुल ईस।
मारवार भुगवन लग्यौ उदैसिंघ अवनीस ॥८२॥

सोरठो

उदैसिंघ महिमेरु एक दिवस रनवास मह।
राइसिंघ कौ बैरु सौंरत जिय दुष्पित भयौ ॥८३॥

छंद पाधरी

आगिलें दिवस मोरु नरेस दल सज्यौ सिरोही विकटदेस ॥८४॥
जब चली सेन चतुरंग संग रथ सहत पयादे गज तुरंग ॥८५॥
तब सहस सेंसू कूरम समेत दल भारु भयो व्याकुल अचेत ॥८६॥
नभ धूरि पूरि मुदि गयौ भानु . चहुँ और मनहुँ तान्यौ वितानु ॥८७॥

दोहा

उदैसिंघ नग्नोथकी निकट अवाई होत।
आबू नाइक यौं भज्यौ ज्यौं तमु तरनि उदोत ॥८८॥

मोटे महाराज राइसिंघकी पुनीसि कोपु कस्यौ जैसौ भारथ कथानि गाईयतु हैं।
दिग्धगढ एकहीं हला हलायो जाइ जैसें तरवरु पौनकी हला हलाईयतु हैं॥
देसु दलमल्यौ दल्यौ बैरीकौ कटकु जसु छीरनिधि छोरलौं छबीलौ छाईयतु हैं।
ऐसैं उदैसिंघ आबूनाहतें उतास्यौ नीरु अजौं नीठि सलिलु सिरोही पाईयतु हैं ॥८९॥

दोहा

सदन सिरोही देस महँ सब सब ठौर ढहाइ।
सुजसु थंभलौं चौंहरे राये थिरु अपनाइ ॥९०॥

सोरठा

तीछन तेजु जनाइ उदैसिंघ नृप दयानिधि।
कलुक दंडु कबुलाइ थिरु थाप्यौ आबू तिलकु ॥९१॥

दोहा

आन आपनी चहु दिसि फेरि सिरोही देस।
उदैसिंघ राठौर मनि आये मारू देस ॥६२॥

उदैसिंघ के ग्यारह बेटा तिनमैं महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू

उदैसिंघ के बेटानि के नांव

दोहा

उदैसिंघ अवनीप सुत ग्यारह उदित उदार।
राजपती नृप सूर तहा मारू भुअ भरतार ॥६३॥
भयौ दूसरौ सुभट मनि किसनसिंघ भुज जोर।
अजौं विदिति वा वसमहँ रूपसिंघ राठौर ॥६४॥
सकतिसिंघ सुत तीसरौ चौथौ नरहरदास।
अंगेराज पचयौ छठौ भूपति तेज निवास ॥६५॥
जैतसिंघ सुत सातयौं अठयौं दल्पति राइ।
नवयौं मोहन अरु दसौं मार्धौ सत्य सुभाइ ॥६६॥
सुभग ग्यारहौं औतर्‌यौ भट भूपन भगवान।
मोटे राजा को वहुत इहिविधि वसवखान ॥६७॥

सब मँह टीका के धनी महाराजा सूरजसिंघ तिनकौ वर्णन

सूर्यसिंघ को जन्म को सवतु

संवत सोरहसैं वरप चौंती अठाईस।
उदैसिंघ घर औतरे सूरसिंघ अवनीस ॥६८॥

महाराजा सूरजसिंघ कौ पाट बैठे कौ सवतु

सोरहसैं अरु चावना सवतको सचार।
छत्रपति अकबर सूर सिर राख्यौ मारू भार ॥६९॥
सूरसिंघ नृप नीति रत राजुकर्‌यौ इहिरीति।
ह्यौं सहोदर अनुजहु देषत दगनि अनीति ॥७०१॥

गुजरातिकौ मुहीम महाराजा सूरसिंघ बहादुरसाहब कौं सिवरायौ तहांकी कथा

दोहा

तसमर्‌यौ गुजरात वस असी वाहादुर साहि।
दूरकर्‌यौ यह सूर सम सूरसिंघ नर नाह ॥१॥

सूरसिंघ कहँ छत्रपति अकबर साह नरेस।
पठयौ साह निजाम पर जीतन दछिन देस ॥२॥

छंद पाधरी

नृप सूरसिंघ दछिन पधारि जतुत्यौ सकल दुज्जन संघारि ॥३॥

दछिन की लराई महाराजा सूरजसिंघ तें तहां को वर्णन
छंद घनाछरी

दछिन मुंहीन मरदानें सूरसिंघ महामार कौ मचायौ तिपवारे रनरत है ॥
सोनितकी सरितां तरांनं रुंड मुंड जेते सिंधु वीचीं वीच जल जंतु विहरत हैं ॥

× × × × × ×

एते मांन आमिष अघांने पग आसमांन अजौं लौं अजीरनकी भावरें भवत है ॥४॥

महाराजाधिरज सूरजसिंघ के नाराइन आनदघन कौ रूप धरि आपु थाइ
बानु कियौ
दोहा

छत्र धर्म रत सत्व निधि सूरसिंघ अवनीसु।
यह विचारि आनंदघनु पगट भयौ जगदीसु ॥५॥

सूरजसिंघके द्वै बेटा जेठे महाराजाधिराज महाराजा श्रीगजसिंघजू
लहुरे सबलसिंघ
दोहा

सूरसिंघ उर औतर्‍यौ श्रीगजसिंघ नरेसु।
जिन भोगियौ सुरेस सम निरुपम मारू देसु ॥६॥
और मातु उर औतर्‍यौ सबलसिंघ सुनु धीर।
बाहुबलीरण बांकुरौ ग्याता गुननि गंभीर ॥७॥

महाराजा सूरसिंघ देवलोक वास कियौ तब कौ संवतु

सोरह नईं छिहंतरा सूरसिंघ नृप जांनु।
राजु भुगे चोवीस वरष सुरपुर कियौ प्रयांनु ॥८॥

महाराजाधिराजा महाराज श्री गजसिंहजी कौ जन्म सवतु

सोरहसैं अरु बांवना सुभ संवतु परवेसु।
सूरसिंघ उर औतर्‍यौ श्रीगजसिंघ नरेसु ॥६॥

महाराजाधिराज महाराजा श्रीगजसिंघजी कौ वर्णन

घनाक्षरी छंद

आपकैं अछाकु अरावनु सभारिआपु जालौर पधारि रिपुसेना विचलाई है।
पाई बहादीरकी रजाइ सिंह नाइ साहिजहाँहू सौं वारएक लराइ मचाई है॥
दिलीपति हेत जहाँ जहाँ कामु पर्यौ तहाँ पारथलौं लर्यौ मसौ कोऊ न सहाइ हैं।
छीरनिधि छौर लौं छबीली छहुँरितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाइ है।।१०॥
हार देदे हीर देदे चामीकरु चीर देदे हाथी देदे दीन विपति बहाई है।
परदल पलें आपु समर अकेलेमहा जोहुवर वलिकी भिरी परनाइ है॥
दलपति देय द्विज दिलीपति मिलु जिहि सपनेहु याद् वहूँ गीवन नवाई हैं।
छीरनिधि छौरलौं छबीलो छहू रितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाइ है।।११।
उपवन लाए कूप तलाइ बनाए दिजदेव अघवाए अघवासना मिटाई हैं।
धौहरे कराए महादुरग विमराए मेटे संकट पराए प्रतिपाल सरनाइ हैं॥
अहित नसाए हितवरग बसाए हितछली निकसाए नीति इहाँलौं चलाई है।
छीरनिधि छौरलौं छबीली छहुँरितु गजसिंघजू की जसकी निकाई छिति छाई है।।१२॥
चाही अनचाही टेक आपनी निबाही पातिसाही हू सराही ऐसी करी ठकुराई है।
चपेते गवाही रन रीझि एसि पाइ सिधुसीव अवगाही धाक तहाँलौं जगाइ हैं।
दयौ नेक नाही कर्यो महाप्रभुताही जाकी दादनी छमाइ और भूपकी रजाइ है॥
छीरनिधि छौर लौं छबीलीछहुँरितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाई है॥१३॥

दोहा

श्रीगजसिंघ नरिंदके अगनित महल समाजु। -
पटरानी रुकमावती जिहि जनम्यौं जसराजु॥१४॥
सोनिगरी उर औतर्यो महाराउ अमरेसु।
आपुजिय गजसिंघनृप वाकौं दयौ - विदेसु॥१५॥

अमरसिंघ आंवपाम मदें सलावतवां कहूँ मार्यो आपुहू जूझे तहांको

कवितु

आमखास आलमपनाह सनमुख घोले बखसी कुबोलनि कुभाति सतराइ कैं।
आपीही जवानी महामांनी अमरेस मार्यो एकही कटारी सूरु सलावत धाइ कैं॥

पाछै पाछै आपुहूं पधारयौ सुपुर तब गायौ सब लोगनि उकति उपगाइकैं ।
जान्यौ जिय अंतर मिट्यौ न सोमु गई जाइ दैहै जमलोकहु उजाइ पुनि साईकैं ॥१६॥

श्रीमहाराजा श्री गजसिंघजू के महाराजा श्री जसवंतसिंघजू
टीका के भये तिनको जन्म संवतु

संवत सोरह सै ब्यारि असी बितीत तब ।
बर बुर्हानपुर सहर मध्य प्रगट्यौ सुजाम तब ॥
मगत माह तिथि जोग समय मध्यान्ह अभिजित ।
नागहण चक्रवान लगन लिखिय बिचारि चित ॥
सुभ जोगु करनु सुभ सुभ नखतु सुभ अरु सुभ तागादि वह ।
गजसिंघ रानि रक्मावती सुतजायौ जसो जुगजुगअमरु ॥१७॥

राजागजसिंघ के स्वर्गबास को संवतु

सोरहसै पचानवा बीतत लागत मानु ।
श्रीगजसिंघ छितीसमनि कयो देवपुर बानु ॥१८॥

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजी के पाट बैठे को संवतु

पंचानवा असाढ बदि शुक्र सतमी माह ।
तिलक कर्यौ जसराजसिर मालिजहा नरनाह ॥१९॥

महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंहजू को वर्णन
प्रथम आसीर्वाद

जौं लगि तरनि तारायनु तारापथु थिरु जौंलगि पवनु पय पावकु पुहमिवर ।
जौंलौं अलका निवासु करतु कुवेरु कयलास कामरिपु कनकाचल बसैं अमर ॥
जौंलौं चार्यौं वरनविदित चार्यौं वेदवानी रामराजधानी कीरति गावतिनर ।
मारवारधनी गजसिंघको सपूतु तौंलौं जसवंतसिंघ चिरजी वहू जगतपर ॥१९॥
जौंलौं सातौं समुद सुमेरु सुरतरु जौंलौं जौंलौभुअ भारु सेस सीसतें न टरहैं ।
जौंलौं अमरावती उदित मघवान रहैं जौं लगि अवनि अवतारधरैं हरि हैं ॥
दलपति परम पुनीत चार्यौं वेद जौंलौं जौंलौं गिरराज पर मनमथ अरि हैं ।
तौंलौं चिरजीवौ महाराजा जसवंतसिंघु जौंलौं ससिभानु भानुसुता सुरसरी हैं ॥२०॥

श्रीमहाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को जन्म स्तुति

वरष वरष प्रगटनु उहैं मासु पाप पाप तिथि आठयें दिवस चार भोगु है ।
अठाईस दिन उहैं नषतु परतु प्रतिदिन उहै लगन धरतु सब लोगु हैं ॥

दम्पति गनक गात उहै रितु वाही राति ग्वनीग्रहु को होइ अवियोगु है ।
जिहि जोगु जाग्यो जबकौ जसुराज एकु नहु स्यौं न दूसरे जनायौ वह जोगु है ॥२१॥

श्रीमद्राजाधिराज महाराजा श्रीजसवतसिंघजू के वर्णनमहँ पूर्व पुरुषनि की सिंघावलोकन

घनाउरी छंद

प्रथम पुरुष निरगुन जगदीस जिन सगुन सरूप सबु ससार रचायौ है ।
वहु स्यौं विरंचि नाभि कौलतैं प्रगटयेक लोकनि रचत लोक नाइक कहायौ है ॥
महाग्यान रिधि सिधि मनसा मरीच भयौ प्रजापति कश्यपु सपूतु जिहि पायौ है ।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जसवतसिंघु जायौ है ॥२२॥
पूरन प्रतापनिधि प्रगट्यो दिनेश जिहि आपनी किरन लोक तिमर नसायौ है ।
मान महोदधि और औतर्यो महीपुमनु अजर अमर जिहि वस नगरायौ है ॥
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जसवतसिंघु जायौ है ॥२३॥
भयौ मानधाता एकु दूसरो विधाता पिता माता ज्यौं प्रजानि जिहि सुपथ चलायौ है ।
सत्यव्रतु नंद भयौ भूपु हरिचंदु जिहि सग्यौ सुपच दंडु तऊ सतु न डुलायौ है ॥
महिमा महिंदु भयो रोहितु नरिंदु जाने नाइ रोहितासुगढु अगम बनायौ है ।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जसवतसिंघ जायौ है ॥२४॥
सगर की रिसनी सुर नगर सिधार्यो एकु सगर महीपु जिहि सागरु खनायौ है ।
भूमि कौ भूषन भयौ भूप भगीरथु आपु नाक नदी ल्याइ जग तापुन घटायौ है ॥
नृपति दिलीपु दान दीप कौ नवीन ह्वै कै आपुनौ प्रतापु इन्द्रलोक पहुचायौ है ।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जसवतसिंघ जायौ है ॥२५॥
धनपती यौं कुल मंडनु महीपु रघु चार्यो चक कीति जिहि सुजसु कमायौ है ।
अज भयो भूपु एकु सिधुरसरूप देव गधर्व हरार्यो निज प्रकृति रमायौ है ॥
कौशल अधिप नृप दशरथराइ सुर साकरे सहाइ ह्वै कै साकरो टिरायौ है ।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजाजसवतसिंघ जायौ है ॥२६॥
परम पुरुष आनु औतरे त्रिलोकराम राजा दानदेत वारिधि बधायौ है ।
कुस एक दाऊ रघुनंदन कुँवर जिन आनन्दसा लयौ जसु तातैं सवायौ है ॥
दम्पति आग आर्ग आपने सुरनि साथ नाद्रेको सवनि सुमासु बिराजायौ है
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जसवतसिंघ जायौ है ॥२७॥
दच्छिन दिलीसु दिगपाल सम एकराजो भरत महीप निज भौन बसायौ है ।

पुंज पुहमीस पुरहूत की वडाइ अभोगत पाइ कुल कलंस चढायौ है।
बंभ धरणीस तात सुता सुताहि काबुली गुजरात देसु दैकै भलो वाईकौ मनायौ है।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेंज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥२८॥

अभैचंद सुत महावीर विजैचंद कुलचंद व्है दुअनकौं लोकु सोक तायौ है।
अमीलाय जोधनि समेत जयचंदनृप पेलत सिकारु मेरु मंदरु हिलायौ है॥
संतति निधान महाजान वरदाइसेन सुजस वितानु जगमंडल तनायौ है।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥२९॥

लोक अभिराम सुषधाम सीतराम राजु करत कनौज काहूं कोऊ न संतायो है।
जयसिंह हेत कपिकेत समसीहा लायौ फूलानी हनत महा मार कौ मचायौ है॥
आसथान राउ.........लौत गन मारि पेड नगरु पधारि नाऊ पेडचा......... ।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेज वाही वंस राजाजसवंतसिंघ जायौ है ॥३०॥

कर्णाट जाइ कुलदेवी पधराइ...........इहनाउराउ धूहड चलायौ हैं।
भयौ भुअपालु रैयागड राइपालु मही रैलनि नकसि मही रैलनु कहायौ हैं ॥
दलपति कान्ह सम कान्हर नरिंद करतूति नु विमल जस पुंजु छिति छायौ है॥
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेंज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ हैं ॥३१॥

सूरसिर मौर राइ जाल्हण नरिंद भुज जोरि जिहि जोरु जोरावरहिं जनायौ है।
छाडाछिति नांह वाप दादेकी छाहँ तेज दाह दुअननि निज दंडुक बुलायौ है॥
राठौर टिकेत राउ टीडा विरदेत वीर षेतक पैंचाउ चित चौगुनौं चढायौ है।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥३२॥

औतर्यौ अमर सम सलपा सपूतु जिहि जंग जुरे जालौर नरिंदु विचलायौ है।
महावीर वीरम विरचि बाहु जोर जाई जोइकु महीपु जमलोकहीं पठायौ हैं॥
वसु दैदे वासु दैदे वास वसमान राइ चौंडा मारु मंडल प्रजानि अघवायौ है।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥३३॥

रनमल राइ गढ सोनगिरि जाइ ल्याइ डेंडुसे दुअन गनु कुर्वन तुरायो हैं।
चितौर सिधाइ महा जोधा जोधराइ राँना कूंभा विचलाइ वैरु बापको वहायौ है॥
सूजा रैयाराइ छिति छत्री वपु पाइ महा सांकरौ नसाइ सरनागत वचायौ है ।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रेग वाही वंस राजाजसवंतसिंघु जायौ है ॥३४॥

महा बलवान निरदैत राइ बाधा आपु जाको प्रतापु छिति चौगुनौं नढायो है।
दौलति गनीम सौं भिरत राइ गांगा कुमु जाननि विदारि मुक्तानि गु छायो है॥
माल्यौ महीपु अमीहजार कटकु जोरि औरन पै देसु बरजोरनि छुडायो हैं।
वाही तप याही तेज वाही रस वाही रंग वाही धम राजा जसवतसिंघु जायो है॥३५॥
उदित प्रतापु उदैसिंघ नरनाँह बैर पाछुनौ सिरोहीपति गरद मिलायो हैं।
दछिन मुहीम मरदाने सूरसिंघ सनु दछिनी कटक पाछु पाछु के उडायो है॥
गरीब निवाज माहाराजा गजसिंघ गजराजनि की मौज दुनीन्तर दुरुगायो है।
वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंग वाही वत राजा जसवतसिंघु नायो है॥३६॥

महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवतसिंघजू को जस वर्णनु

सरद निसाकी ससि आवरी करत निदरत वारू बरन मराल मानसरके।
मींडत मृनालनि मलत मुकुतानि सकुचावत सरोजनि हरत हास हरके॥
दलपति नाघत पयोधि नारपार जिहैं हेरे बसनुइ जवत नर वरके॥३७॥
पायो हिमगिरि एक हाथ को नलयबिनु दूसरो बलय दये नैंकुन थिराऊ है।
छीरधि छबीलो पटु पहिरयो सधारितन करत बसन औदनकी ल्लचाति हैं।
दलपति मुथारक यांकी भूषनु और वाको भूषनु अनभये अकुलाति हैं॥
राजा जसवतसिंघ रावरी कीरति आभ रनिति वैकें दूरिदूरि जाति हैं॥३८॥
सुपरतु साधि सुभ थालाधिव वैकें दीन सकल महदेके छरितु सिधाइ हैं।
दलपति मर्यो करि याक आवरणु याते रिपुनकी आंच नेक लागन न पाई हैं।
दिन दिन फूलत फलत बिगसत नागलोक अरदंलि सुरलोक साथा धाई हैं॥
राठौर तिलक महाराजा जसवत अैसी रावरी कीरति बेलि सोहत सुहाइ हैं॥३९॥
सुधारत नहीं सुराक्रय नरल पदीं न देव तुरगमु देव तुरगमु पसु हैं॥
छीरनिधि मथ्यो जगदीस तामरसु सूर आंथये वधतु तामरसु हैं।
तिपुरारि तनु तिपुरारि तनु आयो हिमगिरि हिमागरि न चन्दु बिना असु हैं॥
करयो न परतु महाराजा जसवतसिंघ अैसो अनुपम चारु तिहारो सुजसु हैं॥४०॥

महाराजा श्रीजसवतसिंघजू को प्रताप वर्णन

पलु पट नातुं गनीम की सेना सिंधु पूरा रहतु निधनु न धरायो हैं।
सरयो न परतु एक ठौर न समतु अरि नागिन कनेर जल जातु न तुभायो है॥

कैधौं अनुमान विचार्यो कोविदिनि मार चाप के गुननि लैकैं विधिहीं बनायो है।
राजा जसवंतसिंह रावरो प्रतापु वीसविसैं वड़वानल सो बीजुरी को जायो है ॥४१॥
सेंघविनु सुअन नवंतहू कैं आगें पसु इंद्रके ओथेयें इंद्र लोक होतु सूनो है।
ईस उर जायौ एकु लाइकु कुमार गायौ सेना में नाइकु तऊ तातहीतें ऊनो है ॥
दलपति कहा तहां वेदनि बखान्यों देव नाइके सपूतु पितु गुननि विहूनों है।
मारु कैं तिलक महाराजा जसराज वेसैं आपहू तें प्रगट्यो प्रतापु दूनों है ॥४२॥
मारुके महीप गजसिंह तनैं तेरो वर चपनुविकटु ममु आलमु सिरतु है।
दलपति सकल दिसानि विदिसानि तेरी अकथ कथानि हेरे हरषतु गातु है ॥
तूल तिन भूरुह लतानि पजरतु परसत जतु पाछैं ओंह पावकु बुझातु है।
जसवंतसिंह की प्रतापकी अगनि जलधारोहैं जरतु तिनवारो सियरातु है ॥४३॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को गुन वर्णन

जियवसैं सूरता उदारता बसति चित्त नैंननि नवनि नित बैंननि भलाई है।
भागु बसैं भाल अनुराग वसैं आननिमें भुजनि प्रतापु तन अंगनि निकाई है ॥
औरनि के वपु बीच दोषनि कियो वसैरो तिन ढिंग वसें दलपति लघुताई है।
इहै करतारसौं निहोरि जसवंततनैं मानौं गुन गननि मिल्कि करिपाई है ॥४४॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू की दाहिणो बाहू वर्णन

किधौं तेजक तपन उदोत को अचलुनीरं आवत कदतु दुअननि तन दाहु है।
किधौं द्विज आपद पयोनिधि तरनु सेतु किधौं दांनपेतु देतु मनोरथ लाहु है ॥
किधौं दलपति राजसिरी कौ सदन पसु देषत दगनि उपजावतु उछाहु है।
किधौं जग जुरै नयकरीको निगडु किधौं राजा जसवंत को छवीलो वरबाहु है ॥४५॥

नेत्रादि वर्णन

नैंकु निहारि दुप दारुण हरत सुप सिंधु वितरत तौलौंय न लजात है।
महा बलबाहु रन जेतु पत्रु लैकैं आपनैं के रिपुराजनि अभय देत जात है ॥
दलपति आगें गुन श्रोनन सुनत द्विज देवनि गुनत उर वासर विहात है।
जसवंतसिंघ नौंहू रसनि रसीले सरमीले ऐसे रावरे रजीले सुभ गात है ॥४६॥
मनोरथ दानि महाराजा जसवंतसिंघु भूपतु बनायो विधि भूतल सकल को।
कहै दलपति तेज दहति दिगंतपति पावतन पुहमि उछाहु एक पल को ॥

साहि सोहै मगन मुदित मन होत जैसें तरनि उदोत तनु फूल्यु कमल को ।
साहसकी सींव सत सील को उदधि हिंदुवान को जिहाजु जैतवार पर दल को ॥४७॥
कह्यौ न परतु महाराजा जसवंत तुम कौंन विधि पूरन परम तपु सच्यौ है ।
बडे कुल जनमु बडाई बडी बडौभागु बडे तेज तीछन दुभन गनुतच्यौ है ॥
तो तनु बनावत विमल बुधि लैकैं बहु करतानि कैकैं जगदीस जिय पच्यौ है ।
तेरोई मसोदा पाकसासनु सजाग्यौ आगें पाछैं चतुरानन चतुर तोहि रच्यौ है ॥४८॥
तेरे गुनगायें गुनी गायीयतु जैसा तैसा तेरे आगपायें नीकी लागति लिकाई है ।
तेरी जानपनी जांनपनी अतिमोंहीयति तेरे राज महाराज राजति रजाई है ॥
दलपति जगत जसीले जसवंतसिंघ तेरेसेयें साहिकी साहिबी पति पाई है ।
और भूपनिकी वसुमती तें बडाई भई तिहारी बडाई वसुमतीकी बडाई है ॥४९॥
राजा जसवंतसिंघ तेरे जस आगे लागें फीके जस जनकज आदि पृथु नलके ।
कईयौ लाप मगन रहत द्वार घेरे तेरे लायनि पै पालसे परव एक पलके ॥
दलपति परम धरमसिंधु सेतधारा धरमनिकेत कविनेस बाहु बलके ।
मौज महोदधि महि मडल महीपमनि मारवार साहिब सिंगार साहि दलके ॥५०॥
बडे दुग दराने मगाहक बसुह बीच बडे बल वासर करैया सत जागके ।
बडे राठौर बडे बीरन के जैतवार बडे आन भूपन जनैया रग रागके ॥
बडे गुनगाहक जसीले जमराज रायवया दलपति वसुमतीके सुहागके ।
बेटा बडे बापके बडेरे बडे मैयनि में बडे मारू देसके नरेस बडे भागके ॥५१॥
भूप सिरताज गुन गरीबनिवाज हिंदुवाण के जहाज सिंधुराज सिरमनीके ।
आपदाहरन कर करी करन असरनके सरन सुष दायक धरनीके ॥
मारु पे सिंगार महाराजा जसराज राजै रयैया भारी भीरके सहैया मसुमैया जांनपनीके ॥५२॥
गजसिंघ नदन जसीले जसराज नीके लागत बहुह सब गुननि समेत हो ।
सीलके सदन नीति पथके चदन वनितानिके मदन वानि कों कवि चेतु हो ॥
दम्पति मधि पूरधि लेके अमर आनि औतरे अनि द्विज दीननिके हेत हो ।
कहा अचरजु इन बाता को आहि जोवें बडे कुल नाम बडाइ बडी लेत हो ॥५३॥
तूही मोन विक्रमके आयये जसमुमीनों तेरीकर कीरति अपार छिति छाइ है ।
तेरी तकि साहिबी सि हात नराथ सब तेरी नांम पदवी सुरेसहू न पाइ है ॥

कहैं दलपति महाराज जसवंतसिंघ लाज तेग त्याग की तिहारे बांट आई है।
तेरौ जु सुभाउ सु बड़ाई बड़ी लोगनिकी तेरौ एकु रीझु और राजाकी रजाई है ॥५४॥
सुनयतु सुघरी बिलोकि गजसिंघ तनैं औतर्यौ अवनि सब देसको सिंगार है।
जाकी करतूति की सराह होति सादि दिग जाके जानपनी को न्यौंन काहूँ पार है॥
कहैं दलपति महाराज जसवंतसिंघ तोहि रचि गयौ सुचित करतार है।
अरि दल दलिवे कौं दाहिवे दीन दुख दान करि वारिकौं तिहारे सिन भार है ॥५५॥
गजसिंघ तनैं महाराजा जसवंतसिंघ और भूपनि की मौजनि मजेसु मारिलेत हौ।
हीर हार हैवर रतन चीर चामीकर बकसत ग्रासवलौं संपति निकेत हौ॥
दलपति लायनि लपत रनजाचकनि बरषन बान बहुकति समेत हौ।
पाछिलौं नृपनि घर भैसौजै दे दांन तुम डअननि बिनु भौं भयें देत हौ ॥५६॥
राजा जसराज तेरौ जानपनौं केके बिधि उहै छांडलेके बन दूसरो भनायो है
बहुर्यौं बनुंह रच्यौ रावरौ प्रतापु तिहि तेजकौं तनकु टूकु पूषनौं जनायौ है॥
कहैं दलपति तेरे गुन भव पूरि सेषभागु दूरि दूरि और लोकनि सनायो है।
ऊजरौ अनूपम तिहारौ जसु कस्यौ उबरनु उबर्यौ सु बिधु मंडल बनायौ है ॥५७॥

श्रीमहाराजकी मौज वर्णन

संपति सहित पुरहूत सेवि संपैसब होहीहोहां देपैंए साहिब कोऊ नए हैं।
दलपति आछे असवार आसपास चौर ढारत पवास मुकुताहलनि छए हैं॥
गजसिंघ नंदन की अमित मौजराइ पाइ जाइजाइ लोगनि दराइ देस लए हैं।
जेहां के महीप जेहा मंगन कहा तेहां जसवंतसिंघके भिखारी भूप भए हैं ॥५८॥
आछे आछे ऊजरे अनूप असवार संग सौंधे सरमगे बर बसन लसे घनें।
भूषन जराइ जेर सोहत निसांनपरे मोदभरे आगें छरीदार छबिसौं बनें॥
दलपति देषत कुबेर सम जाचकनि धाइ धाइ नेरे तट पूछत जनें जनें।
किधौं काहू दीपके महीप चलेजात किधौं जसवंतसिंघके निवाजे महि मागनें ॥५९॥

पंधार की मुहीम महँ महाराजा जसवंतसिंघ कहँ पातिसाहि हजूर राप्यौ तहां कौ
कवित्तु

आपुनौं कटकु तोलिवेकौं पातिसाह आपु पंधार मुहीम तुला चातुरी जनाई है।
एक ओर राप्यो महाराजा जसवंतसिंघु एकु ओर कुले हिंदुवान पहुंचाई है॥

दल्पति तुरग दिसि धरा भाऊ धर्यौ दुहू ठौर अटक्यौ फेहा क्तिीक भराई है।
साहिजहां आर्यौं सब जगत वर्यो वोभ्रू भैहा अधिकां यौंततौ बैहा हराई है ॥६०॥
धार्यौ चक्लैत फिस्यौ साागत चकता वर्नौ कैयो सालजागैं नेकु आलसु पनागौ हैं।
पछिनी नरेस तौलौं प्रथम पराइ पाछैं आपुहीकौ आपनी वतन पहु चायौ हैं॥
तहां साहिजहां उमराइनि पठाइवे तमाइन्हैकैं काबिल हवाइ जाइ छायौ है।
वेसी थांकी ठौर महाराजा जसवतसिंघ हीकी चोकीसौयें आलम पनाह सचुपायौ हैं ॥६१॥

साहिजहां पातिसाह पोहकरनु बकस्यौ तहां को वर्णन

दोहा

सात अधिक सत्रह सइ रितु बसत मधुमासु।
साहिजहा जसराज कहँ दिअ पुहकरनु मवासु ॥६२॥

महाराजा को देस आगमन वर्णन

एकेंधर धर नारि अनुहारि उर एकैं अनुरागकी उमग आग पुन्कु जगावहीं।
एकैं तिय आवनी सहेलीन समीप लाय भाति भाति अभिलाष कैकैं आनद बढावहीं॥
दल्पति एकैं अवलोकन की चौंप धार बार अकुलाइ धाइ झरोखनि आवहीं।
आवन सुनत महाराजा जसवतसिंघ नगर नागरी ऐसैं दिन नहरावहीं ॥६३॥
एकनिअगाऊरसनिध अनगाह्योतियएकनि उमाह्यौ फेंकें आरतौ उतार्यौ है।
एकैं ग्रनि सभ्रम सहित उठिधाई ओढि औरकौ नमनु तन आनी मितार्यौ है॥
दलपति एकैं जसवतसिंघ हेत पलकनि के पावुडे बर्णनि भयु भार्यौ है।
कहो न परतु नागरीन को उछाहु आजु लावरी नगरमहाराजु पाउ धार्यौ है ॥६४॥
अगारु पगारु चारु चौहटा बजार द्वार दहु दिसि देषन अमित जन धाए हैं।
हाथी हय चीर चामीकर पाइ पाइ दिसवदी चारन विविध गुन गाए हैं॥
दलपति जसवतसिंघहि निहारि नरनारिन के नैन मोद महोदधि न्हाए हैं।
कौतुकनि छायौ अमरानी की सगाजु आजु लावरी नगर महाराजुआजु आए हैं ॥६५॥

अथ महाराजाधिराज को देस वर्णन

नगर नागरी पर सुदरी अनूप व्योम जानकीधवल धौर हरनि निकाइ हैं।
उपवनु बदनु छवितु रमणीय बाउली तलाइ कूपनिकी सुधार्यौ मधुराइ हैं॥
दल्पति जेहां हैं गाइन हाहा हूहू उमराइन छाजति देवतानि की बडाइ हैं।
राना जसवतसिंघ की सुनत आमदनी मारवार भर्यौ इंद्र अमरावती पडाइ हैं ॥६५॥

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू पोकरन पर फौजैं पठई तहां की विगति

दोहा

सात अधिक सत्रै सई श्रुक (शुद्ध) तीज आसोज ।
भाटिन पर जसराज नृप पठई आपनी फौज ॥६६॥
चहूँ ओर राठौर दल उमड्यौ अमित अपार ।
तहां नृपति जसराज किय तीनि फौज सिरदार ॥६७॥

छंद पाधरी

मेरत्तियन महँ सोभा निवासु सुंदरदासोत गुपालदासु ॥६८॥
गोपालदासु सुतु महाधीर चांपावत वीठलदास वीर ॥६९॥
कूंपावत राजसिंघोतु जानु नाहर खानु पारथ समानु ॥७०॥
हुजदार तीनि तहं तिहू ठौर सिंघवी पतापमलु एक ओर ॥७१॥
एक संग भंडारी जगन्नाथ मुहणोत नैणसी एक साथ ॥७२॥
एक संग पंचोली मदनदास सब सरवराह महँ तिहूं पास ॥७३॥

श्रीमहाराजाधिराज महाराजा जसवंतसिंघजू की फौजनि को पयानौ वर्णनु

घनाछरी छंद

चल चमूं अपार सेस होत वेसम्हार धौंसाकी धुकार सुनि सिखुन पगनें हैं ।
बेगे रन रूरे सूर साहसी सबल सब सुनत पयानौ दिगपाल बिलताने हैं ॥
आसमान छार छए दरिया दहलि गए पब्बई पिमान भए दाले थिरु थानैं हैं ।
सोकै सुरलोग नागलोक नरलोक पर राजा जसवंतसिंघ कापर रिसाने हैं ॥७४॥

दोहा

पून्यौं तिथि आसोज की तीन्यौं फौज पधारि ।
नगर पुहकरन चहूं दिसि गही कोटकी वारि ॥७५॥
इहि विधि जब जसराज नृप पहुंचायौ निज तेजु ।
मांगि धर्मपथु कोट महँ भाटिन तज्यौ मजेजु ॥७६॥
सात अधिक सत्रह सई कातिक छठि सनिवारु ।
तजी पुहकरन जादवनि मांग्यौं धर्म दुवारि ॥७७॥
जूझे भाटी समर महँ वारह भट अयतंतु ।
दसन बीच तिनका गह्यौ और सकल जदुवंतु ॥७८॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को जोतिके कवित्तु पुहकरन बाबत

घनाछरी छंद

गारुरे तिलक महाराजा जसराज तेरी तेज आंच दुअ्सु तिनुकालों दरतु है।
सब सगु चाहतु विधातहीकी चाह एक तेरोचित चाहहि विधातऊ चहतु हैं ॥
कालकी गिनाई पुहरकन छहाई रिपु सिरी पारिनाई जस आलमु कहतु है।
भाटिन के तेरी डर लागोई रहतु जैसें आवरेकी आंपति अबेरोंही रहतु हैं ॥७६॥
मारुके महिद महाराजनिके राजा तेरो बपतु सराहृयो साहिजहा पातिसाह हैं।
उदंसिंघ सूरसिंघ देषन पाइ जहा गाँव न दबाई गजसिंघ ,नरनाह है ॥
जद, जसराज को प्रतापु ऑपु कुरयो तब भाटी माज दुरयो सोक सागर अथाह है।
बैरिन कौं तेरो डर भागेहू रहतु जैसें पाछे देत पूनतु परति आगे छाह है ॥८०॥
रावनकी बार बनचरनि सहाइ लैकैं रामु ,रनु कर्यो गाईयतु दुपरतु हैं।
पारथ हू करतु सघालो छर बल बह अपजसु भारथ अजौं लो सचरतु है ॥
दलपति जगत जनीलें जसराज तोमैं जहां कहा महारिपु मारको ,परतु हैं।
तननें अगाऊ तेरो तजु पहुचतु तहा तेजहूतें बपतु अगाऊकी लरतु है ॥८१॥

सत्रुकी सपत्ति अभिमारिका नाइकाकरि वर्णन तिहको

कवित्तु

कारे कारे कुंजर निहारे जलधरसम सुनि गरजनि धुनि गोलाकी आवाजकी।
मद दुर दिसु दहूँ दिसि दलपति दीह दामिनी दमकनि सूर साजकी ॥
आपनें सुहृत सिय अजत अवेरो अवलोकि गुंजानि कीनी मुकुत लाजकी।
समर सामुहे महाराजा जसराज तेरें अभिसरी सपत्ति रमनि रिपु राजकी ॥८२॥
षीस विसें जगत षषत जसवंतसिंघ गुन गन भौंरलौं अमर गुंजरत हैं।
तेरेही सुमन और भूपति सुमन सम पातक विहातु बातु बसुधा करत हैं ॥
दलपति इहालौं निवाह के निवत होतु नांव देत मानिनीके मान बिसरत हैं।
तेरो धनु धवुननो या रिपु राज नरनांहहीं वचत कठिनाइ निभरत है ॥८३॥
सब बिधि राजतु रजोलो जसवंतसिंघु उथपन थापन बिरदु छिति छाइकें।
जारी बांह छांह छत्रधारी नरनाह आइ जगत अगाऊ छत्रछांह बिसराइकैं ॥
रामचंद भांतिहि उतारि नरनाहो या पो घटुवा सघनसिंघु ‘ऐसें अपनाइकैं।
ऐसें रिनुराजु षतु पाछिलौनिभारि बेहा आपनोई थातु पठीया पठुराईकैं ॥८४॥

सत्रुनकी स्त्रीनकौ परावनौ वर्णनु

वीर वर देत जसवंत तेरे वैरिन की वेअरैं वननि विललाती है।
दलपति दीरघ पहारनि चढति नेसम्हारव्हैकै लटकि लतानि लपटाती है।
नाहकी बिसारी विरहानल दूसह जारी सीतल उज्यारीहूं न नेंकुक सीराती है।
भीलनकी भामिनीन बूझती नवोढानारि अैहां हिमकरकी किरन होत तातीहै ॥८५

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू के हुजदारनकी विगति

दोहा

ग्यारह पीढिनि कौ सदा पंचोलिन को वासु।
स्वामि भगत सिरदार है वरु माहणदासु ॥८६॥
वलू कहैं जसराज नृप जांनि बुद्धिकौ धांमु।
हुकम कर्‌यौ मारूधनी सजु दीवानकौ कांमु ॥८७॥

महाराजा जसवतसिंघजू के हाथीनकौ वर्णन

धूरिसौं धुंरेठे धराधरसे धजारे धाराधरसे अखित सदा मद वरसत हैं।
सीसभवैं भौंर चारु सोहत कपोल चौंर सौंनेहीके साज सव सौंनेही लसत है॥
कहैं दलपति दुज्जननि कौ दलत दावि दौरत दृहलौं पौंनहू सौं धसत हैं।
लापनि लहत लपपती ललचात लपि अैसे हाथी राजा जसराज वकसत हैं ॥८८॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू के घोरनि को वर्णन

अैसे घोरे देहैं महाराजा जसवतसिंघु दिनदिन भरतु भिपारिन कौ भौंनु है।
थरकतु गातु देषें जगतु सिहातु जलपति ललचातु न छितीस अैसौ कौनु हैं॥
दौरन कुलाचनि दिगंतनि दरत भुअ पाइन धरत अंतरि छुरत गौंनु हैं।
मन उपजाइ किधौंइन उपजायौ मनु पौंनके पढाए कि पढायौ इन पौंनु है ॥८९॥
केसें पेज पूजतु अनूरु कौ अनुजु एतौ ऊरुजुत सहज सुभग रंग गातु हैं।
दलपति जिन भोग वल मनु वांध्यौ वे मुनींस इनकह लालसति ललचात हैं॥
गोनु निरषत यौं सुमोनु व्है रहतु वह पौंनु पाइ एतौ लाप पाइनि उडात हैं।
गीत गुन गाइ जसराजहि रिझाइ आइ अस हय भूतल भिपारी लैलै जात हैं ॥९०॥

सवैया

चारु उतग कुरंगलौं कूदत गौंन किये मनु पौंन नए हैं।
वेस नवीन नचे नटसे तन जान जर्‌यौ जरवाफ छए हैं॥

गोल अमोलकनार परे मनौ नामव पँचक सौंप टए है।
साह सिदास लषे जिवेगुन ते हय श्री जसराज दए है ॥६१॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को महल सुख वर्णन

दोहा

पतिव्रता जसराजकी रानी पिय सुख दानि।
हाडी कछवाही गवरि जदुवसनि चौहानि ॥६२॥
रूप प्रजासनि अगनित सकल कलानि प्रवीन।
जिनि रिझयो जसराज नृप जाकहूँ अनु आधीन ॥६३॥
पोथी रस रतनावली ज्यों नवरस विस्तारु।
हुवा वरनतु बछेराही नृप विहारु सिंगारु ॥६४॥

स्वाधीन पतिका सौं सखीको उक्ति

घनाछरी छन्द

सपत पयोधि सप्ताचल सप्तलोक सात पताल जाकी तेज आनतए हैं।
जाकी नित नाह नित चाहतु जगतु जि दिलीस अदियानिकी पुतरी बीच छए हैं॥
दलनि जाकी अगनित मौजे पाइ पाइ जाचकनि आइ पुरहूत सुपठये हैं।
रूप मानिग महाराजा जसवंतसिंघ मागनि घनेरें आली तेरे वसभए हैं ॥६५॥

प्रौढासौं सखीको उक्ति

कैसो रजुनीके अधरानि लगैपीके वर वैनतुतरात मैन गौन रमझिले हैं।
औहें मन मोहें अग अग अर सोहें पिय सगरे सुखनि तेरें रोम रोम खिले हैं॥
दलति दुराये दुरत कैसे माइ नवलिप नाप्याइ अवयत रूपहिलें हैं।
चकीसी चोहति मद छकीसी बाहीं मोहिआली कहूँतोहि महाराजु आजु मिले हैं ॥६५॥

महाराजा श्री जसवंतसिंघजू सौं वनिताकी उक्ति

कान्हकी कामिनी काहू काहू कामिनी के सग कैके रति रगनि अनग रस पगे हैं।
किधौं बद सुन मेरे दास रोस भरे किधौं जहा तुम उरेहो तहाक प्रेम पगे हैं॥
किधौं दम्पति वार टेक चाल न्हाइलाल औरनि जनाए किधौं मोही ऐसे लगे हैं।
दादाके पूत महाराजा जसवंतसिंघ साची कहो कहा आजु नैन रस भगे हैं ॥६६॥
रानि जगे रस रीति दुमाह पग किधौ काहूकी नेह नए हैं।
रोसभरे कृति अतुल रूप किधौं कहू धूप धूआं भए हैं॥

दलपति रोचन मांह रंगे किधौं जावक फैं जन चोरि लए हैं।
सो रंग श्री जसवंत कही किनि जा रंग लोचन लाल भए हैं ॥६७॥
जावक की लीक पग लागैं लगीमाल जागैं लोयनिनि लाल लाल रंगु निचुरयु हैं।
इहांलौं उरोज गाढें छतियां लगाए होत न्यारेहूँ अजौं न चाहचीन्हु निहुरयु हैं ॥
मरोरत गात जंभु वात जसवंतसिंघ मेरे ननमुष दपु वाही त्यौं मुरयु हैं।
दुरावत सोंह केकैं नागर नरयक अैहो सुरयु सुगंधु कहूं दुरावे दुरयु हैं ॥६८॥
श्री महाराजा जसवतसिंघजू कहं देषिकैं पंढिना नाइका को रीझि वर्णन
अंजनकी लीक लागें लाषनि लहतु औठु भई द्रिग नई अरुनैतैं निकाई हैं।
तैसोई लसतु लाल जावक को चिन्हभाल विनु गुन माल उर सोहति छहाई हैं॥
लटपटीपाग सिर राजति सुरंग दलपति सब अंगनि अनंग छवि छाई हैं।
रसमस्यौ जोहि महाराजा जसवंतसिंघु रीझि रीझि रीझवारि रिस विसराई हैं ॥६९॥
उत्कंठिता नाइका कौ वर्णन
किधौं कहूं कमवस अन बसेरें बसे किधौं काहूं वाम टोटिकानि विरमाए हैं।
किधौं अगमनें नीद नेंननि जनाई किधौं मेरे मांन दोस रोस वारिधि वटाए हैं॥
किधौं कवि कोविद समाजु आजु छुटतु न किधौं दलपति नेह नूतन फंदाए हैं।
अैरे चित चंचल विचारि कहूं कौनहेत राजाजसराजजू अजौं न इत आए हैं ॥७००
अथ वासक सज्जा नाइका वर्णन
कंचन कलस सम सुंदर उरोज अरु रच्यौ सुपदीपकु अमित दुति वारिकैं।
सकल सरीरु चारु चंपक कुसुम हारुचारु सरसिज द्रिग तोरनु सुधारिकैं॥
अधर पीयूष पांन भाजनु न्हानजुवनाइमन राषीअभिलाषसौं सै लाषनि विचारिकैं।
राजा जसराजजूको आगमु निहारि नारि राष्यौ वपु बीच रति मंदरु सवाँरिकैं ॥७०१
दोहा
जानि महाप्रभु सवनि महँ मारवार सुभकंतु
सेवन श्री जसराज कहँ प्रगस्यौ पुहमि वसंतु ॥२॥
महाराजा श्री जसवंतसिंघजू कहँ वसंत उत्सव वर्णन
पाधरी छंद
जसवंतसिंघ जहँ वसुहंकंत तहँ रच्यौ नृत्तु नाइक वसंत ॥३॥
गावति अगनि कोकिल समाजु कलतार देत वहु भ्रंगराज ॥४॥

बाजत मृदंग मृदु गधनाद नाचत मूँद पूरा उत्साह ॥५॥
नव विसलय कर अभिनय लयाइ सित कुसुम बनावत हासभाइ ॥६॥
कंदर्प अल्प नट स्वांग आइ मोहत लोगनि आनंद बढाइ ॥७॥
विरहिनि वियोगवस मन मलीन कौतिक निरखत तन होंहि छीन ॥८॥
फूलहिं सजोगिनि नारिवृंद व्है जाहि मगन तापस मुनिंद ॥९॥
दलपति मारू प्रभुकहँ रिझाइ पायौ कितानु छिति छत्रिराइ ॥१०॥

श्रीमहाराजा जसवंतसिंघजू कहँ फागु उत्सव वर्णन धमारी राग मल्हार

फागुन खेल मचायौ ।

देपत सभा महाराजकी अमरनि अचरज छायौ ।
बाजत ताल मृदंग बीन डफ झांझ मधुर धुनि नीके ॥
गावत गुननि गुनी मांहु गंधर्व देव नगरी के ।
पास पवास अरगजा भींजे भिरत मोद मद माते ॥
परम सुगंध लोभ मधुकरगन नेंकहु होत निहाले ।
परसत नैन काम रंग राची नगर नागरी आई ॥
सात्विक भाइ दुराइ सकनि मिलि प्रगट करी चतुराई ।
डोलन सकति विवस व्है कोऊ रूप रासि अनुरागीं ॥
हरषैं हार तोरि लिय तापन सुतियन बीनन लागीं ।
आनंद अश्रु उमग कहुँ काहू नैंन फूले लति लोंछें ॥
श्रम प्रसेद मिस अंग आपनें काहू पुलक अगोछें ।
काहू रच्यौ नांचु आगें व्है वपु आपनौ गोयौ ॥
उमग्यौ मदन कुंभ कुचनि काहू विथरत जातु न जोयौ ।
बिनु अपराध साथ कहँ काहू झूठौ दोस लगायौ ।
रूसी भोंह चढाइ मोंन मिस राज सुख भयु छुपायौ ॥
अंतरि गति की जानि महाप्रभु निकट आपनें बोलीं ।
चित्त चुराइ चंद मदनति संग विहरत करत ठठोलीं ॥
काहूकौं अबीर मुख माड्यौ गजति ललित ललाई ।
मानहु सुरत प्रीति हियराकी परसत प्रगट भराइ ॥

काहू के कपोलपर चोवा चुल एक भरि नाख्यौ।
मानहु रस सिंगार संपूरन वदन एक दिस राख्यौ॥
चूमति चिवुक चारु काहूके अधर रद छत कीन्हो।
मानहु सुभग सुधा संपुट पर कस्यौ छाप सम चीन्हौ॥
दुहु उरोज बीच काहू कहँ मुक्त माल पहिराई।
मानहु धसी सुमेर सिंगतैं सुरसरि धार सुहाइ॥
औरन सौं बचाइ नव लाइक रंग महल पहुंचाई।
श्री जसराज रीझि वाही सौं करी आपु चित भाई॥
देष्यौ दृगनि सुन्यौं कछुकाननि कौतुक परम सुहायौ।
दलपति कह्यौ जोरिअपर्यान तब सीषि सकल जग गायौ॥११॥

दोहा

इहि भातिनि जसराज कहँ सेवहिं षट् रितु आइ।
सुष भुगवत जिहि इंद्र सम वासर रैंनि विहाइ॥१२॥
चिरजीवौ जसराजु नृपु सकल धर्म आधारु।
जगु पालन जिहि सूरकुल लियो वसुंह अवतारु॥१३॥
आगैं जे जसराज नृपु करिहैं चरित सुभाइ।
होहू तिन कहँ वरहू अरु औरौं कविराइ॥१४॥

श्री महाराजा जसवंतसिंघजू सौं दलपतिकी विनती

दोहा

श्री जसवंत नरिंद के यथा सक्ति गुन गांइ।
यौं रिझवतु ज्यौं ईस सिर चांवरि चारि चढाइ॥१५॥

घनाछरो छंद

बीरवरु बांमनु गरीव गुनी जांनि छत्रपति अकवर कस्यौ नृपति वढाइकैं।
गगहि निवाज्यौ दांनि साहि साहिजां दे हय हाथी हेमु दैदै दल्यौ दारिदु वनाइकै॥
कस्यौ परसिद्धहि प्रसिद्ध पानषाना ठौर ठौर चहू ओर निज कीरति चलाइकैं।
गरीव निवाज महाराजा जसराज त्यौं तिहारे वांट पस्यौ दलपति कवि आइकैं॥१६॥

आलम पनाह साहिनशा नरनाह निजु छदरुनि नवाज्यो मही महाकविनाइकै।
विदित बुदेला इन्द्रजीत को बढायो केसौदासमु सिर नायो गुनिगननागनाइकै ॥
[?]रसालसौं निहाल एकमयो कवि पेहरो कनौजिया बविंदु पदु पाइकैं।
गरीब निवाज महाराजा जसराज त्यौं तिहारे बाट परयो दलपति कवि आइकै ॥१७॥

श्री जसवतउद्योत को छंन को फल

जो जसवत उदोत कहँ सुनै भवन चितुलाइ।
तिहिमानौ हरिवस की पोथी सुनी बनाइ ॥१८॥
कछुक वस बरण्यौ प्रथम विष्णु पुरानहि मानि।
फरी साठि नरिंदकी घरी लोक कथानि ॥१९॥
लोक वेद बुधिजन सकल कहत एकही रीति।
यह बिचारि या ग्रंथ महँ मानहु परम प्रतीति ॥२०॥

इति श्री तुलसीराम सुत दलपति कवि विरचिते जसवत उदोते पत्रावली
प्रकरणे सपूर्णम् ॥ शुभ भवतु ॥

स० १७४१ रा मिगसिर वद १४ वार भौमदिने लिपित मेडता नगर मध्ये
लिपित चुन्नमहीधर पोथी श्रा० चुन्न महीधर छै ॥ शुभ भवतु ॥

परिशिष्ट

१ राठौर वंशावलि (स १६४५ की, महाराजा रायसिंह के प्रशस्ति लेख से)

१ नारायन
२ ब्रह्मा
३ मरीचि
४ कश्यप
५ सूर्य
६ मनु—
(श्राद्धदेव-वैवस्वत)
७ इक्ष्वाकु
८ विकुक्षि
९ पुरंजय (ककुत्स्थ)
१० अनेना
११ विश्वगंधि
१२ इन्द्र
१३ युवनाश्व
१४ सावस्ति
१५ बृहदाश्व
१६ कुवलयाश्व [धंधुमार]
१७ दृढाश्व
१८ हर्यश्व
१९ कृशाश्व
२० सेनजित
२१ युवनाश्व
२२ मानधाता
२३ पुरुकुत्स
२४ त्रसदस्यु
२५ अनरण्य
२६ हर्यश्व
२७ प्रद्युम्न(म्न)
२८ त्रिबंधन
२९ सत्यव्रत
[त्रिशंकु]
३० हरिश्चन्द्र
३१ रोहित
३२ हरित
३३ चम्प
३४ सुदेव
३५ विजय
३६ भरुक
३७ वृक
३८ बाहुक
३९ सगर
४० असमंजस
४१ अंशुमान
४२ दिलीप
४३ भगीरथ
४४ श्रुत
४५ नाभ
४६ सिंधुद्वीप
४७ अयुतायु
४८ ऋतुपर्ण
४९ सर्वकाम
५० सुदास
५१ अश्मक
५२ मूलक
५३ दशरथ
५४ एलविले
५५ विश्वसह
५६ खट्वांग
५७ दीर्घबाहु
५८ रघु
५९ अज
६० दशरथ
६१ रामचन्द्र
६२ कुश
६३ अतिथि
६४ निषध
६५ नल
६६ पुण्डरीक
६७ क्षेमधन्वा
६८ देवानीक
६९ अहिन
७० पारियात्र
७१ बलस्थल
७२ अर्क
७३ वज्रनाभ
७४ सगण
७५ विधिघृति
७६ हरिण्यनाभ
७७ पुष्प
७८ ध्रुवसंधि
७९ भव

८० सुदर्शन
८१ अग्निवर्ण
८२ शीघ्र
८३ मरु
८४ प्रश्रुश्रुत
८५ संघ
८६ अमर्षण
८७ सहस्वान
८८ विश्वशाख
८९ प्रसेनजित्
९० तक्षक
९१ वृहद्बल
९२ वृहद्गण
९३ गुरुक्रिय
९४ वत्सवृद्ध
९५ प्रीतिव्योम
९६ भानु
९७ दिवक्र
९८ वाहिनीपति
९९ सहदेव
१०० वीर
१०१ वृहदश्व
१०२ भानुमन
१०३ प्रतिक्ष
१०४ सुप्रतीक
१०५ मरुदेव
१०६ सुनक्षत्र
१०७ पुष्कर
१०८ अन्तरीक्ष
१०९ सुतप
११० अमित्रजित
१११ वृहद्भानु
११२ बर्हि
११३ कृतजय
११४ रणंजय
११५ संजय
११६ शाप
११७ शुद्धोद
११८ लांगुल
११९ प्रसेनजित
१२० क्षुद्रक
१२१ रुपक
१२२ सुरथ
१२३ सुमित्र
१२४ पदार्थ
१२५ ज्ञानपति
१२६ तुंगनाथ
१२७ भरत
१२८ पुंजराज
१२९ कंभ
१३० अजयचंद
१३१ अभयश्व
१३२ विजयचंद
१३३ जयचन्द्र
१३४ वरदायीसेन
१३५ सीताराम
१३६ सोहा
१३७ आस्थान
१३८ धूहड
१३९ रायपाल
१४० कल्ह
१४१ जाल्हण
१४२ छाडा
१४३ तीडा
१४४ सलखा
१४५ वीरम
१४६ चामुण्डराय
१४७ रणमल
१४८ योधराय

(इसके आगे बीकानेरके राजवंश की नामावली है। एक अन्य यातमें वंशावलिके २८० नाम होनेका उल्लेख टेसीटोरील्ले साहब ने कियाहै)।

२ राठौर वंशावली (महाराजा रायसिंहके समयकी, हमारे संग्रहकी अन्य)

१ शिवशक्ति
२ विगत
३ अविगत
४ इन्द्र
५ इन्द्राधिपति
६ बुदबुदाकार
७ ब्रह्मा
८ मरीचि
९ समुद्र
१० चन्द्रमा
११ हनु
१२ विधातरु
१३ मचुकन्दु
१४ हरिणाख्य
१५ प्रहराज
१६ विरोचन
१७ बलि
१८ हृगांध
१९ सहस्त्रार्जुन
२० कल्प
२१ चन्द्रप्रदाम
२२ पहरेवा
२३ वेल
२४ प्रथक
२५ नल
२६ निषु
२७ हरिसेन
२८ वीरसेन
२९ विधुवति
३० वाराह निधि
३१ अस्यादित्य
३२ अमरोपम
३३ सत्यास
३४ पुत्रराज
३५ शान्तन राजा
३६ गांगेय, चित्र, विचित्र
३७ धृतराष्ट (विचित्रके पुत्र)
३८ पांडु (चित्रक पुत्र)
३९ कलिंग
४० मेघमल्ल
४१ चंपसेन
४२ विश्वावसु
४३ मदभ्रम
४४ कुशभ्रम
४५ भ्रम
४६ कमध्वज
४७ अदचंद्र
४८ विजयचंद
४९ जयचंद्र (पांगुलउ)
५० कमधणु
५१ योगरा (३)
५२ गद
५३ शीतराबण
५४ अस्थान
५५ धूहड
५६ रायपाल
५७ कान्हरा
५८ आल्हण
५९ छाडउ
६० तीडउ
६१ सलखउ
६२ वीरमु
६३ चउ डउ
६४ रिणमल्ल
६५ जोधउ
६६ सातल
६७ सूर्यमल्ल (सातल भ्राता)
६८ गांगा
६९ मालदेव

विशेष नाम सूची

जसवन्त [illegible]